अमृतलाल नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

AMRITHALAL NAGAR KE AITHIHASIK UPANYASOM KA VISHLESHANATHMAK ADHYAYAN

Thesis submitted to
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
for the award of the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

By

BINDU. R.

Prof. (Dr.) A. ARAVINDAKSHAN
Head of the Department

Dr. K. VANAJA
Supervising Teacher

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
KOCHI - 682 022

2002

Certificate

This is to certify that this thesis entitled as **"AMRITHALAL NAGAR KE AITHIHASIK UPANYASOM KA VISHLESHANATHMAK ADHYAYAN"** is a bonafide record of work carried out by **Smt. Bindu. R.**, under my supervision for Ph.D and no part of this thesis has hitherto been submitted for a degree in any university.

Dr. K. VANAJA
Supervising Teacher

Department of Hindi
Cochin University of Science and Technology
Cochin - 682 022

31.12.2002

DECLARATION

I hereby declare that this thesis entitled **"AMRITHALAL NAGAR KE AITHIHASIK UPANYASOM KA VISHLESHANATHMAK ADHYAYAN"** has not previously formed the basis of any degree, diploma, associateship, fellowship or other similar title recognition

BINDU. R.

Department of Hindi,
Cochin University of Science and Technology,
Kochi - 682 022.

31.12.2002

प्राक्कथन

आधुनिक काल में उपन्यास सबसे सशक्त और लोकप्रिय साहित्यिक विधा बन गया है। उपन्यास के अन्तर्गत मानव के सामाजिक एवं वैयक्तिक पक्षों पर विस्तार से विवेचन किया जाता है। जीवन की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करने के कारण ही इस विधा ने अन्य साहित्यिक विधाओं जैसे कहानी, नाटक आदि की तुलना में जनमानस में अधिक महत्वपूर्ण स्थान पा लिया है। उपन्यास के अनेक प्रकार प्रचलित हैं - ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामाजिक आदि। ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक उपन्यासों का महत्व इस आधुनिक युग में बढ गया है। देश के सुवर्ण अतीत और सांस्कृतिक परम्परा का ज्ञान आज इन ऐतिहासिक ग्रन्थों से ही प्राप्त होता है।

वर्तमान से अधिक अतीत और भविष्य की ओर दृष्टि डालना मानव का सहज स्वभाव है। कुछ लोगों को अतीत के प्रति अधिक मोह है। समकालीन सन्दर्भ में ऐतिहासिक उपन्यास का महत्व बढ रहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि वर्तमान परिवेश, अनेक प्रकार की व्याकुलताओं एवं भयानक समस्याओं से ग्रस्त है। लोग भविष्य के प्रति चिंतित हैं। इस प्रकार के माहौल में इतिहास मानव को आशा, उत्साह, निर्भीकता अदि प्रदान करता है। हिन्दी की ऐतिहासिक उपन्यास - परम्परा के एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं श्री. अमृतलाल नागर। भारतीय इतिहास और संस्कृति पर नागरजी ने विशेष रुचि दिखाई है। उनके उपन्यास तथा कहानियाँ इसके ज्वलंत उदाहरण हैं।

नागरजी के आठ ऐतिहासिक उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का विनम्र प्रयास इस शोध प्रबन्ध में किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विषय है 'अमृतलाल नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।' अध्ययन के सुविधार्थ इस शोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभक्त करके विश्लेषण किया गया है।

प्रथम अध्याय में इतिहास और ऐतिहासिक उपन्यास की व्याख्या, परिभाषाएँ, हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यास की परम्परा, उस परम्परा के मुख्य उपन्यासकार, उपन्यासकार अमृतलाल नागर, नागर का व्यक्तित्व और कृतित्व आदि पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक है 'हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास और अमृतलाल नागर।'

दूसरा अध्याय हैं 'नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास बोध।' इसके अन्तर्गत उनके आठ उपन्यासों के ऐतिहासिक पात्र, उनके चरित्र चित्रण, ऐतिहासिक वातावरण तथा ऐतिहासिक घटनाओं पर विचार किया गया है। इस अध्ययन का लक्ष्य नागर के उपन्यासों के ऐतिहासिक पक्षों को ढूँढ निकालना है। इन ऐतिहासिक पक्षों की प्रामाणिकता को सिद्ध करने का प्रयास भी किया गया है।

तीसरे अध्याय - 'नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में काल्पनिकता' - में इन उपन्यासों में प्रयुक्त काल्पनिक पक्षों का विवेचन-विश्लेषण किया गया है। वास्तव में ऐतिहासिक उपन्यास इतिहास और कल्पना के सुन्दर समन्वय से जन्म लेता है। ऐतिहासिक उपन्यासों में उपन्यास को आकर्षक एवं चित्तोत्तेजक बनानेवाला तत्व कल्पना है। उपन्यासों के काल्पनिक पात्र, घटनायें तथा वातावरण के निर्माण में कहाँ तक उपन्यासकार की काल्पनिकता का उपयोग हुआ है यह इस अध्याय के द्वारा स्पष्ट होता है।

ऐतिहासिक उपन्यास में केवल अतीत का चित्रण नहीं, बल्कि अतीत चित्रण के द्वारा कई आधुनिक समस्यायें अथवा कालातीत समस्यायें उभर आती हैं। इस शोध-प्रबन्ध के चौथे अध्याय 'नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में आधुनिक भावबोध' में समकालीन संदर्भ में नागर के उपन्यासों को देखकर उनके कालजयी स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है।

पाँचवां अध्याय है 'नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों का शिल्पगत वैशिष्ट्य।' उपन्यास की गरिमा उसके शिल्प पक्ष पर आधारित है। नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों के संरचना पक्ष पर विचार करने से यह विदित होता है कि उनकी भाषा, संवाद तथा भाषिकेतर शैली में नूतनता है। भाषा के विचलित, अप्रस्तुत आदि शैलियों द्वारा उपन्यास को आकर्षक बना दिया गया है। शैली पक्ष का भी विशद अध्ययन प्रस्तुत अध्याय में किया गया है।

उपसंहार के रूप में नागरजी के ऐतिहासिक उपन्यासों के ऐतिहासिक पक्ष का मूल्यांकन किया गया है तथा इन उपन्यासों के द्वारा ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में नागरजी की सफलता पर विचार किया गया है। अन्त में सहायक ग्रन्थों की सूची भी दी गयी है।

मैं ने यह शोध प्रबन्ध कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की वरिष्ठ प्राध्यापिका पूजनीय डॉ. के. वनजा के निर्देशन में तैयार किया है। सन्दर्भोचित सलाह से पथ प्रदर्शन करके इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में उन्होंने जो प्रोत्साहन और सहायता प्रदान की उसके लिए मैं उनके प्रति आभारी हूँ।

इस शोध कार्य के लिए नियुक्त विषय विशेषज्ञ डॉ. सुनीता बाई के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहती हूँ। उन्होंने भी मुझे इस कार्य में उचित सलाह दी है।

इस विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए. अरविन्दाक्षन जी अन्य गुरुजनो और पुस्तकालय के कर्मचारियों के प्रति भी मैं अभारी हूँ जिनकी सहायता से मैं यह प्रबन्ध तैयार कर सकी हूँ।

इस शोध प्रबन्ध में अनजाने आयी हुई गलत्तियो और खामियो को क्षमा करने की प्रार्थना के साथ इसे मैं सविनय प्रस्तुत करती हूँ।

बिन्दु आर.

हिन्दी विभाग
कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कोचिन-२२

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

अध्याय I-हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास और अमृतलाल नागर 1 - 35

इतिहास अर्थ एवं परिभाषा - साहित्य और इतिहास - ऐतिहासिक उपन्यास स्वरूप एवं विशेषताएँ - हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास-स्वातंन्त्र्य पूर्व युग - गोस्वामी युग - वर्मा युग - स्वातन्त्र्योत्तर युग -अमृतलाल नागर : व्यक्तिव एवं कृतित्व - रनचा संसार - कहानी -उपन्यास - अन्य आयाम - निष्कर्ष

अध्याय II - नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास बोध 36 - 82

शतरंज के मोहरे - कथानक - ऐतिहासिक घटनाएँ - अवध के नवाबी शासन - तद्‌युगीन परिस्थितियाँ - ऐतिहासिक पात्र-ऐतिहासिक घटनाएँ - वातावरण

सुहाग के नूपुर - कथानक - ऐतिहासिक घटनाएँ-वातावरण - ऐतिहासिक पात्र

सात घूंघटवाला मुखडा - कथानक - ऐतिहासिक घटनाएँ - अंग्रेजी शासनकाल - युगीन परिस्थितियाँ-ऐतिहासिक पात्र

एकदा नैमिषारण्ये - कथानक - ऐतिहासिक घटनायें - गुप्त साम्राज्य का समय - तद्‌युगीन परिस्थितियाँ - ऐतिहासिक पात्र

मानस का हंस - कथानक - ऐतिहासिक घटनायें-मुगलकालीन परिस्थितियाँ - ऐतिहासिक पात्र

खंजननयन - कथानक - ऐतिहासिक घटनायें- मुगलकालीन परिस्थितियाँ - ऐतिहासिक पात्र

करवट - कथानक - ऐतिहासिक घटनायें- भारत के स्वतन्त्रता पूर्व तथा स्वातन्त्र्योत्तर परिस्थितियाँ - ऐतिहासिक पात्र

पीढियाँ - कथानक - ऐतिहासिक घटनायें- स्वातन्त्र्योत्तर भारत की परिस्थितियाँ -ऐतिहासिक पात्र

निष्कर्ष

अध्याय III - नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में काल्पनिकता 83 - 124

नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में काल्पनिक पात्र, घटनायें तथा वातावरण -

- शतरंज के मोहरे, सुहाग के नूपुर, सात घूंघटवाला मुखडा, एकदा नैमिषारण्ये, मानस का हंस, खंजननयन, करवट, पीढियाँ

निष्कर्ष

अध्याय IV - नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में आधुनिक भावबोध 125 - 154

उपन्यास और आधुनिकता - विविध आधुनिक पक्ष - नारीजीवन की विडंबना - धार्मिक संघर्ष - आस्था और मानवतावाद - साहित्य क्षेत्र की समस्यायें - अंग्रेज़ों का अनुकरण - राजनैतिक समस्यायें- सांस्कृतिक मूल्य चेतना - निष्कर्ष

अध्याय V - नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों का शिल्पगत वैशिष्ट्य 155 - 185

उपन्यास का शिल्प पक्ष - नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों की भाषिक संरचना - भाषा एवं संवाद - भाषिकेतर शैलियाँ - निष्कर्ष

उपसंहार 186 - 192

ग्रन्थसूची 193 - 201

अध्याय १

हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास और अमृतलाल नागर

अध्याय १

हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास और अमृतलाल नागर

इतिहास अर्थ एवं परिभाषा

जब भी कोई व्यक्ति, समाज या देश के संबन्ध में इतिहास शब्द का प्रयोग करता है, तब उनके अतीत की प्रतीति होती है। 'इतिहास' शब्द का अर्थ शब्दिक दृष्टि से 'ऐसा ही था' या 'ऐसा ही हुआ' है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इतिहास का संबन्ध भूतकाल से है। अतीतकालीन घटनाओं तथा महान व्यक्तियों से संबन्धित विशद वर्णन इतिहास से प्राप्त होता है।

इतिहास के लिए अंग्रेज़ों में 'हिस्ट्री' शब्द है जिसका मूल अर्थ है 'अन्वेषण' अथवा 'अन्वेषण से प्राप्त ज्ञान'। इतिहास अतीतकाल का अन्वेषण है। कभी वह महान व्यक्तियों की जीवन कथा का अन्वेषण करता है कभी अतीत कालीन घटनाओं का। इतिहास केवल तथ्यों की खोज से पूर्ण नहीं होता, बल्कि कोई घटना क्यों हुई, कहाँ हुई और कब हुई, जैसे उससे संबन्धित सभी बातों के ढूँढता भी उसका काम है।

अनेक भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने 'इतिहास' शब्द को परिभाषित किया है। पाश्चात्य विद्वान क्रोचे के अनुसार 'हमारे इतिहास का मतलब हमारी आत्मा

का इतिहास है और मानव आत्मा के इतिहास से तात्पर्य विश्व के इतिहास से है।'[1] कार्लायल के मत मे 'इतिहास अफवाहो का निचोड है।'[2]

'द आइडिया आफ हिस्ट्री' मे आर.सी. कालिंगवुड मे इतिहास का अर्थ मानव का आत्मज्ञान बताया है। उनके अनुसार इतिहास हमें बताता है की भूतकाल के मानव ने क्या किया है और इस प्रकार मनुष्य क्या है।"[3] इसकी और एक परिभाषा ऐसी है कि "इतिहास में नामों और तिथियों को छोडकर कुछ भी सत्य नहीं रहता। ऐतिहासिक उपन्यास मे तिथियों तथा नामों को छोडकर सब कुछ सत्य रहता है।"[4] 'कोलंबिया ऐनसैक्लोपीडिया' मे इतिहास की परिभाषा है "इतिहास अपने व्यापक अर्थ में मानव के अतीत की गाथा है।'[5]

इन पाश्चात्य विद्वानों के अलावा अनेक भारतीय विद्वानो ने भी इतिहास' को परिभाषित किया है। प्रसिद्ध विद्वान गौरीशंकर हीराचन्द औझा के अनुसार देशों, जातियो, राष्ट्रों तथा महापुरुषों के रहस्यों को प्रकट करने का साधन है इतिहास। पंडित जवहर लाल नेहरू के अनुसार इतिहास एक चित्ताकर्षक नाटक है।[6] डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा है कि इतिहास की सबसे अधिक साधारण परिभाषा यही है कि वह भूतकाल का वृत्तान्त है और उसका मुख्य ध्येय यह है कि समय की समाधि से उन

---

1. क्रोचे, हिस्ट्री एज़ द स्टोरी आफ लिबर्टी, पृ - 117
2. कार्लायल, फ्रेंच रेवल्यूशन
3. कालिंगवुड, द अइडिया आफ हिस्ट्री, पृ - 10
4. विलियम हेनरी हडसन, एन इन्ड्रोडक्शन टू द स्टडी आफ लिट्रेचर, पृ - 166
5. कोलंबिया एनसैक्लोपीडिया
6. पं. नेहरु, विश्व इतिहास की झलक, पृ - 30

बातों और व्यक्तियों को निकाले जो कभी थी किन्तु आज नहीं है।'[1] छांदोग्य उपनिषद में इतिहास को पांचवा वेद कहा गया है।"[2]

इन सभी परिभाषाओं से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि इतिहास से तात्पर्य अतीत के जीवन्त चित्रण से है जिससे उस समय के व्यक्तियों और घटनाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। अतीत का ज्ञान व्यक्ति, समाज तथा देश को एक नयी स्फूर्ति प्रदान करने में सहायक होता है।

समसामयिक समस्याओं की उलझन में पडे हुए आधुनिक मानव को अपने सुवर्ण अतीत की याद सान्त्वना देती है। मानव अतीत से प्रेरणा पाकर वर्तमान से भविष्य की ओर बढता है। इतिहास की इस प्रेरणा शक्ति के संबन्ध में श्री. वाल्मीकि प्रसाद सिंह अपने लेख 'इतिहास की भूमिका' में लिखते हैं कि एक व्यक्ति को खुद जानते के लिए और अपना जीवनमार्ग पार करने के लिए अपने जीवनानुभवों की स्मृति की ज़रूरत जिस प्रकार है उसी प्रकार व्यक्तियों के समूह याने समाज को अपने अतीत और अपने जीवानुभवों की स्मृति की ज़रूरत महसूस होती है। यह स्मृति, समाज या राष्ट्र को स्वयं समझने, अपनी नैतिकता को संतुलित करने और अपने भविष्य की रूप रेखा तैयार करने में सहायक सिद्ध होती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि किसी समाज या राष्ट्र के लिए ऐतिहासिक समझ कितना मूल्यवान है। ऐतिहासिक ज्ञान व्यक्ति, समूह या राष्ट्र को भविष्य रूपायित करने में सहायता देता है।'[3]

---

1. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, साहित्य शिक्षा और संस्कृति, पृ - 117
2. भारतीय संस्कृति कोश
3. वाल्मीकि प्रसाद सिंह, आजकल, सितंबर, 1997

इन सब बातों को ध्यान में रखकर हम 'इतिहास' की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं कि इतिहास किसी व्यक्ति समाज या देश के अतीत का वह यथार्थ चित्रण है, चाहे वह सुखद हो या दुखद, जिससे प्रेरणा पाकर वे अपने भविष्य का निर्माण कर पायेंगे।

भारत में 'इतिहास' शब्द का प्रयोग तथा इतिहास-लेखन की परम्परा अति प्राचीन काल से चली आ रही है। इतिहास-लेखन का प्रारंभ ऋग्वेद से है।[1] इतिहास शब्द का प्रयोग प्रथम 'अथर्ववेद' में हुआ है, ऐसा विद्वानों का मत है।

'महाभारत' और 'विष्णु पुराण' में इतिहास शब्द का प्रयोग मिलता है। दोनों में इतिहास की परिभाषा दी गयी है।

धर्मार्थकाममोक्षाणामुपदेश समन्वितम।

पूर्ववृत्तं कथायुक्तमितिहासं प्रचक्षते।। (महाभारत)

आर्ज्यादि बहुव्याख्यान देवर्षिचरिताश्रयम्।

इतिहासमिति प्रोक्तं भविष्याद्भुत धर्मयुक्त।। (विष्णुपुराण)

प्रथम के अनुसार 'इतिहास' एक ऐसा पूर्ववृत्त है जिसके माध्यम से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का उपदेश दिया जाता और दूसरा है - ऋषियों एवं महापुरुषों के चरित गान ही इतिहास है। इन परिभाषाओं के अनुसार इतिहास का अर्थ व्यापक है। इसके अन्तर्गत 'रामायण', 'महाभारत', 'पुराण' आदि ग्रन्थ भी आ जायेंगे। लेकिन यह आसंगत है। क्योंकि इन ग्रन्थों में कल्पना का समावेश भी है। इसलिए इन्हें पूर्ण रूप से 'इतिहास' नहीं कहा जा सकता, ऐतिहासिक काव्य कहना उचित होगा।

---

1. सरस्वती, मार्च - 1971

विद्वान लोगों ने अतीत के क्रमिक वर्णन की आवश्यकता समझी कालांतर में अतीत की घटनाओं और व्यक्तियों के कालक्रमिक चित्रण करके उसको इतिहास नाम से पुकारने लगे। अनेक भारतीय तथा विदेशी विद्वानों ने भारत का इतिहास अपने अपने ढंग से भिन्न-भिन्न पहलुओं के आधार पर लिखा है। इन इतिहासों से भारत का अतीत आज भी जीवन्त रहता है।

आजकल इतिहास, मात्र अतीत वर्णन में सीमित नहीं। इतिहास वाद, इतिहास दर्शन जैसी शाखायें उससे उपजी हैं। साहित्य में भी इतिहास-अपने स्थान निर्धारित कर दिया है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में 'ऐतिहासिकता' आज मुख्य विषय बन गयी है।

साहित्य और इतिहास

साहित्य और इतिहास का अटूट संबन्ध है। दोनों का संबन्ध मानव जीवन से है। यद्यपि इतिहास एक स्वतन्त्र विधा है, फिर भी साहित्य के साथ जोडने के बाद ही उसे अधिक लोकप्रियता मिली। साहित्य की विविध विधायें जैसे उपन्यास, कहानी, नाटक कविता जैसे सभी में इतिहास ने अपना अधिकार स्थापित किया है। आधुनिक जीवन की समस्याओं में फँसे गये नवीन मानव को अपने अतीत की याद दिलाने में इतिहास संबन्धी साहित्य का स्थान महत्वपूर्ण है। अतीत की खूबियों और खामियों के माध्यम से ऐतिहासिक रचनाएँ आजकल और इस ध्वंसात्मक संसार में विवेक एवं स्पंदन उत्पन्न करती हैं।

साधारण रूप से इतिहास प्राचीन युद्धवर्णन, राजाओं के शासन काल का चित्रण आदि से नीरस ही होगा। आम जनता इसलिए किसी साहित्य विधा की तरह

इसकी ओर उतना आकृष्ट नहीं होता। लेकिन कथाविधा प्राचीन काल से ही मानव का मनोरंजक विधा है। 'महाभारत' जैसे इतिहास ग्रन्थ में युद्धवर्णन के साथ ही अनेक कथा-उपकथायें भी हैं। यही उसकी लोकप्रियता का कारण है। इसलिए उपन्यास के माध्यम से यदि इतिहास वर्णित है तो वह पाठकों के लिए अतीव रोचक बन जाता है और इतिहास से पाठक को अतीत का बोध भी मिल जाता है।

हिन्दी साहित्य की प्रायः सभी शाखाओं मे इतिहास ने अपना अधिकार जमाया है। ऐतिहासिक उपन्यास और ऐतिहासिक नाटक बहुत लोकप्रिय बन गये हैं। कहानी और कविता के क्षेत्र में भी इतिहास का महत्व पहले से ही बढ रहा हैं। क्योंकि हम वर्तमान परिस्थितियों से भयभीत हैं। इसलिए हम अतीत की ओर वापस जाना चाहते हैं और अतीत के गौरव को दुहराना चाहते हैं। इसलिए पहले से ज़्यादा अतीत बोध आजकल की रचनाओं में विद्यमान है और यह समय की माँग भी बन गयी है।

ऐतिहासिक उपन्यास स्वरूप और विशेषतायें

उपन्यास मानव जीवन के अनुभवों की कहानी है। उपन्यास का क्षेत्र सदा यथार्थ के आसपास है, वह यथार्थ चाहे अतीत का हो या वर्तमान का। मुख्यतः उपन्यास जीवन के वर्तमान से संबन्धित है। फिर भी अनेक ऐसे उपन्यासकार हैं जिन्होंने अतीत था इतिहास से कथावस्तु चुन लीहै। स्वतन्त्रता संग्राम के समय पराधीनता के कारण लोग विद्रोह की ओर जा रहे थे, तब वे अपने मन को स्वांतना देने के लिए गौरवपूर्ण अतीत की ओर मुडकर देखने लगे। स्वतंत्रता संघर्ष के समय उपन्यासकार ने अतीत से प्रेरणा पाकर अपनी रचनाओं को जन्म दे दिया। इन अतीत चित्रित उपन्यासों से लोगों ने शक्ति अपनायी और वे क्रान्ति की ओर बढने लगे। उपन्यास की यह नयी विधा 'ऐतिहासिक उपन्यास' नाम से विकसित होने लगी।

ऐतिहासिक उपन्यास का महत्व यह है कि वह इतिहास को अपने साथ जोडकर लोकरंजक बना देता है। वह अतीत और वर्तमान के बीच की दूरी कम करता है, दोनों के बीच एक पुल का काम करता है।

सामान्यतः इतिहास और उपन्यास एक दूसरे की विरोधी विधायें हैं। इतिहास का आधार कोरा सत्य हैतो उपन्यास का आधार है कल्पना। इन दोनों का मेल कठिन कार्य है। ऐतिहासिक उपन्यासकार इस कठिन कार्य को साध्य बनाता है। इसलिए ऐतिहासिक उपन्यास की रचना साधारण उपन्यास की अपेक्षा अधिक कठिन है। इतिहास भौतिक सच्चाइयों का यथार्थ चित्रण है तो उपन्यास कल्पना का चित्रण है। इन दोनों के उचित समन्वय से ऐतिहासिक उपन्यास जन्म लेता है।

ऐतिहासिक उपन्यासकार को एक ही समय उपन्यासकार भी बनना पडता है, इतिहासकार भी। इतिहास और उपन्यास दोनों समाज के महत्वपूर्ण हिस्से हैं, क्योंकि दोनों का नाता मानव से है। इसलिए दोनों के समन्वय प्रयोग में सावधानी बरतनी चाहिए। प्राचीन शिलालेख, मुद्रा, स्मारक, ताम्रपत्र, यात्रियों का विवरण, प्राचीन ग्रन्थ आदि के आधार पर इतिहास का निर्माण होता है। इतिहास को इन आधारों को छोडकर कल्पना जगत जाने की अनुमति नहीं। डॉ. गोपीनाथ तिवारी के अनुसार इतिहास प्राचीन युग के प्रामाणिक आधारों का गुलाम है।[1] इतिहासकार एक सीमारेखा के अन्दर रहकर ही इतिहास रचना करता है जिससे बाहर जाना इतिहास के लिए हानिकारक हो सकता। उसे भावना से काम लेने का अधिकार नहीं। उसकी रचना बुद्धि पर आधारित होती है। वह प्राप्त तथ्यों के आधार पर आगे चलता है। अगर उसमें कल्पना ज़रा भी जुड जाये तो वह 'इतिहास' के पद से गिर जायेगा। इस प्रकार केवल

---

1. डॉ. गोपीनाथ तिवारी, ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार

तथ्य प्रस्तुत करने के कारण इतिहास में नीरसता आने की संभावना है। इतिहास की इसी नीरसता को कल्पना के सहारे दूर करने का प्रयास जब किसी उपन्यासकार द्वारा होता है तब ऐतिहासिक उपन्यास का जन्म होता है।

ऐतिहासिक उपन्यासों में प्रयुक्त कल्पना की भी सीमा है। प्रयुक्त कल्पना ऐसा मर्यादित होना चाहिए ताकि इतिहास की आत्मा और घटनाओं का स्वरूप बिगड न जाये। डॉ. मक्खनलाल शर्मा के अनुसार ऐतहासिक उपन्यास ऐतिहासिक सामग्री और औपन्यासिक कला के परिणय का परिणाम है और इस परिणय का पुरोहित है उपन्यासकार'१ ऐतिहासिक उपन्यासकार को अपने उपन्यास पक्ष से नीति करने के लिए कल्पना तथा इतिहास पक्ष को तृप्त करने के लिए प्राचीन शिला लेख, स्मारक, प्राचीन मुद्रायें, ग्रन्थ आदि की सहायता लेनी पडती है। इतिहास को उपन्यास बनाते वक्त अगर कोई अव्यक्तता आ गयी तो वहाँ कल्पना से काम चलाया जाता है। इतिहासाधारित उपन्यास की रचना में ऐतिहासिक घटनाओं और पात्रों को ऐसे रंग देने का हक उप्नयासकार को है जिससे कृति के उद्देश्य की पूर्ति में सहायता मिल सके। ऐसा परिवर्तन उपन्यासकार अपने कल्पनानुसार कर लेता है। यही कारण है कि समान ऐतिहासिक घटनाओं और पात्रों पर लिखे गये विभिन्न ऐतिहासिक उपन्यासों में भिन्नता दिखाई पडती है। ऐतिहासिक उपन्यासकार निजी अनुभूति और ऐतिहासिक सत्य का समन्वय अपने उपन्यास में करता है। सफल ऐतिहासिक उपन्यासकार में इतिहास की सच्चाई भी मिलती है और कल्पना का मनोरंजन भी।

उपन्यास कला के अभाव में इतिहास के पण्डित होने पर भी ऐतिहासिक उपन्यासकार नहीं बन सकता। ऐतिहासिक उपन्यास में इतिहास का क्या स्थान है इस बात पर अनेक मत प्रचलित हैं। अनेक उपन्यासकार ऐसे है, जो अपने उपन्यास की

कथाओं के विश्वसनीय बनाते के लिए इतिहास से सहायता लेते हैं। वे इतिहास के बल पर पाठक का विश्वास प्राप्त करते हैं। पाठक इतिहास की प्रामाणिकता में फँसकर उपन्यास की काल्पनिक कथा को भी अपनाते हैं। प्रारंभिक हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यासों के आरंभ या मुखपृष्ठ पर 'सत्यघटना मूलक' लिखकर उपन्यासकार उपन्यासों को ऐतिहासिक बना देने थे। किशोरीलाल गोस्वामी जी के उपन्यास इस बात का प्रमाण हैं।

हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों के अध्ययन से उन्हें लिखने के पीछे उपन्यासकारों का लक्ष्य क्या था, यह स्पष्ट होता है। कुछ उपन्यासकार ऐसे हैं जिनका उद्देश्य देशभक्ति को प्रकटकरना है। अपने गौरवमय अतीत और वीर पूर्वजों से प्रभावित होकर उन पर आधारित उपन्यास लिखना कुछ ऐतिहासिक उपन्यासकारों की रीति है। देशभक्ति तथा वीरपूजा उनका लक्ष्य है। वृन्दावनलाल वर्मा के अनेक उपन्यास ऐसे हैं। 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई', 'अहिल्लाबाई' आदि उपन्यास इस श्रेणी के हैं।

कुछ उपन्यासकारों का लक्ष्य समसामयिक समस्याओं को प्रस्तुत करना है। अतीत से वर्तमान सदृश्य परिस्तितियाँ चुनकर उनकी प्रस्तुति से वर्तमान समस्याओं को दिखाना वर्मा, रंगेय राघव, यशपाल, चतुरसेन शास्त्री, अमृतलाल नगर जैसे कुछ उपन्यासकारों का उद्देशय रहा है।

डॉ. सत्यपाल चुघ के अनुसार कुछ ऐतिहासिक उपन्यासों का लक्ष्य यह दिखाना है कि इतिहास अपने को दुहराता है। इसके उदाहरण के रूप में गुरुदत्त कृत 'विनाशाय च दुष्कृताम' उपन्यास को जिसमें लिया जा सकता है जिसमें महाभारत युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध की तुलना करके उनके भयंकर परिणामों को चित्रित किया गया है।[1]

---

1. डॉ. सत्यपाल चुघ, ऐतिहासिक उपन्यास, पृ - 16

ऐतिहासिक उपन्यासकार कल्पना के सहारे इतिहास से कथा बुनकर उपन्यास तैयार करता है। लेकिन कल्पना के नाम पर इतिहास को विकृत बनाने का उसे अधिकार नहीं। उसे विभिन्न क्षेत्रों में होनेवाली प्रगति का पूरा ज्ञान होना भी आवश्यक है। इतिहास से कथावस्तु लेते समय उसके काल, उससे चित्रित तौर-तरीके, आचार-विचार, रहन-सहन तथा वेष-भूषा सभी पर ध्यान रखना चाहिए। भौगोलिक परिस्थितियों का ज्ञान भी ऐतिहासिक उपन्यासकार के लिए अनुपेक्षणीय है।

ऐतिहासिक उपन्यासकार अपनी बिंबात्मक शैली तथा कल्पना प्रयोग की दृष्टि से इतिहासकार से भिन्न है। ऐतिहासिक उपन्यास के निर्माण में भी छः आंगों की आवश्यकता है। वे हैं कथावस्तु, पात्र, वार्तालाप, वातावरण, उद्देश्य और शैली।

कथानक :

पूर्ण संगठित कथानक ऐतिहासिक उपन्यास की कसौटी है। सरल और सरस होने के साथ ही कम शब्दों में इतिहास प्रस्तुत करना चाहिए। ऐतिहासिक घटनाओं का क्रमिक-चित्रण ऐतिहासिक उपन्यासकार के लिए समस्या ही है। उपन्यास में बीचबीच के कल्पना प्रयोग से इतिहास का क्रम कुछ परिवर्तित होने की संभावना है। इससे बचना चाहिए।

पात्र :

पात्रों के चयन में भी उपन्यासकार का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। पात्र और कथानक का ठीक मेल उपन्यास की सफलता है। पाठक प्रत्येक पात्र के हर परिवर्तन जानने के लिए उत्सुक रहते हैं। इतिहासकार का ध्यान घटनाओं और तिथियों पर अधिक रहता है। पात्रों की क्रिया-प्रतिक्रियाओं से उपन्यास की कथा आगे बढती है।

अतः उपन्यासकार अपने पात्रों को सदैव सक्रिया रखता है। ऐतिहासिक उपन्यासों में पात्रों का चित्रण कठिन कार्य है, क्योंकि पात्रों को शुद्ध ऐतिहासिक रूप से बचाकर एक औपन्यासिक पात्र बनाना पडता है। उन्हें हू-ब-हू ऐतिहासिक रूप में प्रस्तुत करने से वे ऐतिहासिक प्रतीक बन जायेंगे। उपन्यास को आकर्षक बनाने के लिए ऐतिहासिक पात्रों को बहुत कुछ साधारणीकृत करके प्रस्तुत करना होता है। ऐतिहासिक उपन्यास में सफल पात्र-योजना केलिए कुछ गुणों को निर्धारित किया गया है। वे हैं स्वाभाविकता, सजीवता, मनोविज्ञान और पूर्णता।

पात्रों के सहज और स्वाभाविक चित्रण में मनोविज्ञान की सहायता आवश्यक है। परिस्थिति और वातावरण के अनुसार पात्र सृष्टि करने में मनोविज्ञान सहायक होता है। ऐतिहासिक पात्रों का मनोविज्ञान प्रस्तुत करने समय उपन्यासकार को उन पात्रों की पृष्ठभूमि, वातावरण एवं संस्कार को ध्यान में रखना पडता हैं। पूर्णता चरित्रांकन का विशिष्ट गुण है। सामान्य उपन्यासों के पात्र और वातावरण को पूर्ण रूपेण समझने के लिए पाठक अपने अनुभव एवं समाज से सहायता लेता है। लेकिन ऐतिहासिक उपन्यास में यह सुविधा नहीं रहती, क्योंकि उसके कथानक का परिवेश भूतकालीन होता है। इतिहासकार किसी पात्र के संबन्ध में उतनी सूचना ही देगा जितना उसे प्रामाणिक रूप से मिला है। पात्र के चरित्र का विशद वर्णन उसका काम नहीं, यह उपन्यासकार का काम है। उपन्यासकार अपनी कल्पनाशक्ति एवं लोकव्यवहार के ज्ञान की सहायता से पात्रों को पूर्णता प्रदान करता है।

वार्तालाप :

यदि संवाद में आकर्षणीयता नहीं तो उपन्यास नीरस बन जाता है। संवाद उपन्यास को स्वाभाविक और प्रवाहशील बनाता है। संवाद या कथोपकथन के द्वारा

पात्रों की भावनाओं अथवा प्रतिक्रियाये पाठक के सामने अभिव्यक्त होती हैं। ऐतिहासिक उपन्यास का परिवेश एवं पात्रों की मनोदशा का प्रत्यक्षज्ञान असंभव होने के कारण कल्पना की सहायता लेनी पडती है जिसमें संवाद का महत्वपूर्ण योग रहता है। संवाद में पात्रों की संस्कृति के अनुसार, देश-जाति, सामाजिक स्थिति और धर्म के अनुसार परिवर्तन होता है।

वातावरण :

वातावरण का निर्माण ऐतिहासिक अपन्याय में विशेष महत्व रखता है। सामान्य उपन्यास की अपेक्षा ऐतिहासिक उपन्यास की वातावरण सृष्टि में अधिक सतर्कता रखनी चाहिए। भूतकालीन वातावरण का पुनर्निर्माण ऐतिहासिक उपन्यास में होता है। इसलिए भूल से भी आधुनिक परिवेश की झांकी उसमें नहीं आना चाहिए। अतीत के वातावरण में उपन्यास के पात्र जीते हैं और घटनायें घटित होती है। कुछ ऐतिहासिक उपन्यास के पात्र, और घटनायें काल्पनिक होने पर भी वातावरण ऐतिहासिक ही होगा।

उद्देश्य :

ऐतिहासिक उपन्यासों का भी विशेष उद्देश्य होता है। इतिहास प्रिय उपन्यासकार अपनी रुचि के अनुसार इतिहास से अपने उपन्यास के लिए अनुकूल वातावरण ढूँढ निकालता है। हर उपन्यासकार का अपना अपना उद्देश्य होता है। किसी का उद्देश्य इतिहास का पुनर्निर्माण है तो किसी का उद्देश्य इतिहास के द्वारा समसामयिक समस्याओं को प्रस्तुत करना है।

शैली :

ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना शैली में भी अपनी विशेषतायें हैं। शैली के अन्तर्गत भाषागत स्पष्टता और सजीवता भी आती है। ऐतिहासिक उपन्यासकार को इन तत्वों को ध्यान में रखकर उपन्यास की रचना करनी पडती है। इन सभी तत्वों पर इतिहास की छाया रहती है।

हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास

हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास की परम्परा अन्य सामान्य उपन्यासों की रचना के आसपास ही शुरु हुई। प्रथम हिन्दी उपन्यास 'परिक्षागुरु' १८८२ में प्रकाशित हुआ। इसके आठ वर्ष बाद किशोरी लाल गोस्वामी कृत 'हृदयहारिणी वा आदर्श रमणी' प्रकाशित हुआ। सन् १८९० में प्रकाशित यह उपन्यास हिन्दी का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास माना जाता है।

हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास की परम्परा सन् १८९० से शुरू होकर अनुदिन विकास करने लगी। यहाँ प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में इन उपन्यासों को अध्ययन की सुविधा के लिए स्वतन्त्रता पूर्व ऐतिहासिक उपन्यास और स्वातन्त्र्योत्तर ऐतिहासिक उपन्यास - ऐसे दो भागों में विभाजित किया गदया है और इनको भी सुविधानुसार कई भागों में विभक्त करके प्रस्तुत किया गया है। यह विभाजन सूक्ष्म रूप से सौ प्रतिशत ठीक है, ऐसा दावा नहीं किया जा सक्ता। क्योंकि कुछ उपन्यासकार ऐसे हैं जो दोनों भागों में आ जाते हैं। इसलिए कालविभाजन की रेखा सुदृढ नहीं हो सकती। फिर भी शोध के सुविधार्थ ऐसा विभाजन किया गया है।

स्वातन्त्र्य पूर्व युग (१८९० ई - १९४७ ई)

यह युग हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यासों का प्रारंभिक युग है। युगान्त तक आकर इसका पूर्ण विकास भी हो गया है। किशोरीलाल गोस्वामी, वृन्दावल लाल वर्मा, यशपाल, राहुल सांकृत्यायन जैसे अनेक महान इतिहासकार इसी युग की देन है। इनमें गोस्वामी जी और वृन्दावनलाल वर्मा का महत्व औरों से इतना ऊपर आया है कि इस युग को इन दोनों के नाम से दो भाग में विभक्त करना उचित होगा। कई विद्वानों ने पहले ही ऐतिहासिक उपन्यासों को इस प्रकार विभाजित किया है। हम इस युग को गोस्वामी युग तथा वर्मा युग दो करके अध्ययन करेंगे।

गोस्वामीयुग (सन् १८९० ई - १९२७ ई)

हिन्दी का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास सन् १८९० ई. में प्रकाशित हुआ, वह था किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'हृदयहारिणी वा आदर्श रमणी।' इसके पूर्व ऐतिहासिक उपन्यास लिखने का कुछ प्रयास जरूर हुआ था। पर असफल निकला। भारतेन्दु ने एक ऐतिहासिक उपन्यास लिखना आरंभ किया था, पर पूर्ति करने के पहले उनका निधन हो गया। 'हृदयहारिणी' के पहले देवकीनन्दन खत्री ने भी 'गुप्तगोदान' नामक उपन्यास को ऐतिहासिक उपन्यास के रूप में लिखना शुरू किया था, परन्तु प्रथम भाग पूरा होते ही उनकी मृत्यु हो गई। लेकिन बाद के विद्वानो इसे ऐतिहासिक मानने को तैयार नहीं होते। बल्कि तिलस्मी उपन्यास अधिक मानते है। बहुत कम विद्वान गोस्वामी के ही 'कुसुम कुमारी' को प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास मान लेते है जिसका प्रकाशन १८८९ ई. में हुआ था। लेकिन गहन अध्ययन से पता चलता है कि वह ऐतिहासिक से अधिक सामाजिक है। उसमें देवदासी प्रथा जैसी एक सामाजिक समस्या का चित्रण किया गया है।

गोस्वामीजी के कुल १४ ऐतिहासिक उपन्यास उपलब्ध हैं। इस समय के उपन्यासकारों में सबसे अधिक संख्या में ऐतिहासिक उपन्यास लिखने का श्रेय उनको ही है। इस युग का नाम गोस्वामी युग रखने का एक कारण भी यह है। साथ ही उन्होंने अपने समाचार पत्र 'उपन्यास' द्वारा दूसरे ऐतिहासिक उपन्यासकारों को प्रोत्साहित भी किया। इस समय के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों को अधिक रंजक बनाने केलिए तिलस्मी-ऐयारी तथा वासनात्मक प्रसंगों को जोड लिया है। गोस्वामी के उपन्यासों में भी यह देखा जा सकता है। मनोरंजन के साथ सुधारवाद भी उनका उद्देश्य था। ऐतिहासिक कथा के माध्यम से समसामयिक सामाजिक समस्याओं का उद्घाटन भी किया गया। इन समस्याओं में सती-प्रथा, पर्दा-प्रथा, धार्मिक उच्च-नीचत्व आदि था। गोस्वामी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से मनोरंजन के साथ ही इतिहास बोध का ज्ञानार्जन भी साध्य बनाया।

१८९० ई. में गोस्वामीजी, का एक और ऐतिहासिक उपन्यास भी प्रकाशित हुआ - 'लवंगलता'। यह 'हृदय हारिणी' के उपसंहार के रूप में लिखा गया है। दोनों का कथानक एक है। दोनों में नवाब सिराजुद्दौला की विषय लोलुपता विषय है। इनके बाद गोस्वामी का 'तारा' तथा 'गुलबहार वा आदर्श भ्रातृ प्रेम' दो ऐतिहासिक उपन्यास प्रकाशित हुए।

गोस्वामी के अलावा इस युग के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं। गंगाप्रसाद गुप्त, दयाराम, बलदेवप्रसाद, जयरामदास गुप्त, बलभद्रसिंह आदि। दयाराम कृत, मौजदीन मेहताब १८९३ में और बलदेवप्रसाद का 'अनारकली' १९०० में निकला। इन सब उपन्यासों की कथा हिन्दु घराने पर आश्रित थी। हिन्दुओं की वीरता

तथा मुसलमानों की छल-कपटता का वर्णन करना इस युग के ऐतिहासिक उपन्यासकारों का मुख उद्देश्य लगता है। कथावस्तुएं मुस्लिम काल से ली गई है। मुसलमान शासकों के अत्याचार और क्रूर व्यवहार का चित्रण इनमें हुआ है। हिन्दू नारियों के चरित्र का विशेष गुण तथा सतीत्व की शक्ति इन उपन्यासों निहित है। भारतीय राजाओं का गुणगान भी ऐतिहासिक उपन्यासों का मुख्य लक्ष्य था।

इन उपन्यासों के कई समानतायें भी थी। सभी के विषय में भी समानता थी। सभी में हिन्दू-मुसलमान संघष तथा हिन्दुओं की विजय चित्रित थी। उनके नाम में भी विशेषता थी। एक ही नाम के अनेक उपन्यास थे, जैसे 'बीरबाला', 'रंग में भंग', 'माया रानी' आदि। सभी उपन्यासों का रस श्रृंगार था। श्रृंगार रस के प्रमुख अंग जैसे मान, विरह, मिलन आदि का विशद चित्रण इनमें मिलता है। इनमें मुसलमानों को असभ्य शब्दों से पुकारा गया है। गोस्वामी के 'रजिया बेगम', 'तारा', जैसे उपन्यासों में मुसलमान पात्रों के 'मक्कार', 'शैतान', 'हरामज़ादगी' जैसे शब्दों से संबोधित किया गया है।

उपन्यासों को रुचिपूर्ण बनाने के लिए तिलस्म-तैयारी का खूब प्रयोग हुआ है। यद्यपि १८९० से ऐतिहासिक उपन्यास की परम्परा शुरू हुई, पर १९१० के बाद ही विकास की सूचना मिलती हैं। इस समय से ऐतिहासिक उपन्यास में श्रृंगार रस के बदले वीर रस दिखाई पडने लगा। वीररस प्रधान उपन्यास है - शिवजी की चतुराई, चौहानी तलवार (हरिदास मणिक) साहसी राजपूत (सारिका प्रसाद मौर्य) आदि। १९१० के पहले नारी संबन्धित श्रृंगारिक चित्रण था तो १९१० के बाद मुसलमान शासकों से लोहा लेनेवाले वीर, देशप्रेमी हिन्दुओं का चित्रण मिलता है।

इस मोड के साथ ऐतिहासिक उपन्यास में सच्ची ऐतिहासिकता का चित्रण अधिक आने लगा। इतिहास तथ्यों के प्रति रुचि बढ गयी। लेकिन इस इतिहास-प्रेम का

फल यह हुआ कि ऐतिहासिक उपन्यास नीरस, शुष्क इतिहासवर्णन मात्र रह गये। इस प्रारंभिक युग के ऐतिहासिक उपन्यास यद्यपि कला और उद्देश्य की दृष्टि से सफल नहीं कहा जा सके, परन्तु ऐतिहासिक उपन्यास परम्परा की बुनियाद होने के कारण इनका महत्व निर्विवाद है।

वर्मायुग (१९२९ ई - १९४७)

सन् १९२९ में वर्मा का आगमन 'गढकुण्डार' के प्रकाशन के साथ हुआ। उनके आगमन से हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास में युगान्तकारी परिवर्तन हुआ अनेक उपन्यासकार इनसे आकृष्ट होकर ऐतिहासिक उपन्यास की ओर ध्यान देने लगे। लेकिन ऐतिहासिक उपन्यास की संख्या इस युग में अधिक नहीं थी। करीब २८ ऐतिहासिक उपन्यास ही १९२९-१९४७ तक प्रकाशित हुए हैं और इनमें बहुत कम ही महत्वपूर्ण हैं।

'गढकुण्डार' के अलावा वर्मा जी के अन्य प्रमुख उपन्यास हैं, 'विराटा की पद्मिनी', 'मुसाहिबजू' तथा 'झाँसी की रानी', 'गाढकुण्डार' में चौदहवी शताब्दी के बुंदेलखण्ड की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक परिस्थितियों का चित्रण है 'झांसी' की रानी में रानी की जीवनी चित्रित है। यह उपन्यास उत्तम कोटि का हैं। इन चार उपन्यासों के बाद भी उनके कई ऐतिहासिक उपन्यासों का प्रकाशन हुआ जिनमें 'कचनार', 'मृगनयनी', 'टूटे काँटे', 'अहिल्या बाई'

आदि प्रमुख हैं। वर्माजी ने अपने आदर्श पात्रों के द्वारा निजी आदर्शों को उद्घाटन करने का प्रयास किया है।

वृन्दावन लाल वर्मा के अलावा इस युग के प्रमुख उपन्यासकार हैं श्री चतुर्सेन शास्त्री। उनके दो उपन्यास १९४७ के पहले प्रकाशित हुए 'मंदिर की नर्तकी' तथा 'रक्त

की प्यास'। 'मन्दिर की नर्तकी' बौद्धकाल पर आधारित है। 'रक्त की प्यास' का नवीन संस्मरण 'हरण निमन्त्रण' नाम से १९६१ में प्रकाशित हुआ। राहुल सांकृत्यायन के भी दो उपन्यास इस समय के हैं, 'सिंह सेनापति' तथा 'जय यौद्येय'। 'सिंह सेनापति' में लेखक के व्यक्तिगत जीवन की झांकि प्रस्तुत है। इनका कथानक भी बौद्धकाल का है। भगवतीचरण वर्मा का 'चित्रलेखा' भी इसी युग का ऐतिहासिक उपन्यास है।

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का 'बाणभट्ट की आत्मकथा' हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यास परम्परा में विशेष महत्व रखता है। बाणभट्ट के द्वारा द्विवेदीजी मानवता की समीक्षा करते हैं कि महापुरुषों ने करुणा और मैत्री के उपदेश दिये हैं पर उन्हें सफलता नहीं मिली है। द्विवेदीजी ने सांस्कृतिक पक्ष को ऐतिहासिक उपन्यास के द्वारा आगे बढाया है। इससे तत्कालीन सामाजिक जीवन पद्धतियों, धार्मिक, साहित्यिक, कलात्मक परिस्थितियों का उद्घाटन हुआ है। वे मानवता के पक्षपाति रहे हैं। उनके ज्यादातर उपन्यास स्वातन्त्र्योत्तर युग में लिखे गए हैं।

इस युग के उपन्यासों के नाम की एक विशेषता यह दिखाई देती है कि पात्रों के नाम से उपन्यास का नाम रखा गया है। कई उपन्यासों में नवीन विषय तथा कईयों में पुराने विषयों को प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास कला की दृष्टि से इस युग के ऐतिहासिक उपन्यास बहुत आगे आ गये हैं। इन उपन्यासों में कल्पना और इतिहास का मणिकांचन संयोग हुआ है। कुछ उपन्यास कल्पना प्रधान (जैसे बाणभट्ट की आत्मकथा, जययोधेय, सिंह सेनापती) कुछ इतिहास प्रधान (झांसी की रानी) कुछ इतिहास कल्पना का समन्पव (गढ कुण्डार) और कुछ इतिहासाभासी (दिव्या) है। कभी कभी अपने कल्पनाश्रित ऐतिहासिक उपन्यास को प्रमाणिकता देने के लिए उप्यासकार झूठी प्रामाणिकता देते हैं। राहुलजी का सिंहसेनापती इसका उदाहरण है। इसकी

भूमिका में उपन्यासकार ने लिखा है कि उनकी यह पुस्तक छपरा की खुदाई में प्राप्त ईंटों पर लिखी सेनापती सिंह की पुस्तक का अनुवाद है और पाठकों को यदि उनकी सच्चाई पर संदेह हो तो वे उन सोलह सौ ईंटों को पटना म्यूज़िराम में देख सकते हैं।

वर्मायुग में राजनीतिक समस्याओं का भी सूत्रपात हुआ है। राहुलजी इसके सूत्रधार थे। प्रगतिशील प्रजातन्त्रात्मक राज्य व्यवस्था का समर्थन उन्होंने अपने उपन्यासो में किया है। उनके 'जययौद्येय' तथा 'सिंह सेनापती' में साम्राज्यवाद तथा गणतन्त्र के बीच का संघर्ष है। राहुलजी एवं यशपाल जनवादी थे। यशपाल ने अपने मार्क्सवादी चिन्तनधारा को इतिहास के माध्यम से प्रवाहित किया है। उन्होंने अतीत गौरव की प्रशंसा मात्र नहीं की बल्कि वे उसकी आलोचना करके दुर्बलताओं को भी सामने लाये हैं। वे मनुष्य के कर्म पर विश्वास रखते थे, भाग्य या ईश्वर पर नहीं। मनुष्य अपनी नियति को स्वयं निर्मित करता है। वह अपने ही बनाये हुए विधान को आवश्यकतानुसार परिवर्तित भी कर सकता है। 'दिव्या' में व्यक्ति, समाज, और धर्म जैसे शोषण के कई रूप और उनके विरुद्ध एक नारी का विद्रोह दिखाया गया है। राहुल के उपन्यासों में भी सामाजिक असंगतियों के विरुद्ध वर्ग संघर्ष एवं क्रान्ति की आवश्यकता को समझाता है।

गोस्वामी युग के उपन्यासों में पाठकों को रिझाने के लिए विलासिता का चित्रण होता था। लेकिन वर्मायुग में आकर राहुल और यशपाल के उपन्यासों में जो विलक्षिता है वह उपन्यास के लिए प्रयुक्त नहीं, बल्कि उपन्यासकार के प्रवृत्तिवादी जीवन दर्शन है। सिंहसेनापति इसका उदाहरण है। इस युग के द्विवेदी कृत उपन्यास में यह प्रवृत्ति कम मिलती है। वर्मा में नर-नारी के माँसल सौन्दर्य एवं श्रृंगार का संयत चित्रण हुआ है।

इस युग के उपन्यासों में प्रागौतिहासिक काल तक को विषय बनाया गया है। इस ऐतिहासिकता की प्रामाणिकता प्रस्तुत करने में द्विवेदी एक हद तक सफल हुए

हैं. लेकिन राहुल तथा यशपाल जैसे उपन्यासकार अपने उपन्यासों के द्वारा अपना मत-आदर्श दिखाने के प्रयास में ऐतिहासिक प्रामाणिकता की बात भूल गये।

इस युग की अन्य कृतियाँ है धर्मेन्द्रिनाथ का 'रजिया', गोविन्द वल्लभ पन्त का 'अमिताभ', प्रसाद का 'इरावति' आदि।

स्वातन्त्र्योत्तर युग

१९४७ ई. में भारत के सभी क्षेत्रों में नया मोड आ गया था। भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् साहित्य में भी आधुनिक भावबोध का दिग्दर्शन होने लगा। ऐतिहासिक उपन्यास मे भी पूर्ववर्ती उपन्यासों में जिन प्रवृत्तियों का सूत्रपात हुआ उनका विकास इसी युग में हुआ। वर्मा युग के प्रमुख उपन्यासकार जैसे वर्मा हजारी प्रसाद द्विवेदी, चतुरसेन शास्त्री, राहुल सांकृत्यायन, गोविन्दवल्लभ पन्त आदि का योगदान इसी युग में भी प्राप्त हुआ। इनके अलावा अनेक नवीन उपन्यासकारों का उदय भी हुआ। उनमें आनन्द प्रकाश जैन (कठपुतली के धागे, तीसरा नेत्र), रंगेय राघव (मुर्दों का टीला, चींवर), यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र (युगदेवता, दिया जला दिया बुझा), उमाशंकर (नाना फडबवीस, कावेरी के किनारे, भुवन विजयम्) अमृतलाल नागर (शतरंज के मोहरे, सुहाग के नूपुर, एकदा नैमिषारण्ये, भात घूँघटवाला मुखडा), धर्मेन्द्रनाथ (रज़िया, तैयूर), रघुवीर शरण (आग और पानी, पहली हार), प्रताप नारायण श्रीवास्तव (बयालीस, विसर्जन) आदि कुछ प्रमुख हैं। 'वैशाली की नगरवधू', 'नूराजहाँ', 'बयालीस स्वराज्य दान', 'स्वतन्त्र भारत', 'सोमनाथ', 'रक्त की प्यास', 'शतरंज के मोहरे' आदि इस युग के आदिकालीन कुछ उपन्यास हैं।

विषय की दृष्टि से इस युग के उपन्यासों में विविध क्षेत्र और काल को अपनाया गया है। कुछ मे ई. पूर्व इतिहास जैसे बौद्धकाल तथा मौर्याकाल का

वातावरण भी है (वैशाली की नगरवधू, उदयन, उत्तरायन)। कुछ गुप्तकाल तथा गुप्तकाल के पश्चात के इतिहास पर(मधुर स्वप्न, विस्मृत यात्री, चीवर), राजपूत काल पर (जब आकाश भी रो पडा, सोमनाथ, तीसरा नेत्र), मुगल-मुस्लिम काल पर (चारुचन्द्रलेख, पलकों की ढाल, खून का टीका) अंग्रेज़ी के समय पर आधारित (वाजिद अली शाह, रामगढ की रानी, सोना और खून) स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय पर आधारित (राजस्थानी रनिवास, बयालीस) आदि अनेक उपन्यासों का प्रकाशन हुआ है। कुछ उपन्यासों में महान व्यक्तियों को केन्द्र बनाया गया है, जैसे मानस का हंस, खंजननयन और महामन्त्री चाणक्य।

सांस्कृतिक परिवेश का चित्रण द्विवेदी के उपन्यास में ज्यादातर प्राप्त है। उनका 'चारु चन्द्रलेख' स्वातनत्र्योत्तर ऐतिहासिक उपन्यास परम्परा का अमूल्य जवाहर ही है। द्विवेदी के बाद सांस्कृतिक पक्ष को लेकर उपन्यास रचना करने का श्रेय डॉ. शिवप्रसाद सिंह को है। उनके 'कुहरे और युद्ध' में दिल्ली के मध्यकालीन इतिहास का चित्रण है और अन्य दो उपन्यास है 'दिल्ली दूर है' तथा 'नीलाचांद।' 'नीलाचांद' में ग्यारहवीं सदी में काशी के राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवेश में उत्पन्न संघर्ष और व्यथा का चित्रण है। सन्हैयालाल ओझा का 'संभवामि' का प्रकाशन १९८३ में हुआ था। यह सांस्कृतिक उपन्यास है। दो खण्डों में प्रकाशित इसमें आर्यो-अनार्यो का संघर्ष दिखाया है। भारतीय मूल्यों का पुनर्मूल्यांकन उपन्यासकार का उद्देश्य है।

मायानंद मिश्र के 'प्रथम शैल पुत्री च' और 'मंत्रपुत्र', विश्वंभर नाथ उपाध्याय के 'जाग मछदर गौरख आया' (१९८३), 'जोगी मत जा' (१९८९) आधुनिक काल के ऐतिहासिक उपन्यास हैं। प्रथम शैल पुत्री च में ई.पू. बीस हजार से ई.पू. १८०० तक के भारत में मानव के विकास की कथा है। मंत्र पुत्र में ई.पू. २० वी. सदी से ई.पू १४

वीं. सदी के बीच की मानव कथा है। हाल ही में प्रकाशित कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान' गिरिराज किशोर का 'पहला गिरमिटिया' तथा श्रीलाल शुक्ल के 'विश्रामपुर का संत' आदि में इतिहास बोध प्राप्त है।

हिन्दी उपन्यासकार ऐतिहासिकता की अपेक्षा इतिहास परक वातावरण पसन्द करते हैं। क्योंकि कोरा इतिहास आम पाठक के लिए नीरस बनता है। हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परा के अध्ययन से हमें यह पता चलता है कि भारत के सुवर्णअतीत का सुख्यक्त चित्रण आधुनिक जनता के लिए उनमें सुरक्षित रखा गया है।

ऐतिहासिक उपन्यासों की सफलता इसमें निर्भर है कि यह अतीत आज के संदर्भ में कितना प्रासंगिक है। इस दृष्टि से अमृतलाल नागर के ऐतिहासिक उपन्यास सफल एवं सशक्त हैं।

अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अमृतलाल नागर प्रेमचन्द परम्परा के समर्थ उपन्यासकार हैं। हिन्दी साहित्य जगत के इन महान रचनाकार का जन्म आगरा के गोकुलपुरा मोहल्ले में १७ आगस्त १९१६ ई. को हुआ था। उनके पिता का नाम पं. राजाराम तथा माता का विद्यावती था। नागर के पिता बहुमुखी प्रतिभा थे। वे श्रेष्ठ अनिनेता थे। नागर जी के तीन भाई थे। उनमें एक, स्वर्गीय रतनलाल नागर अच्छे कैमरा निदेशक थे और एक अनुज मदनलाल नागर अनुग्रहीत चित्रकार हैं।

नागरजी का परिवार कला-प्रेमियों का परिवार रहा है। आदर्श निष्ठ और उच्च संस्कारोंवाले माता-पिता एवं पितामह की छाया में पलने का जो अवसर उन्हें प्राप्त हुआ, उसने कला कौशल और साहित्यरुचि को बढ़ावा दिया। बचपन से प्राप्त इस

कलापरक वातावरण विवाहोपरान्त भी कायम रहा। इसका श्रेय उनकी पत्नी प्रतिभा जी को है। नागरजी के शब्दों में प्रतिभा जी ७५ प्रतिशत अमृतलाल नागर ही है। नागरजी की ख्याति और विजय के पीछे पत्नी का बहुत योगादान है। हर पुरुष की विजय के पीछे एक स्त्री का योगादान होगा। इस कहावत का यह उत्तम उदाहरण है। इस दम्पति की सक्रियता और संस्कारनिष्ट कर्मों का प्रभाव उनकी चार संतानों - दो पुत्र और दो पुत्रियाँ - पर भी पूर्ण रूप से पडा है। वे सब किसी न किसी प्रकार कलाक्षेत्र से संबन्धित हैं।

नागरजी विनोदशील व्यक्ति है। हास्य और व्यंग्य से मनोरंजकता की सृष्टि उनका प्रिय कर्म है। लेकिन उनकी रुचियों पर विचार करने से प्रमुख स्थान उनकी इतिहास प्रियता को मिलता है। ऐतिहासिक और पौराणिक आकर्षण के कारण उन्होंने अपने देश के अतीतकाल का अध्ययन मनन करके उन्हें अपनी कलाकृतियों के द्वारा प्रस्तुत भी किया है। सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक के रूप में उनकी अनेक कृतियाँ महत्वपूर्ण हैं।

उनकी लेखनक्षमता और लिखने की लालसा ने उन्हें पत्रकार भी बनाया है। उनके संपादन में १९३४ में 'सुतीति' नामक द्वैमासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसके बाद १९३६ में 'सिनेमा समाचार', सन् १९३८ में 'चकल्लस' जैसी पत्रिकाओं का भी संपादन उन्होंने किया है। 'चकल्लस' के द्वारा हास्य-व्यंग्य तथा बौद्धिक चर्चाओं को प्रस्तुत किया गया है। इनके अलावा वे सन् १९४५ में 'नया साहित्य' और सन १९५३ में प्रसाद का भी संपादक रहे हैं।

सन् १९४० में नागरजी ने फिल्मी क्षेत्र में भी पदार्पण किया। लगभग २० फिल्मों के कथा-संवाद कार्य उन्होंने किया। फिल्मों में डबिंग कला का प्रारंभ उनके द्वारा

हुआ। लेकिन इस फिल्मी संबन्ध ने उन्हें आर्थिक सुरक्षा न दे पायी। इसलिए फिल्मी जगत छोडकर वे भारत सरकार के रेडियो विभाग में नौकरी करने लगे। इस समय उपन्यास क्षेत्र में प्रवेश किया। पर साहित्य पर अधिक ध्यान देने के लिए उन्होंने कुछ समय बाद आकाशवाणी से इस्तीफा दे दिया। सन् १९५६ से नागर ने एक स्वतन्त्र लेखक के रूप से नया जीवन शुरू किया जो निरन्तर सफल होता आगे चलने लगा। सन् १९९० में उनका निधन हुआ।

नागर का रचनासंसार

सृजनात्मक प्रतिभा हर एक व्यक्ति में होती है। पर उस प्रतिभा की अभिव्यक्ति की क्षमता जिसमें अधिक है वह अच्छा कलाकार बन जाता है। अपनी अन्तर्निहित भावनाओं तथा संवेदनाओं को उचित कल्पना के साथ प्रस्तुत करने से साहित्यकार भी सफल निकलता है। नागर के संबन्ध में यह सत्य साबित होता है। उनके परिवेश ने उन्हें सफल साहित्यकार बना दिया है। शुरु से ही नागर की रुचि साहित्य पर पडी थी। बचपन से ही लेखन कार्य उनका प्रिय विषय रहा है। बचपन से बडे बडे विद्वानों जैसे मिश्रबन्धु, डॉ. श्याम सुन्दर दास, हास्य व्यंग्य लेखक श्री शिवनाथ आदि के संपर्क में आने से साहित्य पर मोह अधिक बढ गया था।

नागरजी के साहित्य जीवन का बचपन बडा संघर्षशील रहा। उन्होंने कहानियों को लिखकर साहित्य क्षेत्र में प्रवेश किया, पर प्रारंभ काल में उन्हें प्रकाशित करने में वे असफल हो गये। १९३३ ई. में उनकी प्रथम कहानी छपी और उसके बाद उन्हें आगे बढने में कोई कठिनाई नहीं सामना करना पडा है। १९३५ में उनका एक कहानी संग्रह वाटिका भी प्रकाशित हुआ। इस समय से कुछ विदेशी रचनाओं का अनुवाद भी नागर ने तैयार किया था। गुस्ताव फ्लावेयर का उपन्यास 'मादम बावेरी' का

अनुवाद इनमें प्रमुख है। उन्होंने इन अनुवादों का उद्देश्य यशप्राप्ति या धनार्जन नहीं बल्कि ज्ञानार्जन कहा है। क्योंकि अनुवाद करने से अनेक अंग्रेजी-हिन्दी शब्दों से परिचय होता है। विदेशी साहित्य के अलावा मराठी पुस्तक गुजराती नाटक आदि भारतीय भाषा-ग्रन्थों का भी अनुवाद उन्होंने किया है।

अमृतलाल नागर के साहित्यिक योगादान के अनेक रूप हैं। अर्थात वे एक बहुमुखी प्रतिभा ही हैं। उन्होंने एक साथ उपन्यास, कहानी, बालसाहित्य, नाट्य, अनुवाद तथा रेखाचित्र जैसे अनेक विधाओं में अपनी तूलिका चलायी है।

कहानी

नागर ने अपने साहित्यिक जीवन का आरंभ कहानीकार के रूप में किया था। प्रेमचन्द से प्रभावित होकर उनकी यथार्थवादी मानवीय दृष्टि को नागर ने अपनाया। नागर की कहानियों का सामाजिक यथार्थ हास्य-व्यंग्य से अलंकृत है। अर्थात् उनका कहानी साहित्य उनके औपन्यासिक यथार्थ, व्यंग्य-विनोद और सांस्कृतिक लगाव का एक सशक्त प्रतिमान बनकर सामने आता है।

नागरजी के कहानी लेखन के आरंभ काल में सामाजिक यथार्थ हिन्दी कहानियों में एक धारा बन गयी थी। नागर की सामाजिक कहानियों पर चन्द्रघर शर्मा गुलेरी तथा विशंवभरनाथ कैशिक की कहानियों का प्रभाव देखा जा सकता है। कौशिख की सामाजिक कहानियाँ जैसे रक्षाबन्धन, ताई आदि में मानव हृदय की सच्चाई दीख पडती है। गुलेरी की कहानी, 'उसने कहा था' मात्र सामाजिक यथार्थ में ही नहीं, हर अर्थ में हिन्दी कहानी साहित्य की अमूल्य निधि है।

इनके अलावा प्रेमचन्द का प्रभाव नागर पर प्रत्यक्ष रूप से पडा है। सामाजिक यतार्थ का परिपक्व चित्रण प्रेमचन्द की कहानियों में हुआ है। इस परम्परा

की एक कडी है अमृतलाल नागर। उन्होंने अपने युगीन परिवेश के आधार पर अनेक कहानियाँ लिखी हैं। स्वातन्त्र्यपूर्व भारत, भारत पर पाश्चात्य प्रभाव तथा मुस्लीम प्रभाव जैसे भिन्न-भिन्न विषयों को कहानियों केलिए उन्होंने अपनाया।

नागर की कहानियों में विविध प्रवृत्तियों देखी जा सकती हैं। कुछ सामाजिक यथार्थ पर आधारित हैं तो कुछ हैं राजनीति पर आधारित। मनोवैज्ञानिक, आंचलिक तथा हास्य-व्यंग्य प्रधान कहानियाँ भी उन्होंने लिखी हैं। उनकी प्रतिनिधि कहानियों के अनेक संग्रह है - 'मेरी प्रिय कहानियाँ', 'पिपल की परी', 'एटमबम', 'तुलाराम शास्त्री', 'पँचवाँ दस्ता और सात कहानियाँ', हम 'फिदाए लखनऊ', 'सिकन्दर हार गया', 'भारत पुत्र नौरंगी लाल', 'कालदण्ड की चोरी' आदि।

सामाजिक यथार्थपरक कहानियों के अन्तर्गत 'शकीला की माँ', 'कादरमियाँ की भौजी', 'जन्तर मन्तर', 'मरघट के कुत्ते', 'हाजी कुल्फीवाला', 'खटकिन साभी', 'कयामत का दिन', 'गोरख धन्धे', 'जुलाब की गोली' आदि सम्मिलित हैं। 'एटमबम', 'चौदह अप्रैल', 'एक था गाँधी', 'जय पराजय', 'लखनवी होली' आदि कहानियाँ राजनीतिक कहानियों के अंतर्गत समाविष्ट हैं। 'बेबी की प्रेम कहानी' बाल मनोविज्ञान पर आधारित है और मनोविज्ञान पर आधारित दो अन्य कहानियाँ हैं - 'राजा, रानी और संतान' तथा 'मन के संकेत'। नागर की अधिकांश कृतियों की पृष्टभूमि लखनऊ पर आधारित है। इसलिए इन सभी में हम आंचलिकता देख सकते हैं। किन्तु मुख्य रूप से लखनऊ की आंचलिकता प्रस्तुत करनेवाली कहानियाँ हैं - एक दिल हज़ार दासतां तथा नवाब साहब। नागर ने अनेक हास्य व्यंग्य प्रधान कहानियाँ भी लिखी हैं। 'छापे के हुरूफ', 'डॉ. फरनीचर पलट', 'डाक्टरी साईन बोर्ड', 'बनफशा बोगम के बूरे नजर', 'हमारे पडोसी मुंशी बस्तावर लाल', 'तुलाराम शास्त्री' आदि अनेक कहानियाँ इस कोटि में आती हैं।

नगर की कहानियाँ किसी कल्पना या रहस्य को उद्घाटित नहीं करता। उनमें यथार्थ जीवन का, भारतीय संस्कारों से युक्त समाज का जीवन चित्रण प्रस्तुत है। इसलिए उनकी कहानियो मे सूक्ष्मता से अधिक स्थूलता का महत्व है।

उपन्यास

अमृतलाल नागर प्रेमचन्द परम्परा के समर्थ उपन्यासकार है। साहित्य और जीवन संबन्धी प्रेमचन्द का जो दृष्टिकोण था उसे समृद्ध करने का श्रेय भी नागर को प्राप्त है। प्रेमचन्द अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति साहित्य के माध्यम से देते थे। प्रेमचन्द के चरणानुगामी नागर ने भी इसी मत का प्रकटीकरण किया है। मानव जीवन तथा मानव चरित्र को अपने साहित्य में विषय बनाकर प्रस्तुत करने में उनकी क्षमता प्रशंसनीय है। अनुभवों की तीव्रता, अध्ययन की गहनता, तथा चिन्तन-मनन की गंभीरता, इन तीनों के मिलन का अनुपम सौन्दर्य उनकी कृतियों की

विशेषता है। मानव जीवन की यथार्थता को आंकने में उनकी संवेदन शीलता बहुत सहायक हुई है।

नागर के उपन्यासों में आज मानव जाति जिन समस्याओं का सामना करता है उन समस्याओं को दर्शाया गया है। नागर के उपन्यासों को सामान्यतः दो भागों में सामाजिक तथा ऐतिहासिक - विभक्त किया जा सकता है। इन दोनों की पृष्ठभूमि में ही अन्तर है, दोनों में निहित तत्व पूर्वयुग के समान आधुनिक युग से भी संबन्धित है। उनके उपन्यासों में उठाई गई समस्यायें बहुत सान्दर्भिक और व्यापक है। ये समस्यायें समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, दर्शन आदि कई क्षेत्रों से संबन्धित हैं। लेकिन वे इनमें किसी के भी पक्षधर नहीं है। उनकी रुचि तो केवल साहित्य में है। अगर साहित्य के

समान उनकी रुचि किसी और में है तो वह है इतिहास। इतिहास प्रेम के कारण ही भारत के अतीत का निकटतम परिचय उन्होंने प्राप्त किया है। वे न तो अन्ध परम्परावादी हैं, न परम्परा से कटे हुए कोरे आधुनिकतावादी। दोनों को समन्वित करके प्रस्तुत करने में उन्हें विशेष क्षमता है। इतिहास के प्रति उनकी रुचि किसी काल-खण्ड तक सीमित नहीं। वे भारत के प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक इतिहास के मर्मज्ञ है। ऐतिहासिक उपन्यासों में देशकाल और वातावरण के यथार्थ चित्रण की आवश्यकता है। ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास को ज्यों का त्यों नहीं प्रस्तुत किया जाता, बल्कि उसे कल्पना के द्वारा आकर्षक बनाया जाता है। कभी कभी कल्पित पात्र भी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में प्रस्तुत करने पर यथार्थ लगने लगते हैं। नागर के कुछ उपन्यास इतिहास से अधिक जुडे रहते हैं। पृष्ठभूमि के रूप में ही नहीं, इनमें अधिकांश घटनायें और पात्र ऐतिहासिक होते हैं। लेकिन कल्पना का पुट इनमें भी अवश्य रहता है, नहीं तो वह कोरा इतिहास बन जायेगा, उपन्यास नहीं।

'शतरंज के मोहरे' नागर का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें उन्होंने सन् १८५७ की क्रान्ति से पहले के अवध का यथार्थ एवं कलात्मक चित्र प्रस्तुत किया है। नवाबों के अत्याचारों, भोग-विलास, अंग्रेज़ों की कुटनीति, जातीय संघर्ष आदि का वातावरण चित्रित है। उपन्यास के आरंभ में नवाबी अत्याचारों का जीवन्त चित्रण हुआ है। समाज में हिन्दू-मुसलमान का भेदभाव तो था। पर मुसलमान हिन्दू लडकियों से विवाह कर लेते थे। नवाब के शासन के समय उस समय की सामाजिक स्थितियाँ, समाज का चारित्रिक पतन आदि का मूर्तरूप इसमें हम देख सकते हैं। नागर ने इसमें इतिहास और कल्पना का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है। वे ऐतिहासिक यथार्थ के प्रति सजग हैं।

सुहाग के नूपुर उनका दूसरा ऐतिहासिक उपन्यास है। इसकी कथा का आधार महाकवी इलंगोवन कृत तमिल महाकाव्य चिलप्पतिकारम है। इस महाकाव्य पर आधारित होकर भी उपन्यासकार के अनुसार यह एक स्वतन्त्र रचना है। इसमें इतिहास को उन्होंने केवल ऐतिहासिक दृष्टि से नहीं परखा, बल्कि समाज शास्त्रीय और साहित्यपरक दृष्टिकोण से उसका अध्ययन किया। इसमें एक त्रिकोण प्रेम के माध्यम से कथा आगे बढती है। प्रेमकथा के साथ ही सामाजिक समस्यायें, राजनीतिक संघर्ष, सांस्कृतिक पक्ष आदि का सांगोपांग चित्रण किया गया है। इसके प्रमुख पात्र हैं कोविलन, कन्नगी और माधवी अतीत कानीन पृष्ठभूमि होने के कारण इसे ऐतिहासिक उपन्यास कहा जा सकता है। किन्तु इसका प्रमुख विषय वेश्या समस्या जैसे सामाजिक पक्ष है।

'सात घूँघटवाला मुखडा' एक ऐसा ऐतिहासिक उपन्यास है जिसमें इतिहास में छिपा हुआ एक पात्र, बेगम समरू तथा उनसे संबन्धित ऐतिहासिक घटनाओं को कल्पना के सहारे चित्रित किया गया है। इसमें अठारहवीं सदी के अंग्रेजों और मुगलों का संघर्ष भी उभरा हुआ है।

'एकदा नैमिषराण्ये' उपन्यास के द्वारा उपन्यासकार संसार में भावात्मक एकता लाना चाहते हैं। भार्गव, नारद जैसे पौराणिक पात्रों के माध्यम से आधुनिक सामाजिक समस्यायें भी प्रस्तुत किया गया है। नैमिषारण्य में ऋषि मुनियों द्वारा चलायी गई वैचारिक क्रान्ति का उल्लेख करते हुए उपन्यासकार ने भारतीय संस्कृति का पुनरुद्धार चाहा हैं। संपूर्ण भारतीय सभ्यता और संस्कृति को एक भावात्मक सूत्र में बाँधना लेखक का उद्देश्य है।

'मानस का हंस' और 'खंजन नयन' दो इतिहास प्रसिद्ध महापुरुषों से संबन्धित उपन्यास है। पहला गोस्वामी तुलसी पर और दूसरा कृष्णभक्त कवि सूर पर

आधारित है। इन्हें जीवनी परक ऐतिहासिक उपन्यास कहा जाता है। 'मानस का हंस' में नागरजी ने प्रचलित किंवदन्तियों से तुलसी के जीवनवृन्त को उपन्यास रूप में तैयार किया है। तुलसी के जीवन के अन्तःसंघर्ष और बाह्य संघर्ष, भक्तरूप और वैयक्तिक रूप सभी का कुशल रूप में चित्रण हुआ है। नागर ने तुलसी के लोकोपकारी समन्वयवादी तथा जनकल्याणकारी रूप का भी चित्र खींच लिया है।

'मानस का हंस' में जिस प्रकार तुलसी की जीवनी प्रस्तुत है उसी प्रकार खंजन नयन में सूरदास की जीवनी का समावेश हुआ है। सूर के बाल्य, यौवन और अन्त तक के जीवन की, सूरके गुरुओं की व्यक्तिजीवन की, काम और भक्ति की सुन्दर अभिव्यंजना खंजननयन में हुई है 'करवट' और 'पीढियाँ' उपन्यासों में आधुनिक भारतीय इतिहास की झलक दिखाई पडती है। 'करवट' में सन् १८५४ से सन् १९०२ तक की भारतीय सामाजिक राजनैतिक तथा धार्मिक परिस्थितियाँ अंकित की गई है। 'पीढियाँ' में १९०५ ई. से १९८६ तक की अनेक ऐतिहासिक घटनाओं तथा व्यक्तियों पर प्रकाश डाला गया है।

नागर के सामाजिक उपन्यासों में प्रथम उपन्यास है 'महाकाल।' इसके नवीन संस्करण को 'भूख' नाम दिया है, इसमें १९४३ के बंगाल के भीषण अकाल का यथार्थ, प्रामाणिक तथा जीवन्त चित्र प्रस्तुत है। भूख से पीडित व्यक्ति समाज में अनैतिक और अमानवीय कार्य करने के लिए विवश हो जाता है, इस सत्य की घोषणा उपन्यास में मिलती है। इसके तीन पात्र प्रमुख हैं - पाँचु गोपाल जो उपन्यासकार के विचारों को व्यक्त करता है, अन्य दो चरित्र जमीन्दार दयाल और बनिया मोनाई शोषक वर्ग के प्रतिनिधि हैं। पाँचू गोपाल आदर्श निष्ठ व्यक्ति होकर भी भूख के कारण चोरी करता है। यह नागर का सबसे प्रमुख उपन्यास है।

व्यक्ति और समाज के मूल्यों की समन्वयात्मक दृष्टि 'बूँद और समुद्र' में देखी जा सकती है। इसका नामकरण प्रतीकात्मक है। बूँद व्यक्ति का प्रतीक है और समुद्र समष्टि का। व्यष्टि तथा समष्टि के समन्वय की समस्या उपन्यास का विषय है। नागरजी का मत है कि समाज और व्यक्ति की एकता में ही दोनों का कल्याण है। वे बूँदों के अस्तित्व से ही सागरका अस्तित्व स्वीकार करते हैं। इसलिए हर एक बूँद मुल्यवान है, उसे व्यर्थ नहीं होने देना चाहिए।

अपने सामाजिक उपन्यासों के द्वारा अनेक सामाजिक समस्याओं को भी नागर ने प्रस्तुत किया है। अमृत और विष में विधवा-विवाह तथा अन्तर्जातीय विवाह को विषय बनाया गया है। समाज की दुर्बलताओं और परम्पराओं का विश्लेषण कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने स्वयं इसे समाज का सप्त आयामी दर्पण कहा है।

'नाच्यो बहुत गोपाल' नगरीय जीवन की गाथा प्रस्तुत करनेवाला उपन्यास है। इसमें एक ओर उपन्यासकार मेहतर समाज के समग्र चित्र प्रस्तुत करता है, साथ ही निगुनिया के चरित्र के माध्यम से काम एव प्रेम द्वन्द्व की प्रस्तुति भी होती है। नागर ने इस उपन्यास में सतीत्व काम एवं प्रेम का संघर्ष दिखाया है। यह उपन्यास दलित चेतना की दृष्टि से विचारणीय है।

'सेठ बाँकमेल' में जिन्दगी के यथार्थ चित्रण की अपेक्षा हास्य और व्यंग्य की धुरी निहित है। इसमें दो मित्रों की एक साथ गुजरी ज़िन्दगी के कुछ प्रसंगों का वर्णन है। हास्य-व्यंग्य के माध्यम से उन्होंने सामन्तवादी युग के सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को उद्‌घाटित किया है। इसके अलावा इस उपन्यास में सामाजिक परिवर्तन के कारण जिन मूल्यो की प्रतिष्ठा हुई है उनकी ओर भी संकेत है। सेठ बाँकेमल पुराने मूल्यों का समर्थन करता है, साथ ही नये मूल्यों की निन्दा भी।

'बिखरे तिनके' में भी अन्तर्जातीय विवाह विषय है। युवा वर्ग अन्तर्जातीय विवाह का पक्षधर है। लेकिन ऐसे विवाहों में भी गुण और दोष, दोनों है। उपन्यास में इसका विश्लेषण मिलता है। अनमेल विवाह, दहेज प्रथा तथा नारी पर पुरुष का अत्याचार जैसी समस्याओं को उद्‌घाटित करनेवाला उपन्यास है 'अग्निगर्भा।' दहेज प्रथा के विरुद्ध यहाँ आवाज बुलंद है। 'अग्निगर्भा' के द्वारा नागर ने कपटता का अनावरण करते है। इस उपन्यास का लक्ष्य भारतीय समाज में दहेज और नारी दमन के अन्य कपट निकृष्ट रूपों पर प्रकाश डालना और उनके विरोध में जन शक्ति जगाना है।

अपने उपन्यासों के माध्यम से नागर ने संस्कृति और सामाजिक जीवन का सच्चा चित्र प्रस्तुत किया और समाज में व्याप्त अनीतियों तथा अन्धविश्वासों का विरोध भी किया है। इस उद्देश्य के लिए कभी उन्होंने आधुनिक परिवेश को माध्यम बना है, कभी ऐतिहासिक या पौराणिक परिवेश को। उनका आत्यंतिक दृष्टिकोण मानवतावादी है।

अन्य आयाम

उपन्यास और कहानी के अतिरिक्त नाटक, संस्मरण रेखाचित्र बालसाहित्य व्यंग्य प्रहसन और अनुवाद आदि पर भी नागर का असामान्य अधिकार है।

बालसाहित्य :- बच्चों के साथ खेलना, बातों करना आदि नागर का प्रिय कार्य रहा था। उन्होंने अपने कथा साहित्य में बाल-मनोविज्ञान पर भी लेखनी चलाई है। 'बेबी की प्रेम कहानी' बाल-मनोविज्ञान का उदाहरण है। हास्य-व्यंग्य गप्पों का विशिष्ट संग्रह बच्चों और बडों के लिए समान रूप से मनोरंजक है। बजरंगी पहलवान की कहानियों में मनोरंजन के लिए फान्टसी का भी सुन्दर प्रयोग हुआ है। प्राचीन भारतीय वातावरण से संबन्ध इन कहानियों बजरंगी पहलबान के साहसिक और नौरंगी स्वामी के

चमत्कार से बच्चों को आकर्षित किया है। नागरजी की कल्पना ने प्राचीन और नवीन युग का अद्‌भुत सम्मिश्रण किया है। इन कहानियों के अलावा महाभारत के बृहत्‌रूप से बच्चों के लिए एक लघु रूप 'बाल महाभारत' तैयार किया है।

नाटक :- अन्य साहित्य विधाओं के साथ नाटक पर भी नागर ने अपना कैशल प्रकट किया है। उनका नाटक है 'युगावतार' जो भारतेन्दु के व्यक्तित्व का चित्रण है। यह तीन अंकों का लघु नाटक है। इसके अलावा उनका एक प्रहसन संग्रह - 'बात की बात' भी प्रकाशित हुआ है।

रेखाचित्र तथा संस्मरण :- 'नवाबी मसनद' हास्य और खुश गप्पियों का आधार है। संस्मरण के अन्तर्गत जिनके साथ जिया आता है। संस्मरण अतीत से चुडकर वर्तमान की कहानी बुनता है। नागर के जीवन काल में जिन जिन महान व्यक्तियों ने उन्हें प्रभावित किया है सभी का स्मरण मूर्तवत् रूप से इस संस्मरण के अन्तर्गत किया गया है। प्रसाद, पन्त निराला, महादेवी, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा जैसे व्यक्तियों के रोचक और निजत्वबोधक संस्मरण नागर की इस कृति में मिलते हैं।

इन सबके अलावा नागर ने अनुवाद कार्य भी किया है। मराठी यात्रावृत्तान्त 'माझाप्रवास' का अनुवाद 'आँखों देखा गदर' नाम से, गुस्ताव फ्लांवेयर का उपन्यास 'मादामबावेरी' का अनुवाद आदि उनका प्रमुख अनुवाद कार्य है।

निष्कर्ष

हिन्दी ऐतिहासिक उपन्यासों की परम्परा के अध्ययन से यह विदित होता है कि भारतीय इतिहास की गरिमा बढाने में इन उपन्यासों का योगदान बहुत बडा है। ऐतिहासिक उपन्यास की प्रारंभ दशा में इनकी रचना मात्र इतिहास पर दृष्टि डालकर

की गयी थी तो आधुनिक काल तक आकर उपन्यासकारों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आ गया है। आधुनिक ऐतिहासिक उपन्यासकार वर्तमान पर पैर रखकर ही अतीत की ओर देखते हैं। आजकल के ऐतिहासिक उपन्यास केवल इतिहास तक सीमित न रहकर सामाजिक और सांस्कृतिक पक्षों को भी उजागर करते हैं। ऐतिहासिक परिवेश पर आधुनिक समस्याओं को प्रस्तुत करनेवाले उपन्यासों की संख्या बहुत मिलती है।

हिन्दी साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यास की परम्परा आज समृद्ध है। इस अजस्र धारा के उपन्यासकारों ने अतीत की खूबियों को प्रकाश में लाकर उसे आत्मसात करने की प्रेरणा हमें प्रदान की है। हमारी सांस्कृतिक विरासत से परिचय करानेवाले इन उपनयासकारों में प्रमुख है अमृतलाल नागर।

अध्याय २

नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास बोध

उपन्यास का आधार बिन्दु सदैव मानव जीवन के यथार्थपरक चित्रण पर केन्द्रित रहता है। सामाजिक उपन्यास की अपेक्षा ऐतिहासिक उपन्यास की विशेषता यह है कि इसमें ऐतिहासिक यथार्थ की प्रस्तुति होती है। ऐतिहासिक यथार्थ से तात्पर्य मात्र अतीत-वर्णन नहीं, बल्कि अतीत और वर्तमान को एक सूत्र में बाँधकर प्रस्तुत करना भी है। इसके अन्तर्गत अतीत की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का अंकन होता है।

ऐतिहासिक उपन्यास की ऐतिहासिकता उसके पात्र, कथानक, वातावरण या घटनाओं पर निर्भर रहती है। इनके सहारे उपन्यासकार अतीत को वर्तमान का स्वरूप देकर प्रस्तुत करता है। कभी इन उपन्यासों के मुख्य पात्र इतिहास पुरुषों में से हो होते हैं और कभी मुख्यघटनायें या उपन्यास की पृष्ठभूमि इतिहास सम्मत होती है। अमृतलाल नागर के आठों ऐतिहासिक उपन्यासों में इन तत्त्वों का पालन किया गया है। जैसे कि 'मानस का हंस' तथा 'खंजननयन' अपने केन्द्र पात्र इतिहास पुरुष होने के कारण ऐतिहासिक उपन्यास का दर्जा पा लेते हैं। 'शतरंज के मोहरे' तथा 'सात घूंघटवाला मुखडा' भी अपने इतिहासाधारित पात्रों से ऐतिहासिक बन गये हैं। 'एकदा

नैमिषारण्ये' तथा 'सुहाग के नूपुर' की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है। 'करवट' तथा 'पीढियाँ' ऐतिहासिक वातावरण पर रचे गये उपन्यास हैं। इन उपन्यासों में निहित इतिहास बोध को परखने के लिए प्रत्येक उपन्यास के पात्र, घटनायें तथा वातावरण का विश्लेषण आवश्यक है। भाषा एवं संवाद भी उपन्यास के ऐतिहासिक पक्ष को सशक्त करने में सहायक हैं।

शतरंज के मोहरे

'शतरंज के मोहरे' नागरजी का पहला ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें अवध राज्य के राजनैतिक तथा सामाजिक वातावरण का चित्रण हुआ है जिससे उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध काल का सजीव चित्र पाठक के सामने आ जाता है। अवध में उस समय नवाबी शासन चल रहा था। नवाबी संस्कृति का यथार्थ चित्र इस उपनयास में व्यक्त किया गया है। इसमें अवध के दो नवाबी शासक ग़ाज़ीउद्दीन हैदर तथा पुत्र नसीरुद्दीन हैदर की शासन प्रणालियाँ, तद्‌युगीन सामाजिक तथा पारिवारिक अन्तर्संघर्ष, महल के अन्दर सत्तामोह के प्रति चलनेवाले दाँव-पेंच आदि पर भी प्रकाश डाला गया है। नागरजी ने प्रेमचन्द की कहानी 'शतरंज के खिलाडी' से प्रेरणा पाकर इस उपन्यास की रचना की थी। दोनों का मूल विषय अवध का नवाबी ज़माना है।

इस उपन्यास का कथानक ऐतिहासिक गुणों से युक्त है। उपन्यास की घटनाओं का काल सन् १८२० से सन् १८३७ तक है। नवाब गाजीउद्दीन के समय से उपन्यास आरंभ होता है। उन्हें अपनी विवाहिता पत्नी में कोई औलाद नहीं था। उनकी बेगम बडी विलासप्रिय तथा सत्ता मोही थी। वह पति को अपने इच्छानुसार चलाना चाहती थी। अपनी गोद से कोई औलाद न होने के कारण वह नवाव की एक दासी में जन्मे पुत्र को अपना बनाकर पालने लगी। उस दासी को वह मार भी डालती है। इस

बच्चे नसीरुद्दीन को बेगाम अपने इच्छानुसार चलनेवाली एक पुतली बनाकर पाला-पोसा। बडे होने पर उसे शराब और स्त्रियों के नशे में उन्होंने बाँध रखा। इस प्रकार उसे निकम्मा बनाकर बेगम ने राजमाता के पद का दुरुपयोग किया। नसीरुद्दीन का उत्तराधिकारी भी एक दासी-पुत्र था। इसके लिए बेगाम ने ही एक बाँदी 'सुखचैन' को नसीरुद्दीन के साथ रखा औरउसके बच्चे को अगला नवाब घोषित किया। इस बच्चे- 'मुन्नाजान' - को भी बादशाह बेगम ने अपने इच्छानुसार चलनेवाला एक मोहरा बनाना चाहा। उसकी परवरिश के लिए दुलारी नामक घाय को रख गया। दुलारी भी बेगम की तरह पद मोही थी। उसने नवाब नसीरुद्दीन को अपने वश में करके अपने पहले विवाह के पुत्र कैवांजाह को अगला नवाब बनाने की कोशिश की। बादशाह बेगम की तरह दुलारी भीशासन हथियाने के बाद पति की ओर ध्यान नहीं देती। इसलिए नवाब अन्य स्त्रीयों की ओर आकृष्ट हुआ। एक बाँदी विस्मिलाह बानू जिसने उसे सच्चे दिल से प्यार किया वह नवाब से गर्भवती भी बन जाती है। पर नवाब के शंकालु चरित्र के कारण उसने आत्महत्या कर ली। अपनी प्रेमिका की मृत्यु से नवाब बावला बन गया। जिन अंग्रेजों ने पहले ही अवध पर अधिकार जमाना चाहा था उन्होंने इस हाल का फायदा उठाया। उन्होंने नवाब को मार डाला और अवध पर अपना राज शुरु किया।

प्रस्तुत उपन्यास में इतिहास और कल्पना की समान भूमिकायें होती हैं। ऐतिहासिक पात्रों और वातावरण को मनोरंजकता प्रदान करने के लिए आवश्यक कल्पना की प्रस्तुति इसमें की गयी है। प्रमुख पात्र लखनउ के दोनों नवाबों-गाज़ीउद्दीन हैदर तथा नसीरुद्दीन हैदर - का इतिवृत्त इतिहास द्वारा अनुमोदित है। उनके सारे क्रिया-कलाप, बादशाह बेगम तथा आगामीर के संघर्ष, नवाबों का बिलासपूर्ण जीवन, निर्वीर्यता, राजमहल के आन्तरिक कुचक्र, अंग्रेज़ों का आधिपत्य आदि घटनायें भी ऐतिहासिक रूप से प्रामाणिक हैं। अवध तथा समीप प्रदेशों का सामाजिक विवरण भी

इतिहासानुकूल किया गया है। सामाजिक जीवन में व्याप्त अराजकता तथा अनैतिकता को भी इस उपन्यास में उभारा गया है।

'शतरंज के मोहरे' की पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए नागरजी ने अवध के अनेक जिलों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अध्ययन किया है। उन्होंने अपनी शोध-रचना 'गदर के फूल' के लिए जो विपुल सामग्री संग्रह की थी उसका भी उपयोग इस उपन्यास के लिए किया है। नागरजी के इतिहास प्रेम की एक विशिष्टता इसमें है कि उन्होंने ऐतिहासिक तथ्यों, घटनाओं, चरित्रों तथा राजा-नवाबों के जीवन को महत्व देते हुए भी आम जनता के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन पर भी उचित ध्यान दिया है। उपन्यास का नामकरण कथासूत्र तथा पात्रों के चरित्र से परिचित कराता है। कथा के अध्ययन से यह पता चलता है कि इसके सभी पात्र किसी न किसी तरह शतरंज के मोहरे मात्र है। नवाब, अंग्रेजों तथा सत्ता मोही अनुचरों के इशारे पर चलते हैं।

महल के दास-दासियाँ नवाबों और बेगमों के हाथ की कठपुतलियाँ हैं। दासियाँ शासकों की विलसिता का उपकरण रह गयीं हैं। कभी कभी ऐसा भी होता है कि उनके जीवन भी महलों के अन्तर्नाटकों में नष्ट हो जाते हैं। और अगर वे नवाबों के प्रेम पात्र बन गयी तो नवाबों की बेगम तक बन जाती है।

तद्‌युगीन किसान और मज़दूरों की दशा भी बहुत दयनीय थी। नवाब की सेना की उच्छुंखलता आम जनता का जीवन खराब कर देती थी। जब भी सेना गाँव में कदम रखती वहाँ के किसानों को नुकसान पहूँचाती थी और गाँव की स्त्रियों पर भी वे आक्रमण करती थी। इसके अलावा किसानों से बडे रकम का कर भी वे वसूल कर लेती थीं। इस अनीतिपूर्ण सामाजिक व्यवस्था से तंग आकर लोग कभी कभी विद्रोह भी करने लगे थे। देश की इस दुर्बल स्थिति से अंग्रेज़ों ने फायदा उठाया।

नवाब शासन के समय अवध के धार्मिक जीवन में समन्वयकारी दृष्टि देखी जा सकती है। नवाब लोगों का धार्मिक विचार बहुत उदार था। उपन्यास में बेगम बादशाह हिन्दुधर्म पर आस्ता प्रकट करती है। यद्यपि बेगम कट्टर शिया थी, उसे हिन्दु संस्कृति के प्रति आकर्षण था। हिन्दुओं की जन्माष्टमी की तरह उन्होंने इमाम मेंहदी की 'छठी' मनाना प्रारंभ किया गया। उन्होंने अपने महल में इस्लाम संगठन के बारह हमामों के रौजे बनवाये जिन्हें 'रौजा-ए-दोवाज्दा इमाम' कहा जाता था।[1] हिन्दु मन्दिरों में देवता को अर्पित देवदासियों की भाँति हर इमाम के लिए एक-एक पत्नी को भी उन्होंने अर्पित किया था। इन इमाम पत्नियों को 'अछूती' कहा जाता था। नवाब भी धार्मिक उत्सवों में बडे उत्साह से भाग लेते थे। मुहर्रम के दिन हज़रत अली और उनकी पत्नी हज़रत फातिम के पुतले को लेकर उनका निकाह रचाने की प्रथा भी उस समय बेगम ने शुरू की थी। इन परम्परा विरुद्ध प्रवृत्तियों ने इस्लाम धर्म की संस्कृति को पतनोन्मुख कर दिया था।

इन सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक परिस्थितियों के ऐतिहासिक वर्णन के साथ साथ नवाब जैसे इतिहास सम्मत पात्रों के चित्रण ने भी उपन्यास को गंभीरता प्रदान की है। प्रधान ऐतिहासिक पात्रों में गाज़ीउद्दीन हैदर, नसीरुद्दीन हैदर, आगामीर, मुन्नाजान कैवांजाह, हकीम मेंहदी आदि पुरुष पात्र तथा बादशाह बेगम, दुलारी, कुदसिया बेगम आदि नारी पात्र आ जाते है।[2] इनमें दोनों नवाब के चरित्र की अधिक विवरण उपन्यास में मिलता हैं। नवाबी जीवन की विलासिता तथा पतनोन्मुख जीवन के प्रतिनिधि पात्र है गाजी उद्दीन हैदर तथा नसीरुद्दीन हैदर।

---

1. अमृतलाल नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 44
2. डॉ. सत्यपाल चुघ, ऐतिहासिक उपन्यास, पृ - 269

परिस्थितिवश ये नवाब लोग इस विलासिता के प्रवाह में बहते जा रहे हैं। चाहने पर भी वे बच नहीं पाते हैं। गाजीउद्दीन तथा नसीरुद्दीन, दोनों के जीवन में ऐसी विवशता दिखाई पडती है। अपने पोते को लेकर जो अपवाद फैलता है उससे दुःखी होकर गाज़ीउद्दीन हैदर अपनी दासी से कहते हैं - "शरीफ इन्सान दुनिया में सबसे ज्यादा अपनी बे आबारुई से डरता है।"[1] ऐसी एक विवशता नसीरुद्दीन के जीवन में भी पायी जाती है। देश के हर कार्य में अंग्रेज़ों का हस्तक्षेप नवाब को खलता है। वे कहते हैं - "हम सचमुच बादशाह होना चाहते हैं। .....हम अंग्रेज़ों की शतरंज के बादशाह हैं। हम उसकी चाल पर चलते है। मुझे यह खलता है बेहत खलता है।"[1] मद्य या प्रेमिकाओं के नशे में यह आवेश थम जाता है। यही उनकी पराजय भी है। इन ऐतिहासिक पात्रों के द्वारा भारत के इतिहास की मुख्य घटना - अंग्रेज़ों के आधिपत्य - के कारणों को भी स्पष्ट किया गया है। शासकों की विलासपूर्ण उच्छृंखलित जीवन तथा आपसी संघर्ष ने विदेशियों के लिए उचित वातावरण की सृष्टी की। नवाब नसीरुद्दीन हैदर अंग्रेज़ों की कुटनीति का शिकार बन गये। अंग्रेज़ों की प्रेरणा से नवाब की दासी उन्हें ज़हर पिलाकर मार देती है। अंग्रेज़ों के ही इच्छानुसार बूढे नवाब नसीरुद्दौला मुहम्मद अली को उत्तराधिकारी नियुक्त किया गया ताकि जल्द से जल्द अवध राज्य उनके हाथों में आ जाये।

नवाबों के जीवन में स्त्रियों का प्रभाव बहुत सशक्त है। बादशाह बेगाम, दुलारी तथा कुद कुदसिया बेगम जैसी नारीयाँ नवाबों की ज़िन्दगी को नये मोड पर ले जाती हैं। बादशाह बेगम गाज़ीउद्दीन हैदर की विवाहिता पत्नी है। पर सत्तामोह तथा अहंकार युक्त बेगाम नवाब को कभी भी शान्ती नहीं दे पाती। इससे नवाब की मृत्यु

---

1. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 42
2. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 149

भी हुई। दुलारी तथा कुदसिया नवाब नसीरुद्दीन की प्रेमिकायें हैं। दुलारी भी बादशाह बेगम की भांति सत्तामोह से नवाब का जीवन असंतुष्ट बना देती है। कुतसिया बेगम नवाब नसीरुदीन को सच्चे दिल से प्यार करती है। पर नवाब का शंकालु चरित्र उसे आत्महत्या करने को बाध्य करता है। इन नारी पात्रों के चित्रण से नवाबी संस्कृति के ह्रास में नारियों का क्या स्थान था यह व्यक्त हो जाता है। तथापि कुदसिया जैसा पात्र आत्मसम्मान युक्त नारियों का प्रतिनिधित्व भी करती है।

ऐतिहासिक वातावरण की सृष्टि करने मे कभी-कभी काल्पनिक पात्रों की सहायता भी उपन्यासकार ने ले लिया है। ब्रह्मचारी के मुंह से तत्कालीन परिस्थिति का चित्र पाठक को मिलता है- "नवाब आसुफुद्दौला ने इमारतें बनवाने और अपने दरबार को दुनिया के राजदरबारों में सबसे अधिक शानदार बनाने के स्वत्त में अवध की प्रजा का करोंड रुपया फुंका। अंग्रेज़ों ने तभी से अवध पर अपने दाँत गड़ा लिए। आए दिन अवध दरबार से रुपयों की माँग होने लगी। नवाबों को अपनी विलासिता और शान दिखाने के लिए रुपयों की आवश्यकता थी, नवाबी दरबार के अफसरों-कारिंदों को लूट और रिश्वत की आवश्यकता थी, अंग्रेज़ों को तो हड़पने की हवस थी ही - इन सब बडे लुटेरों से आए दिन दबाई जाकर अवध की प्रजा हर तरह से त्रस्त हो उठी थी..."[1] इस प्रकार अवधराज्य के ह्रास के चित्रण से संपूर्ण भारत पर विदेशी शासन लागू होने का चित्र खींचना उपन्यासकार का लक्ष्य है।

इन ऐतिहासिक घटनाओं तथा पात्रों के माध्यम से गदर पूर्वकालीन अवध के ऐतिहासिक चित्रण में उपन्यासकार सफल हुए हैं। उचित ऐतिहासिक वातावरण की सृष्टि भी हुई है। इतिहास सम्मत घटनाओं को अंकित करते समय प्रामाणिकता सिद्ध

---

1. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 71

करने के लिए तिथियाँ भी जोडी गयी हैं। नवाब गाजीउद्दीन के स्थानारोहण की तिथि सन १८१८ ई[1] मे और उनकी मृत्यु की तिथि २० अक्तूबर सन १८२७ ई. में कहा गया है। नवाब गाजीउद्दीन की मृत्यु के दिन ही पुत्र नसीरुद्दीन को अवध का शासक पद प्राप्त हुआ।[2] उपन्यास में इस बात का जिक्र हुआ है। बादशाह बेगम को शाही सेना द्वारा बन्दी बनाने की घटना भी तिथि के साथ प्रस्तुत किया गया है - "अप्रैल सन १८३५ ई. के दिन शाही सेना ने बादशाह बेगम की कोठी को चारों और से घेर लिया।"[3] नसीरुद्दीन की मृत्यु जुलाई १८३७ ई. को दिखायी गयी है। उपन्यास की कालगणना को निर्धारित और प्रामाणित करने के लिए कथान्त में प्रस्तुत वाक्य है "यह गदर के बीस वर्ष पहले की बात है।"[4] इस वाक्य से और एक बात भी व्यक्त होती है कि गदर की पूर्वपीठीक के रूप में इस उपन्यास को प्रस्तुत करना उपन्यासकार का लक्ष्य है।

उपन्यास में वातावरण की सजीवता और क्लिष्टता के लिए अन्तरंग और बहिरंग पद्धतियों को अपनाया गया है। अवध की मुश्लिम जनता के आचार-व्यवहार, समाज-संस्कृति, शाही घराने की वेश-भूषा, मनोरंजन, अंग्रेज़ी अफसरों तथा वजीरों के कुचक्रों आदि के विशद वर्णन से नागरजी ने परिवेश को जीवंत बना दिया है। वातावरण का जीवन्त चित्रण उपन्यास के प्रारंभ में मिलता है - "काले - भूरे बादलो के घनघोर घेराव से आकाश घुट रहा था, धरती पर उसकी मनहूसियत फैल रही थी, नाजिमी सेनाओं की आहट में से गाँव की हवा तक को सौप सूँघ गया था।"[5]

1. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 55
2. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 131
3. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 231
4. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 231
5. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 2

संवाद योजना भी पात्रों की मनः स्थिति तथा अन्तर्संघर्ष व्यक्त करने में सफल है। बादशाह नसीरुद्दीन और दुलारी के बीच का यह संवाद इसका उदाहरण है :-

'हम सचमुच बादशाह होना चाहते हैं।

'जमाना हजूर के कदमों में सिर झकाता है, बादशाहत और किसे कहते है?'

"बहलाओं मत जानेमन हम अंग्रज़ों की शतरंज के बादसाह है। हम उसकी चाल पर चलते हैं। मुझे यह खलता है, बेहद खलता है।"[1]

पात्रानुकूल भाषा भी उपन्यास को प्रभावी बना देती है। अवध के मुश्लिम समाज में प्रचलित भाषा का चित्रण अधिक हुआ है। जैसे - 'नाहक की रार बढा रहो हो बरसुरदार, किसी ने तुम्हारे दिल को बदगुमा कर दिया है।' भाषा को प्रवाहमान तथा प्रभावपूर्ण बनाने के लिए उस युग के अनुकूल मुहावरों और कहावतों का भी प्रयोग किया गया है - 'सूप बोले तो बोले, चलनी क्या बोले जिसमं बहतर छेद', 'तवे पर रोटी सिकी सबने खायी तवा कितना जाला ये कौन देखता है' आदि इसका उदाहरण हैं।

उपन्यास की पृष्ठभूमि नवाबी संस्कृति होने के कारण आरबी-फारसी भाषा की शब्दावली भी खुब मिलती है - अर्जी लगानी है तो सबसे बडे दरबार में पेश करो - अपनी भी, ...मुझ पर रहम कर ....रहम ....रहम। गाँवारों की भाषा मे आचलिकता का पुट है। व्यावस्थित एवं परिमार्जित भाषा के प्रयोग से नागारजी ने अपने उपन्यास को ऐतिहासिक दृष्टि से सफल बनाया है। प्रस्तुत उपन्यास शतरंज के मोहरे में जीवन्त पात्रों, सजीव ऐतिहासिक वातावरण तथा क्लिष्ट भाषा का सुन्दर समन्वय हुआ है। यही समन्वय उपन्यास को उच्चकोटि का ऐतिहासिक उपन्यास बना देता है।

---

1. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 234

सुहाग के नूपुर

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधृत प्रस्तुत उपन्यास की कथा का आधार तमिल महाकाव्य 'चिलप्पतिकारम' है। नागारजी का ऐतिहासिक प्रेम केवल उत्तर भारत में सीमित नहीं, दक्षिण भारत में भी उनकी दृष्टि पहूँची है इसका उदाहरण है 'सुहाग' के नूपुर। इतिहास को उन्होंने केवल ऐतिहासिक दृष्टि से नहीं देखा - परखा, बल्कि समाज शास्त्रीय और साहित्यपरक दृष्टिकोण से उसका अध्ययन किया। यह उपन्यास उनके उपयुक्त दृष्टिकोण पर अधिष्ठित उपन्यास है। उपन्यासकार ने प्रचलित कथावस्तु को वैसे ही ग्रहण न करके अपने दृष्टिकोण के अनुरूप उसे नया रूप देने का प्रयास किया है। लेखक के शब्दों में "प्रस्तुत उपन्यास उक्त महाकाव्य की कथावस्तु पर आधारित होते हुए भी प्रायः एक स्वतन्त्र रचना है।"[1] तमिलनाडु के कावेरीपट्टणम का सामाजिक तथा सांस्कृतिक चित्रण इस उपन्यास की पृष्ठभूमि है।चोल शासन के समय दक्षिण भारत में समुद्री व्यापार की उन्नति संभव हुई। उस समय भारत का व्यापार संबन्ध अरब देशों, मिस्र, रोम, अरमेनिया जैसे विदेशों के साथ चलता था। इसका चित्रण भी उपन्यास में मिलता है।

उपन्यास की मुख्य घटनायें तमिलनाडु के कावेरीपट्टणम और मथुरा नामक स्थानों में घटित होती है। कावेरीपट्टणम उस समय दक्षिण भारत के प्रमुख नगरों में एक था। व्यापार और धनवैभव के कारण उसका यश सुदूर तक फैला हुआ था। व्यापार प्रमुखों को राजा के समान प्रतिष्ठा प्राप्त थी। उस समय समाज में कुलवधुओं के समान नगरवधुओं की भी प्रतिष्ठा रही थी। वहाँ यह आम बात थी कि धनी लोग अपनी विवाहिता पत्नी के साथ एक नगरवधु को भी रखते थे। यह तो खुले रूप से

---

1. नागर, सुहाग के नूपुर, निवेदनम

चलनेवाली बात थी। लेकिन कुलवधु को समाज में जो गैरव प्राप्त था वह नगरवधु को नहीं मिलता था। प्रतिवर्ष वहाँ नगरवधुओं में एक ऐसी प्रतियोगिता चलती थी कि जिसके आधार पर एक श्रेष्ठ नर्तकी को राजा द्वारा सम्मानित किया जाता था। उस समाज में नगरवधुओं की प्रमुखता इन बातों से स्पष्ट होती है। इन सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन नागरजी ने अपने उपन्यास में प्रस्तुत किया है।

उपन्यास का कथानक मुख्य रूप से तीन पात्रों में सीमित है, वे हैं कोवलन, कन्नगी तथा माधवी। कोवलन और कन्नगी कावेरीपहणम के दो प्रमुख व्यापारियों के यथाक्रम मासात्तुवान तथा मानाइहन की इकलौती सन्तानें हैं। उन दोनों की शादी से दोनों व्यापार क्षेत्रों का अधिकार केवलन को प्राप्त होता है। कोवलन एक नगरवधु माधवी पर मुग्ध होकर अपनी सारी धन-संपत्ति नष्ट कर देता है। माधवी कन्नगी की तरह कुलवधू की प्रतिष्ठा अपनाने का बहुत प्रयास करती है। पर कोवलन उसे केवल नगरवधू ही देखना चाहता है और उसमें जो बेटी बैदा हुई उसे अपनाना भी वह नहीं चाहता। इसी से माधवी रूठ जाती है। कोवलन से सारा धन अपनाकर वह उसे छोडकर एक राजसैनिक से प्रेम संबन्ध जोडती है। तब कोवलन अपनी पत्नी के पास लौट आता है। जिसकी अभी तक उपेक्षा उसने की थी। कन्नगी उसे सान्त्वना देती है और नया जीवन शुरू करने में साथ देती है। दोनों मधुरा चले जाते हैं। वहाँ कन्नगी के नूपुरों को बेचने के लिए निकले कोवलन को चोर समझकर राजसैनिक पकडते हैं और राजा उसे मृत्युदण्ड की सजा देते हैं। वहाँ भी कलगी उसकी रक्षा करती है। उसके उचित व्यवहार तथा सतीत्व को देखकर राजा भी प्रसन्न होते हैं और उनकी सहायता, से कोविलन-कन्नगी नया जीवन शुरु करते हैं।

'सुहाग के नूपुर' के द्वारा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में तत्कालीन सामाजिक समस्याओं का अंकन करना नागरजी का लक्ष्य है। डॉ. सत्यपाल चुघ के अनुसार यह उपन्यास अतीतकालीन पृष्ठभूमि पर आधारित होने के कारण ऐतिहासिक उपन्यास कहाजा सकता है, किन्तु इसका प्रतिपाद्य सामाजिक है।[1] इसमें घटनाएँ और पात्र ऐतिहासिक से ज्यादा काल्पनिक ही हैं। वातावरण भाषा आदि में इतिहास की झलक मात्र देखी जा सकती है। उस समय के कुछ रीति-रिवाज का चित्रण जो हुआ है, उनमें ऐतिहासिकता का आरोप किया जा सकता है। किसी अतीत कालखण्ड या घटना विसेष का चित्रण उपन्यासकार का लक्ष्य नहीं है। वेश्या समस्या जैसी सामाजिक समस्या का उद्घाटन नागरजी का उद्देश्य है। प्रस्तुत कथा इसके लिए एक पृष्ठभूमि तैयार करती हैं। कावेरीपट्टणम के वैभव का चित्रण नागर के उपन्यास में मिलता है। वहाँ के राजकीय समारोह, लोगों के आचार-व्यवहार, विदेशों के साथ व्यापार संबन्ध आदि का व्यक्त चित्रण इसमें हुआ है। इसके साथ उपन्यास में उस समय होनेवाली नृत्य प्रतियोगिता - 'कामदेव का धनुष' का विशद वर्णन हुआ है। इसका उद्देश्य नगरवधुओं में से श्रेष्ठ नर्तकी को चुनकर उसे कामदेव का धनुष घोषित करना था।

देश के व्यापार संबन्धों का भी विशद वर्णन इसमें मिलता है। कावेरीपट्टणम के समर्थ व्यापारियों ने उत्तर भारत तथा भारत के बाहर भी अपना व्यापार संबन्ध स्थापित किया था। यहाँ के हीरा, मोती, शेष, स्फटिक, माणिक आदि रत्न, कालीमिर्च, दालचीनी, इलायची, शर्करा, सूती कपडे, हाथी-दाँत आदि चीज़ों का मिश्र, ग्रीस और रोम के बाज़ारों में अत्यधिक माँग थी। इन्हें लेकर दक्षिण भारत से नौकाएँ विदेश जाती थीं। उपन्यास में रोम सम्राट ऑगस्टस का उल्लेख हुआ है, जिन्होंने भारत-रोम के बीच

1. डॉ. सत्यपाल चुघ, ऐतिहासिक उपन्यास, पृ - 286

के व्यापार संबन्ध को प्रोत्साहन दिया था। भारत का इतिहास पुस्तक में रोमिल थापट ने दक्षिण भारत में समुद्री व्यापार का उल्लेख किया है। चोल के समय दक्षिण भारत में समुद्री व्यापार की उन्नति हुई। उस समय भारतीय लोग अपना व्यापार अन्य राष्ट्रों के नविकों से करते थे। रोमिला थापर कहती हैं - "चोलों का हिन्द महासागर पर चलनेवाले परिवहन व्यापार में बहुत बडा भाग था। ...साहित्यिक ग्रन्थों में तीन, पाँच या सात सौ तक यात्रियों को ले जानेवाले जलयानों की चर्चा प्रायः मिलती है। ...सर्वाधिक लाभ प्रद समुद्री व्यापार दक्षिण भारत से होनेवाला रोमन व्यापार था। यवन व्यापारियों ने सानवाहनों के राज्यों में तथा सुदूर दक्षिण के राज्यों में अपने व्यापारिक संस्थान खोल रखे थे। ....प्रारंभिक तमिल साहित्य में माल से भरे हुए यवन जलयानों के कावेरीपट्टनण पहुँचने का चित्रण है, इस नगर का वह भाग जिसमें यवनों का निवास था, समृद्धि से ओत प्रोत रहता था।"[1]

कावेरीपट्टणम चोल राजाओं की राजधानी थी। तमिलनाडु के प्रमुख राजवंश थे चोल, चेर और पाण्ड्य। पाण्ड्यों की राजधानी मधुरा थी। चोलवंश का शासन काल समृद्धि का समय था। चोलराजा कारिहर वलवन का शासन काल उपन्यास की पृष्ठभूमि है। "तमिल शासकों के इतिहास में एक चोलराजा का नाम 'कारिकला' मिलता है। महाकाव्य 'चिलप्पतिकारम' में इसी राजा का उल्लेख हुआ है। इनका समय ए.डी. १९० में था।"[2]

कावेरी नदी में बाढ आने से कावेरीपट्टणम डूब जाने की घटना उपन्यासान्त में मिलती है। इस घटना का आधार इतिहास है। शास्त्रीजी ने ऐसे एक बाढ का उल्लेख अपनी पुस्तक में किया है। पर इस बाढ के समय का ठीक पता नहीं है।[3]

---

1. रोमिला थापर, भारत का इतिहास, पृ - 48
2. के.ए. नीलकण्ठ शास्त्री, ए हिस्टरी ऑफ सौथ इन्डिया, पृ - 125
3. के.ए. नीलकण्ठ शास्त्री, ए हिस्टरी ऑफ सौथ इन्डिया, पृ - 40

इन इने गिने ऐतिहासिक घटनायें तथा पात्रों से उपन्यास में ऐतिहासिक वातावरण की सृष्टि करने में उपन्यासकार सफल हुए हैं। चोलराजा कारिहर वलवन तथा महाकवि इलंकोवन ही दो पात्र हैं जिन्हें ऐतिहासिक पात्र कहे जा सकते हैं। उपन्यास की भाषा काल, स्थान और सामाजिक स्थिति के अनुरूप है। कथा और स्थान के अनुसार बीच-बीच में तमिल शब्दों का भी प्रयोग किया गया है जैसे कलन्जु (सिक्के), वैतिले (पान), पुएल्ला (प्रियतमा), तूण्डावलक्क (लटकाए जानेवाले दीपक) आदि। इन तमिल शब्दों के प्रयोग से समय और स्थान का ऐतिहासिक प्रमाण मिल जाता है।

उपन्यास में ऐतिहासिक घटनाएँ बहुत कम हैं। फिर भी उचित भाषा, संवाद तथा वातावरण के कारण उपन्यास को ऐतिहासिक स्वरूप प्राप्त होता है।

सात घुँघटवाला मुखडा

इतिहास के एक रहस्यमय चरित्र वेगाम समरु को केन्द्रित करके रचे गये प्रस्तुत उपन्यास उपन्यासकार के ही शब्दों में "इतिहास नहीं, ऐतिहासिक चरित्रप्रधान उपन्यास है।"[1] बेगम समरु के अव्यक्त चरित्र को कल्पना की सहायता से चित्रत किया गया है। इसमें अठारह्वीं शताब्दी के अन्तिम पच्चीस वर्षों की गाथा चित्रित है। इस समय अंग्रेज़ और फ्रांसीसी शक्तियाँ मराठा साम्राज्य को नष्ट कर रहे थे। दिल्ली का मुगल सम्राट शाह आलम वृद्ध और अशक्त था। अंग्रेज़ों और नवाब मीर कासिम एवं शुजाउद्दौला के बीच संघर्ष चल रहा था। मीर कासिम की ओर से लडनेवाले एक फ्रांसीसी सैनिक वाल्टर रेनहार्ड ने अंग्रेज़ों को गहरी पराजय दी। यहाँ वाल्टर रेनहार्ड आगे सरघना जागीर का मालिक नवाब समरु के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

---

1. नागर, सात घूँघटवाला मुखडा, विज्ञप्ति

मुन्नी उर्फ दिलाराम व्यापारी बशीर खाँ की प्रेमिका थी। धनमोही बशीर ने मुन्नी को दस हज़ार अशर्फियों के लिए नवाब समरु को बेच दिया। बशीर ने दिलाराम के मन मे देश की मलिका बनने का मोह पैदा करके उसे नवाब के पास भेज दिया। दिलाराम भी शाही महल में कदम रखते ही राजनीति के प्रवाह में बहने लगी। दिलाराम से वह 'मैडम जुआना' बन गयी। वह धर्म परिवर्तन करके ईसाई बन गयी। उसने बुद्धिपूर्ण चाल से शासन का बागडोर अपने हाथों में ले लिया। 'मलिका-ए-हिन्द' पद प्राप्त करना उसका लक्ष्य था। इसके लिए उसने पति नवाब समरु तथा सैनिक टॉमस के अपने सौन्दर्य पाश में बाँधकर अपनी उगलियों पर नचायी। समरु से उसने प्रेम का नाटक किया और टॉमस के साथ उनका अवैद्य संबन्ध भी था।

जुआना के जीवन में इन दो पुरुषों के अलावा एकतीसरा पुरुष सैनिक लवसुल ने भी प्रवेश किया। इन परपुरुषों के साथ पत्नी के सबन्ध का पता नवाब समरु को मिलता है पर दुर्बलता से वे कुछ न कर सके। अकेलापन और विवशता से निराश होकर समरु ने खुदकुशी की। शासन का बागडोर पूर्ण रूप से जुआना के हाथों में आ गया। दिल्ली बादशाह को खुश करके उसने 'जेबुन्निसा' और 'दुख्तरे खास' की उपाधियाँ प्राप्त की। लवसूल और जुआना के संबन्ध ने टॉमस को क्रुद्ध कर दिया और उसने सेना को उन दोनों के विरुद्ध कर दिया। सेना के आक्रमण से बचने के लिए लवसूल ने आत्महत्या की। जुआना ने अपने पुराने जीवन पर पश्चाताप करके खुदा पर अपने को सौंप दिया। उसने नई जिन्दगी शुरू की।

उपन्यास की कथा मनोरंजक शैली में बतायी गयी है। इतिहास की झलक ने उसे गौरव भी प्रदान किया है। ऐतिहासिक पात्र वेगम समरू के द्वारा कुछ ऐतिहासिक घटनायें भी चित्रित की गई हैं। मराठों को पराजित करके आगरे की

सुबेदारी प्राप्त करना और सहारनपुर के गुलाम कादिरखाँ के आक्रमण से दिल्ली बादशाह को बचाना जैसी घटनाएँ इसका उदाहरण हैं। जैसे कि उपन्यासकार नागरजी ने स्वयं कहा है कि यह ऐतिहासिक चरित्र प्रधान उपन्यास है, इसमें घटनाओं का नहीं, चरित्रों की प्रमुखता है। मुख्य पात्रों से संबन्धित बातों में ऐतिहासिकता के अंश मिलते हैं।

मुख्य पात्र बेगम समरु के बारे में इतिहास बताता है कि उसका जन्म सन् १७५० के आस पास मेरठ में हुआ और उसका नाम 'जोआना' ही था। सौतेले भाई के द्वारा पीडित होने के कारण माँ को लेकर वह १७६० के करीब दिल्ली चली गयी। वहाँ समरु के साथपरिचय हुआ और उनके उसने विवाह किया। समरू की मृत्यु के बाद वह समरू के पल्टन की सेनापति बनती है। दिल्ली बादशाह ने भी उसकी शासन कुशलता को सराहा है और उसे जेबुलशि (नारी रत्न) की उपाधि से सम्मानित भी किया है। समरु की मृत्यु के बाद १७७३ में एक फ्रांसीसी अफसर - मोशिए-ल-भेसो से जोआना की शादी होने की बात भी इतिहास में है।[1] लेकिन पलटन के लोगों – इन दोनों के विरुद्ध विद्रोह करने लगे तो दोनों ने आत्महत्या करना चाहा। ल भेसो मर गया, जोआना को बन्दी बनाया गया। कुछ लोगों का विश्वास है कि बेगम आत्महत्या करना नहीं चाहती थी, वह ऐसा छल दिखाकर ल भेसो से छुटकारा पाना चाहती थी। वह ल भेसो से सच्चा प्यार नहीं करती थी। उसने अपने अन्त तक अपने नाम के साथ पहले पति का नाम रखा था। ल भेसो के साथ शादी करने की बात छिपा रखने के कारण लोगों ने उनका रिश्ता अनैतिक समझा और इसलिए विद्रोह किया, ऐसा भी एक मत है। "इतिहास में ऐसा उल्लेख हुआ है कि जोआना को बन्दी बनाने पर टॉमस ने आकर उसे मुक्त किया और पुनः सरधना के तख्त पर बिठाया था। उसकी मृत्यु की

---

1. राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह, सरस्वती, अक्टूबर 1972, पृ - 274

तिथि भी इतिहास में मिलता है। उसका अन्त ८६ साल की अवस्था में २७ जनवरी १८३७ को हुआ था।"[1]

इन ऐतिहासिक तथ्यों को कुछ परिवर्तनों के साथ उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास में कहा गया है कि जुआना को पति के अलावा कई पुरुषों से अनैतिक संबन्ध था। लेकिन इतिहासानुसार उसने दो शादियाँ की थीं, उसके चरित्र मे, कोई अनैतिकता नहीं। उसके कठिन हृदय के मिसाल जो इतिहास से मिलता है उसे उपन्यास में भी चित्रित किया गया है। इतिहास मे बेगाम के मकान में चोरी के लिए घुसनेवाली दो लडकियों को वह जीते जी मिट्टी में गाडने की सजा देती है।[2] इस घटना को उपन्यास में मुशतरी के संबन्ध में चित्रित किया गया है। इस ऐतिहासिक प्रमाणों से 'बेगम रमरु' नामक पात्र की ऐतिहासिकता स्पष्ट हो जाती है।

नवाब समरु का चरित्र पाठकों के अन्दर करुणा उत्पन्न करता है। बुढापे में वह छोटी उम्रवाली दिलाराम से शादी करता है। अपने यौवन में कुटिलता और बुद्धि से सभी पर विजय पानेवाला यह फ्रांसीसी योद्धा अपनी पत्नी के सौन्दर्य और वाक्चतुरता के आगे हार जाता है। पत्नी और सेनापति टॉमस के बीच का संबन्ध जानकर भी वह कुछ न कर सका। एक दासी मुश्तरी से उसे सच्चा प्यार मिल्ला है। पर बेगम उसे नवाब को प्यार करने की जुर्म में मार डालती है। अकेलापन और विवशत से वह आत्महत्या करता है। वह अपने पराजित जीवन पर विलाप करते हुए एक बार कहता है - 'अठ्ठावन बरस की ज़िन्दगी में योरोप से लेकर यहाँ तक की खाख छानने के बाद इस वाल्टर रेनहार्ड ने आखिर पाया क्या? टुटी चारपाई पर पैदा हुआ था और

---

1. राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह, सरस्वती, अक्टूबर 1972, पृ - 274
2. राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह, सरस्वती, अक्टूबर 1972, पृ - 273

सोने के पलंग पर मरेगा, बस इतना ही तो हासिल किया।"[1] समरु के प्रारंभिक जीवन अभावग्रस्त था यह इतिहास सम्मत बात है। इसका नाम इतिहास में वाल्टर रेनहार्ड सोमब्रे था। उसके साथियाँ उसे 'ल साम्बर' कहते थे। समरू इस शब्द का अपभ्रंश रूप है। सरघना को राजधानी बनाकर उसने शासन किया था। उसकी मृत्यु १७७८, ४ मई को हुई। उसके बाग के ही एक कोने में उसकी कब्र बनी।[2] इतिहासानुसार उसकी मृत्यु स्वाभाविक कहा गया है। पर उपन्यासकार ने उसकी मृत्यु को आत्महत्या चित्रित किया है और उसकी कब्र का स्थान आगरे के रोमन कैथोलिक कब्रिस्तान बताया है।

उपन्यास के दो अन्य ऐतिहासिक पात्र में लवसूल तथा टॉमस। लवसूल बेगम के प्रेमी के रूप में उपन्यास में आता है। बेगम समरु से प्रेम करके वह उससे शादी भी करता है। लेकिन लोगों के विरोध के कारण लवसुल को खुदकुशी करनी पडती है। इतिहास में इसका नाम 'मोशिए ल भेसो' है और उसके साथ बेगम की शादी की बात भी इतिहास सम्मत है। इतिहासानुसार भी जन विद्रोह से बचने के लिए आत्महत्या की है। नवसूल उर्फ ल भेसो एक आदर्श प्रेमी है।

नवाब का सेनानायक टॉमस भी उपन्यास में बेगम के प्रेमी के रूप में आता है। लेकिन इतिहास कहता है कि टॉमस सरधना में रहते हुए राज परिवार की छोकरियों के पीछे रहा करता था। इसी कारण से बेगम समरु ने उसे सरधना से निकाल दिया था। इससे यह स्पष्ट होता है कि उपन्यासकार ने केवल 'टॉमस' चरित्र को इतिहास से लेकर कुछ फेर बदलाव के साथ प्रस्तुत किया है।

---

1. नागर, सात घूँघटवाला मुखडा, पृ - 74
2. राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह, सरस्वती, अक्टूबर 1972, पृ - 273

पात्र और वातावरण के साथ भाषा भी ऐतिहासिकता के लिए सहायक बन गयी है। यहाँ मुस्लीम-ईसाई धार्मिक वातावरण के लिए उचित उर्दू भाषा का प्रयोग हुआ है। उदाहरणार्थ यह वाक्य हम ले ले "याद रखो दिलाराम की सियासत भी पेशेवर रक्कासा होती है।"[1] गांववालों की भाषा इस प्रकार है - "ये नई सरकार, अपने वश में नई आई भाइया। वहाँ तो फिरंगी राज हैगा, अभी कुतवाल साहेब तक नहीं फरमा सकते हैंगे कि ऊँट किस करवट पे कल को बैठेगा।"[2]

भाषा की तरह संवाद शैली भी उपन्यास के पात्र और वातावरण के लिए उचित है। संवाद, पात्रों की मनःस्थिति और वातावरण को प्रकट करता है। नवाब और उनके अफसरों का संवाद भी राजनैतिक स्तर केलिए उचित है।

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'सात घूँघटवाला मुखडा' नामक उपन्यास में कुछ ऐतिहासिक कथापात्रों के द्वारा मुगलकालीन कुछ अनदेखी घटनाओं पर उपन्यासकार ने प्रकाश डाला है। इन घटनाओं के माध्यम से उस समय की राजनीति का स्वरूप व्यक्त होने के साथ स्त्री शासकों की शासन कुशलता की ओर भी उन्होंने संकेत किया है।

एकदा नैमिषारण्ये

अमृतलाल नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में गुप्तकालीन इतिहास पर आधृत उपन्यास है 'एकदा नैमिषारण्ये।' इसमें उपन्यासकार ने न केवल इतिहास दर्शन कराया है, बल्कि भारतीय धर्म तथा अध्यात्मनिष्ठ संस्कृति का भी चित्र पाठक के सामने रख दिया है। इस उपन्यास के द्वारा नागरजी ने भारतीय संस्कृति के विविध

---

1. नागर, सात घूँघटवाला मुखडा, पृ - 13
2. नागर, सात घूँघटवाला मुखडा, पृ - 54

उत्सों का विशद वर्णन भी किया है। इतिहास और पुराण के सुन्दर समन्वय से उपन्यासकार की आस्थावादी दृष्टि का पश्चिय मिलता है। संपूर्ण भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति को एक भावात्मक सूत्र में बाँधने का मोह नागरजी ने इस उपन्यास के द्वारा व्यक्त किया है।

प्रस्तुत उपन्यास, की मुख्य कथा तथा प्रमुख पात्र पुराण पर आश्रित हैं। कथा की पृष्ठभूमि तथा बहुत कम पात्र ही ऐतिहासिक हैं। कथा का केन्द्र पौराणिक पात्र भार्गव सेमाहुति है। उन्होंने अपने पूर्वजों द्वाग संचित अमूल्य ग्रन्थों को संग्रहीत करने तथा महाभारत कथा के प्रचार के लिए नैमिष में एक महासत्र का आयोजन किया। देश भर में उस समय धार्मिक संघर्ष चल रहा था। शैव और वैष्णव आपस में लड रेहे थे। राजाओं के बीच भी युद्ध हो रहा था। उस समय भार्गव सोमाहुति, नारद तथा सरयू वशिष्ठि की सहायता से भारत में गुप्त साम्राज्य की स्थापना हुई और चन्द्रगुप्त उसका प्रथम सम्राट बन गये। इसी समय भार्गव सोमाहुति के नेतृत्व में भावात्मक एकता को बुलन्द करने के लिए नैमिषारण्य में महासत्र आरंभ किया गया। भार्गव जैसे महापुरुषों के कठिन प्रयास से देश में शान्ति और समाधान की स्थिति लौट आयी। चन्द्रगुप्त के बाद पुत्र समुद्रगुप्त शासक बने। समुद्र का शासनकाल देश की उन्नति का समय था। इसी काल में नैमिष का महासत्र पूर्ण हुआ।

इस मुख्य कथा के साथ कई उपकथायें भी बीच-बीच मं संजोई गई हैं जैसे सोमाहुति और इज्या की कथा, भारत चन्द्र और प्रज्ञा की कथा आदि। इन काल्पनिक प्रसंगों के रहते हुए भी उपन्यास का ऐतिहासिक अंश भी अप्रधान नहीं है। भारत के इतिहास से गुप्तकालीन इतिहास की एक झांकी इसमें प्रस्तुत की गयी है। उस समय की कई राजनैतिक समस्याओं तथा शासकों का उल्लेख इस उपन्यास की ऐतिहासिकता को प्रमाणिकता देता है।

उपन्यास की मुख्य ऐतिहासिक घटना है गुप्त साम्राज्य की स्थापना। कथा में सरयू वशिष्ठि भार्गव सोमाहुति और नारद ने मिलकर चन्द्रगुप्त को सम्राट बनाया है। इतिहास ग्रन्थों में गुप्त साम्राज्य की स्थापना का प्रमाण मिलता है। रोमिला थापर के पुस्तक भारत का इतिहास में गुप्त वंश का आरंभ लगभग ३१९-३२० ई में कहा गया है। उन्होंने यह भी कहा है कि गुप्तों का उद्भव कैसा हुआ यह अस्पष्ट है। उनके अनुसार यह संभवतः कोई धनी भू-स्वामियों का परिवार था, जिसने धीरे-धीरे मगध प्रदेश में राजनीतिक सत्ता प्राप्त कर ली थी। चन्द्रगुप्त प्रथम ने अपने पुत्र समुद्रगुप्त को लगभग ३३५ ई. में उत्तराधिकार सौंप दिया।[1] 'गुप्त साम्राज्य का इतिहास' नामक अपनी पुस्तक में श्री. वासुदेव उपाध्याय ने भी गुप्त शासन का आरंभ ईसा की तीसरी शताब्दी में होने की बात का उल्लेख किया है। गुप्त संवत का आरंभ इसमें भी ई. ३१९-३२० से माना गया है। ई. ३३० के समीप समुद्रगुप्त को उत्तराधिकार प्राप्त हुआ है।[2]

आर्यों की उत्पत्ति संबन्धी कुछ प्रमाण भी उपन्यास में मिलते हैं। भारतीय पुराण के कुछ देवी-देवताएँ विदेशी संस्कृति में भी पाये जाते हैं। केवल उनके नाम में भिन्नता है। कुछ राजाओं के नाम भी इस प्रकार मिलते हैं। उपन्यास में इस बात का ज़िक्र हुआ है - "भारत के श्रीराम, इन्द्र, वरुण आदि देवताओं अन्य नामों में एराक में भी पूजे जाते हैं। यहाँ के सगर, सरगोण नाम से वहाँ शासन करते थे। एक अयोध्या भी अरब देश में है।"[3] उपन्यासकार भूमिका में इस बात की चर्चा करते हैं - "इतिहास ग्रन्थों से विदित हुआ कि इन्द्र मध्यएशिया से भारत तक के आर्यों के मुखिया के रूप में प्रचलित था। इसी प्रकार मेसोपोतामिया के पुरोहित-राजा गुडेया या गुडिया और

---

1. रोमिला थापर, भारत का इतिहास, पृ - 103
2. वासुदेव उपाध्याय, गुप्त-साम्राज्य का इतिहास, पृ - 36
3. नागर एकदा नैमिषारण्ये पृ - 153

अपने राजा गाधि, राजा सगर और ईराक के सर्गोन महान, किश नरेश उकुसी या अक्षक के बेटे बकुस या बेकस, इस्वाकुतनय विकृक्षि निमि और दण्डक तथा निमि और टंडन में एकता दिखलाई देने लगी।"[1] इन बातों से उपन्यासकार इस ऐतिहासिक तथ्य का उद्‌घाटन करना चाहते हैं कि भारत की आर्य संस्कृति संपूर्ण विश्व में व्याप्त है और आर्य भारत के बाहर से आकर सिन्धू के तट पर बसे थे।

उपन्यास के ऐतिहासिक पात्रों के अन्तर्गत गुप्तसम्राट चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, वाकाटक नरेश विंध्यशक्ति, उनका पुत्र प्रवरसेन, नागाषेण, सम्राट भवनाग अहिच्छत्रा नरेश अच्युत नाग, गणपति नाग आदि के नाम सम्मिलित हैं। चन्द्रगुप्त गुप्त, साम्राज्य के प्रथम सम्राट हैं। सम्राट भवनाग और अमात्य यज्ञसेन को हराकर चन्द्र राजा बनते हैं। इसमें उन्हें सरजू मैया तथा भार्गव सोमाहति की सहायता भी मिलती है। सरजू मैया ने इन्हें 'इक्ष्वाकुओं के नया कुलदीपक' कहा है। वे बडे प्रयत्न शील युवक हैं।

चन्द्रगुप्त मगधमहाराज श्रीगुप्तनंदन घटोत्कच के पुत्र तथा सुन्दरवर्मन के दत्तक पुत्र थे। पुत्रहीन सुन्दरवर्मन ने चन्द्रगुप्त को अपने उत्तराधीकारी घोषित किया था। पर बुढापे में सुन्दरवर्मन को एक बेटा पैदा हुआ और राज्य का आधा भाग उसे देने का निश्चय उन्होंने किया। चन्द्रगुप्त इस निश्चय से अतृप्त थे। उसी समय सुन्दरवर्मन और चन्द्रगुप्त एक साथ एक युद्ध पर चले और वहाँ पिता की मृत्यु हुई। लोगों को चन्द्रगुप्त पर शक हुआ। इस घटना के आधार पर एक नाटक 'कौमुदी महोत्सव' उस समय खेला गया। चन्द्रगुप्त को कलंकित करनेवाले इस नाटक को रोकने का प्रयास चन्द्रगुप्त और उनका पुत्र करते हैं। इस घटना को प्रामाणिक करनेवाला मत श्री. वासुदेव उपाध्याय देते हैं।' 'उनके अनुसार चन्द्रसेन याने चन्द्रगुप्त

---

1. नागर एकदा नैमिषारण्ये पृ - 9

ने अपने धर्मपिता मगधराजा का नाश किया था उत्तराधिकारि कल्याणवर्मन को भी पद भ्रष्ट कर दिया था।"[1] चन्द्रगुप्त की निष्ठूरता को प्रमाणित करनेवाली और एक घटना है रंभा की हत्या। राजा बनने के पहले रंभा से उनका प्रेम संबन्ध था। सम्राट बनने के बाद वे अपमान भय से उसकी हत्या कर देते हैं। अपने विरोधी नागषेण को पागल बना देना भी उनकी कुटनीति का प्रमाण है। सरजू मैया चन्द्रगुप्त को चन्द्रगुप्त मौर्य ओर चाणक्य, दोनों का सम्मिलित रूप मानती है। इस मत से उनका चरित्र पूर्ण रूप से व्यक्त होता है।

चन्द्रगुप्त के बाद पुत्र समुद्रगुप्त शासन गद्दी पर आये। इनकी भूमिका उपन्यास में बहुत छोटी है। फिर भी ऐतिहासिक दृष्टि से उनका शासन काल महत्वपूर्ण है। इसलिए इस काल को नागरजी ने अपने उपन्यास की पृष्ठभूमि बनायी है। पिता की तरह समुद्रगुप्त ने भी राष्ट्र की एकता को लक्ष्य किया। अपने विरोधी वाकाटक सम्राट प्रवरसेन के साथ वे सन्धी करते हैं। उनके शासनकाल में देश प्रगतिपथ पर था। प्रचेत के शब्द समुद्रगुप्त का गुणगान है वे कहते है कि 'समुद्र ने दम्भी सत्ताधीशों और संभ्रान्त लुटेरों से उनका वैभव छीनकर दक्षिण से उत्तर तक की प्रजा को दान किया है। उनके अनुसार वाकाटकों और पल्लवों की श्रेष्ठ नीतियों को भी माननेवाला समुद्रगुप्त महान शासक ही है।[2] सांस्कृतिक एकता के प्रोत्साहक के रूप में उपन्यासकार ने समुद्रगुप्त का चित्रण किया है।

वाकाटक सम्राट विंध्यशक्ति तथा उनका पुत्र प्रवरसेन भी ऐतिहासिक पात्रों के अन्तर्गत आते हैं। विंध्यशक्ति का यथार्थ नाम अम्बपल्लव था, विंध्यशक्ति उनकी

---

1. वासुदेव उपाध्याय, गुप्त साम्राज्य का इतिहास', पृ - 22
2. नागर एकदा नैमिषारण्ये पृ - 535

उपाधि थी। वे पहले सम्राट भवनाग के महाबलाधिकृत थे। बाद में उन्होंने वाकाटक राज्य की स्थापना करके इतिहास में स्थान पा लिया। स्वामि-भक्ति उनका प्रमुख गुण है। चोलराज्य जीतकर वे अपने दूसरे पुत्र को वहाँ का राजा बना देते हैं। विंध्य ने इसलिए ऐसा किया कि वीर की माता दक्षिण राज्य की होने के कारण वहाँ के लोग वीर को अपना समझ लेंगे। विंध्यशक्ति की दूरदर्शित इससे प्रकट होती है। प्रवरसेन भी पिता की तरह वीर तथा देशप्रेमी है। वह अनीतियों का खुलकर विरोध करता है। वह बडा पितृभक्त है। विंध्यशक्ति के बाद वह वाकाटक का सम्राट बनता है। "इतिहास में प्रवरसेन का उल्लेख बालाखाट के ताम्रपत्र में मिलने की सूचना है।"[1]

सम्राट भवनाग तथा सेनापति नागषे भी इतिहास सम्मत पात्र हैं। इतिहास में एक नागवंशी नागसेन का उल्लेख मिलता है जो इस नागषेण से मिलता-जुलता है। उपन्यासान्त में नागषेण चन्द्रगुप्त के छल से पागल हो जाता है। नागवंशी सम्राट भवनाग का नाम इतिहास में अन्तिम नागवंशी राजा के रूप में मिलता है। "अहिच्छत्रा नरेश अच्युतनाग के अस्तित्व का प्रमाण अहिच्छत्तर और पद्मावती से मिले कुछ प्राचीन सिक्कों से मिल गाया है।"[2]

उपन्यास का और एक ऐतिहासिक पात्र है धारा नरेश गिरागुरु गणपति नाग। उपन्यास में उन्हें बडा राजनीतिज्ञ और पौराणिक गणपति के समान चरित्रवाला प्रस्तुत किया गया है। शिवपुत्र गणपति के समान भारी भरकम काया है, कपाल दीर्घ और लंबी मोटी नासिका है। वे मोदक प्रिय भी हैं। इतिहास में एक नागवंशी राजा गणपति नाग है जिनका समय ई. ३१०-३४४ तक था। नागरजी ने इस पात्र चयन में

---

1. वासुदेव उपाध्याय, गुप्त साम्राज्य का इतिहास, पृ - 89
2. जायसवाल, हिस्ट्री ऑफ इंडिया पृ - 51

इतिहास और पुराण का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है। पौराणिक गणपति के समान इस गणपति से उपन्यास में महाभारत लिखवाया गया है।

इन ऐतिहासिक पात्रों तथा ऐतिहासिक वातावरण की सृष्टि के द्वारा उपन्यास की ऐतिहासिकता स्पष्ट होती है। इसके अलावा इतिहास के अनुकूल एवं पात्रों के लिए लायक भाषा का प्रयोग भी हुआ है। राजाओं के लिए गंभीर तथा मुनियों के लिए पाण्डित्यपूर्ण भाषा का प्रयोग उपन्यास के इतिहास बोध को सुदृढ बना देता है।

मानस का हंस

'मानस का हंस' नागरजी का उत्तर सांस्कृतिक उपन्यास है। भक्त महाकवि तुलसीदास की जीवनी पर आधृत इस उपन्यास को ऐतिहासिक उपन्यास के समान जीवनीपरक उपन्यास भी कहा जा सकता है। इतिहास और संस्कृति के प्रति मोह रखनेवाले नागरजी ने इस उपन्यास में भी अपने प्रिय विषयों की प्रस्तुति की है। उपन्यास में तुलसी के जन्म से लेकर अन्त तक का समय चित्रित है। इसके साथ तदयुगीन सामाजिक तथा राजनैतिक परिस्थितियाँ भी मौज़ूद हैं. तुलसी की जीवनी को प्रामाणिकता देने के लिए तद्युगीन कुछ अन्य ऐतिहासिक व्यक्तियों तथा ऐतिहासिक घटना का भी उल्लेख किया गया है।

तुलसी के जीवन चरित का मूल उनकी ही कृतियाँ हैं। कुछ बातें जनश्रुतियों से भी प्राप्त होते हैं। इन्हीं पर आधारित होकर नागरजी ने तुलसी को उपन्यास के केन्द पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके जीवन का वैयक्तिक पक्ष इतिहास में अधिक नहीं पाया जाता। उनकी जो जीवनियाँ पायी जाती हैं उनमें अधिकांश उनके भक्त या अनुयायियों द्वारा लिखी गयी हैं। इसलिए उनमें तुलसी के प्रति आदर और

भक्ति के कारण चमत्कारिक ढंग से बातें कही गयी हैं। उनमें प्रामाणिक लगनेवाली बातें तुलसी को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है जिनमें साधारण मानव की सभी दुर्बलतायें और संघर्ष विद्यमान हैं।

'मानस का हंस' में घटनाओं की अपेक्षा व्यक्ति प्रधानता है। तुलसीदास को आधार बनाकर प्रायः सभी घटनायें घटती हैं। अन्य सभी पात्र भी तुलसी के महाव्यक्तित्व की छाया में ही आ जाते हैं। इसलिए उपन्यास का संपूर्ण कथानक तुलसी के व्यक्तित्व का प्रकाशन है। पूर्वदीप्ति शैली से कथा आगे बढी है।

उपन्यास का आरंभ हुमयूँ के शासन काल से होता है। उसी समय तुलसीदास का जन्म हुआ था। नक्षत्र में दोष देखने से तुलसी को पिता छोड देते हैं। इस बात की प्रमाणिकता तुलसी के पदों से प्राप्त होती है

"मातु पिता जग जाय तज्यो बिधि हू न लिखी कछु भल भलाई"[1]

"जननी जनक तज्यों जनमि करम बिनु बिधिहु सृज्यो अवडेरे।"[2]

उपन्यास में भी तुलसी द्वारा इस बात का उल्लेख होता है-

"यहाँ से तो कुटिल कीट की तरह माता-पिता ने मुझे जन्मते ही निकाल फेंका था।"[3] इसी अर्थ में एक पंक्ति विनय-पत्रिका में मिलती है-

"तनु जन्यो कुटिल कीट ज्यों तज्यों मतु पिता हूँ।"[4]

---

1. कवितावली, उत्तर, 57
2. विनय पत्रिका, 227
3. मानस का हंस, 21
4. विनय पत्रिका, 75

तुलसी की माता का नाम हुलसी साबित करनेवाली पंक्ति 'रामचरित मानस' के बालकांड में मिलता है।

"रामहि प्रिय पावन तुलसी-सी।
तुलसीदास हित हिय हुलसी-सी।"[1]

तुलसी बाद में बाबा नरहरिदास का शिष्य बनते हैं। इस गुरु का नाम भी रामचरित मानस में मिलता है -

"बंन्दौं गुरु पद कंज कृपा सिन्धु नर रूप हरि।
महा माहे तम पुंज जासु बचन रवि कर निकर।"[2]

यौवन में तुलसी तीर्थाटन के लिए निकलते हैं। फिर अपने गाँव लौट आकर ज्योतिष विद्या से जीविका चलाने लगते हैं। इसी अवसर पर अपने गाँव को दोस्त राजा भगत का नाम देकर 'राजपुर' बना देते हैं। डॉ. माताप्रसाद गुप्त ने इस बात को प्रामाणिक मानते हैं।[3] तुलसी का विवाह पं. दिनबन्धु पाठक की सुन्दर, विदुषी पुत्री रत्नावली से होता है। उनका गुहस्थ जीवन लगभग नौ वर्ष तक सुख पूर्वक चलता है। उन्हें एक पुत्र पैदा हुआ था। पर अल्पायु में ही वह मर गया। पत्नी द्वारा एक बार उनका अपमान होता है और वे घर छोडकर वैरागी हो जाते हैं। तुलसी के विवाहित होने तथा फिर वैरागी होने का प्रमाण उनके 'दोहावली' में मिलता हैं।

"खरिया खरी कपूर सब उचित न पिय तिय त्याग।
कै खरिया मोहिं मेलि कै बिमल बिबेक बिराग।।"[4]

---

1. रामचरित मानस, बालकाण्ड, 1/31/6
2. मानस, बाल. वंदना
3. डॉ. माताप्रसाद गुप्त, तुलसीदास, पृ - 159
4. तुलसी, दोहावली, दोहा 255

पत्नी से झगडा करने तथा उसे छोडने की बात को जनश्रुति के आधार पर प्रामाणिक मान जाने लगे हैं।

घर छोडने के बाद कुछ दिन वे चित्रकूट में रहते हैं। 'रामाज्ञ प्रश्न' में इसका उल्लेख है-

"सगुन सकल संकट समन चित्रकूट चलि जाहु।
सीताराम प्रसाद सुभ लघु साधन बड़ लाहु।।"[1]

चित्रकूट से वे अयोध्या पहुंचते हैं और वहाँ रहकर 'रामचरित मानस' की रचना शुरु करते हैं। इस रचना से उनकी ख्याति फैलती है साथ ही विरोधियों की संख्या भी। विरोधियों के षडयन्त्र के कारण अयोध्या छोडकर काशी चले जाने की बात डॉ. माताप्रसाद गुप्त की 'तुलसीदास' पुस्तक में बतायी गयी है।[2] काशी में रहते समय अपने गुरुभाई गंगाराम से मिला और उन्होंने उनके साथ रहकर 'रामज्ञा-प्रश्न' की रचना की -

"सगुन प्रथम उनचास सुभ तुलसी अति अभिराम
सब प्रसन्न सुर भूमिसुर गोगन गंगाराम।"[3]

इसमें 'गंगाराम' नाम का जो उल्लेख किया गया है यह तुलसी का काशीवाला दोस्त गंगाराम ही माना जा सकता है। कवि का एक अन्य मित्र टोडर जिन्होंने काशी में उनकी सहायता की थी, तुलसी के शत्रुओं द्वारा मारा गया। प्रस्तुत व्यक्ति टोडर का भी ऐतिहासिक प्रमाण डॉ. माताप्रसाद गुप्त ने दे दिया है।[4] काशी में

---

1. तुलसी, रामाज्ञ प्रश्न, 2-6-3
2. डॉ. माताप्रसाद गुप्त, तुलसीदास, पृ - 200
3. तुलसी, रामाज्ञा प्रश्न, 1-7-7
4. डॉ. माताप्रसाद गुप्त, तुलसीदास, पृ - 178

दोस्तों के इच्छानुसार लोलार्क कुण्ड में स्थित एक वैष्णव मठ का गोस्वामी पद तुलसी ने स्वीकार किया था। लेकिन मठ के रजोगुणी परिवेश से ऊबकर वे पद त्याग कर देते हैं। 'बाहुक' तथा कुछ अन्य ग्रन्थों को उद्‌घृत कर डॉ. गुप्तजी इसकी ऐतिहासिकता का मिसाल दे देते हैं।[1]

उम्र बढने के साथ उनकी तबियत खराब होने लगी। उनकी बाहों में गिलटी आ गई। इसकी पीडा असह्य हो गयी। वे हनुमान जी से इस पीडा से मुक्त करने की प्रार्थन करते हैं - "है हनुमान हठीले, तुमने पहाड उठाया, लंका जलाई.... मेरी यह जरा-सी पीर नहीं हरो जाती?.... आओ मेरे साहब, मेरा कष्ट हरो।"[2] 'दोहावली' के कुछ दोहों'[3] तथा 'बाहुक'[4] के कुछ छन्दों में वे अपनी बाहुपीडा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। उनके समय में काशी में महामारी फैली थी। इस भयानक स्थिति में तुलसी अपनी युवा भक्त मण्डली को इकट्‌ठा करके दीन लोगों की सेवा करने लगे। 'कवितावली' के कुछ छन्दों में काशी की इस भयंकर महामारी का उल्लेख हुआ है।

'संकर सहर सर नर नारि बारिचर
बिकल सकल महामारी माँजा भई है।
उछरत उतरात हहरात मरि मरि जात
भमरि भगात जब थल मीचु मई है।।[5]

---

1. डॉ. माताप्रसाद गुप्त, तुलसीदास, पृ - 200
2. मानस का हंस पृ
3. तुलसी, दोहावली, दोई (234-236)
4. तुलसी, बाहुक, छन्द 20-34, 36, 37
5. तुलसी, कवितावलि, उत्तर. 176

गोस्वामी तुलसीदास को अन्तिम वर्षों में बर तोड़ के फोडे से सारा शरीर पीडा ग्रस्त हो गया था। इसी व्यथा से पीडित होकर ही उनकी मृत्यु होती है। उपन्यास में उनकी मृत्यु का दिन 'श्रावणकृष्ण तीज़'[1] बताया गया है। डॉ. गुप्त तुलसी की मृत्यु तिथि सं १६८० श्रावण कृष्ण को मानते हैं।[2] उपन्यास की तिथि इससे मिलती जुलती है।

राम भक्त महाकवि तुलसीदास का जीवनवृत्त इतिहास के आधार पर प्रस्तुत करके 'तुलसीदास' नामक व्यक्ति में निहित ऐतिहासिक व्यक्तित्व से परिचित कराना उपन्यासकार का लक्ष्य है। तुलसी के व्यक्तित्व प्रकाशन में सहायक सिद्ध होनेवाले कुछ अन्य ऐतिहासिक पात्र भी हैं। इनमें मुख्य हैं तुलसी की पत्नी रत्नावली, तुलसी के दोस्त मेघाभगत तथा टोडर, शिष्य बेनी माधव दास आदि। रत्नावली का चित्रण उपन्यास में जो किया गया है उसका आधार तुलसी की जीवनीयाँ, अन्तर्साक्ष्य तथा जनश्रुतियाँ हैं। मेघाभगत भी रत्ना के ही समान इतिहास सम्मत होकर भी उपन्यास में जनश्रुतियों के आधार पर पात्र बन गया है। सूरदास, गंगाराम, नन्ददास आदि के उल्लेख से उपन्यास की ऐतिहासिकता को अधिक प्रामाणिकता मिल जाता है।

उपन्यास के कुछ अन्य ऐतिहासिक पात्र जो हैं वे शासकों की कोटि में आते हैं। उनमें शेरशाह, हेमचन्द्र, अकबर, जहाँगीर आदि के नाम हैं। इन राजनैतिक पात्रों के जिक्र से तत्कालीन प्रशासकीय व्यवस्था और धार्मिक वातावरण का चित्रण उपन्यासकार का उद्देश्य है। वास्तव में इनके माध्यम से युग एवं समय की यथार्थ लेखा-जोखा प्राप्त है। यही इस उपन्यास की ऐतिहासिकता को और सजीव बना देता है।

---

1. नागर, मानस का हंस, पृ - 440
2. डॉ. माताप्रसाद गुप्त, तुलसीदास, पृ - 201

पात्र और देश के अनुरूप भाषा का प्रयोग नागर जी के उपन्यासों की आकर्षणीयता बढ़ाता है। 'मानस का हंस' ऐसा उपन्यास है जिसमें महान कवि तुलसी की जीवनी के साथ साथ तद्युगीन परिस्थितियाँ भी प्रस्तुत हैं। इसलिए प्रयुक्त भाषा भी उस युगानुकूल होना चाहिए। अवधी का चटुल, चंचल प्रयोग इस आवश्यकता की पूर्ति करता है। मुगल पात्रों के प्रसंग में उर्दू शब्दों का प्रयोग भी उचित हुआ है। पात्र और परिस्थिति के अनुसार अरबी-फारसी और आंचलिक शब्दों की प्रस्तुति भी उपन्यास को प्रभावपूर्ण बना देती है।

संवादयोजना भी उपन्यास की ऐतिहासिकता के लिए सहायक है। इससे स्वाभाविकता, सरलता और संक्षिप्तता लाने में उपन्यासकार सफल हो गये हैं। शैलीगत विशेषताएँ भी चमत्कारपूर्ण है। वर्णनात्मक, संवाद, संस्मरण, आत्मविश्लेषण तथा पूर्वदीप्ति जैसे अनेक शैलियों का प्रयोग भी हुआ है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि 'मानस का हंस' में इतिहास नायक तुलसी की जीवनी का अंकन है। इसमें इतिहास के कई अंशों को खोलकर उपन्यासकार ने इसे ऐतिहासिक बना दिया है।

खंजन नयन

'खंजन नयन' 'मानस का हंस' की तरह एक महान व्यक्तित्व की जीवनी पर आधारित उपन्यास है। यह महाकवि कृष्णभक्त सूरदास की जीवनगाथा है। इसमें तदयुगीन सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक वातावरण का सजीव चित्रण भी उभारा गया है। सूरदास के जीवन से संबन्धित प्रामाणिक बातों के अभाव के कारण जनश्रुतियों तथा सूर ग्रन्थों से प्राप्त कुछ संकेता से उपन्यास की कथा को विकसित किया गया है।

इसमें सूरदास के बचपन से लेकर अन्तिमसमय तक की विविध घटनाओं का चित्रण है। सूर के जन्मस्थान के बारे में कई लोगों के बीच मतभेद हैं। नागरजी ने 'भूमिका' में इन भिन्न मतों का उल्लेख किया है। "कुछ विद्वानों के अनुसार सूर का जन्म दिल्ली के पास 'सीही' में हुआ था तो कुछ और उनका जन्म व्रजक्षेत्र में मानते हैं। लेकिन नागर ने इन मतों परध्यान न देकर, 'पारसौली' को सूर का जन्मस्थान कहा है।"[1] सूर की अन्धता के बारे में भी ऐसे ही मतभेद हैं। उन्हें जन्मांध माननेवाले भी हैं और कुछ समय तक उन्हें देखने की क्षमता थी, ऐसा भी कहा जाता है। 'सूरसागर' में सूर ने अपने अंधेपन के बारे में कहा है, पर उसमें जन्मान्ध था या नहीं यह तो नहीं बताया गया है।"[2] उपन्यास में नायक सूर जन्मान्ध हैं।

सूर की जन्मतिथि उपन्यास में वि.सं. ३५ वैसाख सुदी ५ बताया गया है। नन्ददुलारे वाजपेयी[3], डॉ. व्रजेश्वर वर्मा[4] जैसे विद्वानों ने भी इसी तिथि को प्रामाणिक माना है। उपन्यास की कथावस्तु इस प्रकार है - सूर के अन्धा होने से पिता और भाईयाँ उनसे विरोध करते हैं। केवल माँ ही सूर से प्रेम करती है। माँ उसे मन्दिर की कृष्णमूर्ति दिखाकर उससे सख्य भाव जोडने का उपदेश देती है। उस दिन से कृष्ण सूर के लिए कृष्ण सखा बन जाता है। पिता और भाईयों की ईर्ष्या के कारण सूर घर छोड जाते हैं और ज्योतिष विद्या सीखकर धनार्जन करने लगते हैं। धन बढने के साथ उनकी सुख-सुविधायें भी बढने लगी तो भक्ति उनमें कम होने लगी। इसलिए सूर अपनी

---

1. नागर, खंजननयन, पृ - 6
2. सूरदास, सूरसागर, पद सं 5, 69
3. वाजपेयी, महाकवि सूरदास पृ - 88
4. डॉ. व्रजेश्वर शर्मा, सूर-मीमांसं पृ - 20

सुखसुविधाये छोडकर तीर्थाटन पर निकलते हैं। उन्हें भी तुलसी की भांति विरोधियों से कई आक्रमणों को झेलना पडता है। ऐसी कई घटनाये कथा में मिलती हैं।

कंतो नामक एक युवती से सूर का परिचय होता है। कंतो की निकटता से उनमें कामवासना जागती है, पर भक्ति से वे अपने को काबू से रखते हैं। कंतो के साथ सूर कई जगह तीर्थाटन केलिए चलते हैं। कतों को सूर के प्रति अगाध प्रेम था। मुसलमानों के आक्रमण से सूर को बचाने के प्रयास में वह अपना जीवन न्योछावर कर देती है।

वारणासी में सूर की भेंट महाप्रभु वल्लभाचार्य से होती है। उनमें सूर अपने कृष्ण सखा का दर्शन करते हैं। वे वल्लभाचार्य से दीक्षा स्वीकार करते हैं। बल्लभाचार्य के आदेशानुसार सूर भगवद्लीला वर्णन करते हैं और श्रीनाथजी के मन्दिर में कीर्तनिया का पद संभालने लगते हैं। ये सब बातें इतिहास सम्मत हैं। सूर के अन्तिम समय का वर्णन जो उपन्यास में मिलता है, बडा ह्रदयस्पर्शी है।

उपन्यास की अनेक घटनाये ऐतिहासिक आधार पर चित्रित हैं, जैसे सूर और वल्लभाचार्य का मिलन, सूर का पृष्ठिमार्ग में दीक्षा स्वीकार करना आदि। इनके अलावा कई राजनैतिक तथा धार्मिक घटनाये भी हैं जिनसे उपन्यास की ऐतिहासिकता और मज़बूत बन जाती है। उस समय मुसलमान शासकों द्वारा हिन्दू जनता पर आक्रमण चल रहा था। सिकंदर लोदी, बाबर, हुमायूँ तथा अकबर सूर के समकालीन शासक थे। इन मुगलों का समय भारत में आंतक और मारकाट का था। हिन्दुओं को बलात मुसलमान बनाया जाता था। इन ऐतिहासिक पात्रों और घटनाओं का उल्लेख भी उपन्यास में मिलता है। इन राजनैतिक पात्रों के साथ कुछ अन्य ऐतिहासिक व्यक्ति जैसे वल्लभाचार्य आचार्य विट्ठलनाथ, मीरा बाई, तुलसीदास, कृष्णदास, परमानन्ददास

चतुर्भुजदास, हितहरिवंश आदि के नामोल्लेख भी उपन्यास में प्राप्त है। 'खंजन नयन' के मुख्य पात्र सूरदास की जीवनी को सत्यवत् प्रतीत होने में ये पात्र और वातावरण निःसन्देह सहायक सिद्ध होते हैं।

भाषा और संवाद पक्ष भी इतिहास द्योतक है। मुगल शासन के कारण अरबी-फारसी-उर्दू भाषा का उस समय प्रचलन था। और हिन्दुओं की भाषा संस्कृत युक्त खडीबोली थी। इन बातों को ध्यान में रखकर नागरजी ने उपन्यास लिखा है। उपन्यास की अधिकांश घटनाएँ व्रज प्रदेश में घटती हैं। इसलिए व्रज की स्थानीय भाषा भी मिलती हैं।

संवाद योजना पात्र और समय का ठीक परिचय करनेवाली है। उपन्यासारंभ में ही तद्‌युगीन प्रशासन व्यवस्था का परिचय एक संवाद द्वारा व्यक्त होता है -

"सुलतान के राज में मारकाट के काजे कभी कोऊ बात होवे है भला।"[1]

इतिहास कथानक के अनुरूप शैलियों को भी उपन्यास में अपनाया है। इसका कलेवर कथाकथन शैली में है जो घटनाओं के वर्णन के लिए उचित दिखाई पडता है। वर्णनात्मक शैली आत्मकथात्मक शैली आदि का भी कही कहीं प्रयोग किया गया है।

करवट

'करवट' में नागरजी ने लखनउ के अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह के पतन से लेकर भारत में कांग्रेस का उदय, भारतीय सांस्कृतिक क्षेत्र पर स्वामी दयानन्द और उनके आर्य समाज का प्रभाव जैसे कई सामाजिक, सांस्कृतिक बातों तक का अंकन

---

1. नागर खंजननयन, पृ - 9

किया है। उपन्यासकार ने अपने अन्तिम उपन्यास 'पीढियाँ' की भूमिका में बताया है कि 'करवट' में सन् १८५४ से १९०२ तक के भारत का चित्रण है।[1] इस सफल औपन्यासिक कृति के द्वारा भारत के आधुनिक स्वरूप का दर्शन कराना नागरजी का लक्ष्य है। इसमें चित्रित मध्ययुगीन भारत से संबन्धित ऐतिहासिक घटनायें इसे ऐतिहासिक उपन्यास बना देती हैं। उपन्यास की पृष्ठभूमि लखनऊ समाज है।

लखनऊ के एक खत्री परिवार पर केन्द्रित होकर उपन्यास की कथा चलती है। तनकुन उर्फ बंसीधर टंडन इसका नायक है। वह छोटी उम्र में ही फारसी का विद्वान बन जाता है। नौ साल की उम्र में उसकी शादी चमेली से होती है। लेकिन पिता धनमोह से दूसरे विवाह के लिए उसे पर मजबूर करता है तो वह घर छोडकर चला जाता है। वह दूसरा विवाह करना नहीं चाहता था। घर छोडने के बाद वह कुछ लडकों को पढाकर आजीविका चलाता है, साथ ही अंग्रेजी पढता भी है। अंग्रेजी के ज्ञान से उसे अनेक अंग्रेजी दोस्त मिलते हैं। नैन्सी तथा पार्किन्सन से उसकी गहरी दोस्ती हो जाती है। नैन्सी के आकर्षण में वह फंस जाता है और बाद में वे अपनी पत्नी की याद आने पर वह पश्चाताता भी है। नैन्सी के साथ वह कलकत्ता पहुँचता है। जब नैन्सी उसे छोडकर किसी अंग्रेज़ी से शादी करती है तब तनकुन अकेलापन महसूस करता है। वह अपनी पत्नी को कलकत्ता ले आता है।

तनकुन नवीनता और परिवर्तन का प्रेमी है। वह अपने खत्री समाज में नवीन जागरण लाने का प्रयास करता है। पत्नी को भी आधुनिक बना देता है। उसका चेमली नाम बदलकर चम्पक बना देता है और उसे घुँघट के बगैर बाज़ार से चलाता

---

1. नागर, पीढियाँ, पृ - 6

भी है। चम्पक भी पति के आदर्शों को अपनाकर समाजसुधार के लिए तैयार हो गयी। तनकुन लखनऊ के एक मिडिल स्कूल का होडमास्टर बनता है और समाज के सुधार के लिए धन और तन से प्रयास भी करता है। तनकुन-चम्पक दम्पति के दो सन्तानें देशदीपक उर्फ खोखा तथा प्रभा हुई। खोखा पिता की तरह चतुर और होशियार था। वह डाक्डर बनता है। उन दिनों देश की सामाजिक स्थिति बहुत खराब थी। मुसलमानों का हिन्दुओं पर आक्रमण बहुत बढ गया था। मुसलमान गुडों ने हिन्दू लडकियों को उठाकर ले जाते ते। वे लडकियाँ अगर सुरक्षित होकर लौट आती तो भी समाज तथा घरवाले उन्हे स्वीकार नहीं करते थे। देशदीपक जैसे युव लोग इस अनीति का विरोध करते हैं। उसी समय मुसलमान द्वारा उठायी गयी कौसल्या से देशदीपक विवाह करता है। देशदीपक और कौशल्या मिलकर देश के सुधारवादी कर्मों में भाग लेते हैं। लखनऊ में जब प्लेग फैलता है उसी में बंसीघर की मृत्यु होती है।

प्रस्तुत सामाजिक कथानक के माध्यम से तदयुगीन कुछ प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं तथा पात्रों का उल्लेख हुआ है। इसमें लखनऊ के अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह का पतन, भारतीयों में अंग्रेज़ी शिक्षा का प्रभाव, कांग्रेज का गठन, स्वामी दयानन्द जैसे समाजोद्धारकों का आविर्भाव, आर्यसमाज का प्रचलन जैसी कुछ इतिहास प्रधान घटनाओं की सूचना कथा के बीच बीच में दी गयी हैं। उपन्यास में निहित इतिहासांश के बारे में नागरजी ने इसकी भूमिका में बताया है कि "गदर के बाद अंग्रेज़ी शासन और शिक्षा के कारण समाज में नई मानसिकता का उदय और राष्ट्रीयता में नवीनता हुआ है। यह इतिहास ही इस उपन्यास में काल्पनिक पात्र-पात्रियों के द्वारा अंकित हुआ है।"[1] भारत के सामाजिक क्षेत्र में अंग्रेजी शिक्षा का बहुत बडा

---

1. नागर, करवट, पृ - 7

प्रभाव हुआ था। युवकों का व्यक्तित्व अधिक तेज हो गया। नारियाँ भी शिक्षा पाकर अन्धविश्वासों के बन्धनों से बाहर आ गयी। पर्दा छोडकर अपने पतियों के साथ चलने का साहस भी दिखाने लगीं। राजाराम मोहन राय, केशव चन्द्रसेन, स्वामी दयानन्द जैसे महान व्यक्तियों से प्रभावित होकर आम जनता आर्य समाज तथा ब्रह्मसमाज जैसी संस्थाओं की ओर आकृष्ट हुई। इन संस्थाओं पर पुरानी पीढि शंका की दृष्टि देखती थी। क्योंकि इनसे आकृष्ट युवक लोग गैरबिरादरी में शादि करने लगे तथा विधवा-विवाह का प्रोत्साहन भी होने लगा। इन छोटे-छोटे परिवर्तनों ने भारतीय नवयुवकों में नयी स्फूर्ति प्रदान की।

लखनऊ के नवाबशासन का अन्त और अंग्रेज़ी राज का आरंभ - भारतीय इतहास की प्रमुख घटनाये हैं। नवाब वाजिद अली शाह पर कुशासन का आरोप लगाकर रेजिडेंट जेम्स आउद्रम ने उन्हें गद्दी से निकाला और कलक्कत्ता भेज दिया था। यह घटना १३ फरवही १८५६ ई. में हुई थी। नवाब के निष्कासन से अवध के लोग दुःखी थे। पर अंग्रेजों अपनी कुटिल बुद्धि के द्वारा अवध को ब्रिटीश राज्य में शामिल कर दिया। इन घटनाओं का विशद वर्णन उपन्यास में मिलता है। १८५७ की गदर कालीन परिस्थितियों का वर्णन उपन्यास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को प्रामाणिक बना देती हैं। भारतीय जब अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध मोर्चा करने लगे तब उन्होंने दमन नीति को अपनाया। उनके अत्याचार का भी विशद चित्र उपन्यासकार ने दिया है - "अंग्रेज़ों ने घेरा डाल-डालकर गाँव के गाँव पूरे जला दिए। ....स्त्रियों और बच्चों की निर्मम हत्या की। .....घर के पुरुषों को खंभे से बाँध-बाँधकर घर की स्त्रियों के साथ बलात्कार किए, फिर उनके पति व बच्चों को मार डाला।"[1] इस जनविरुद्ध शासन

---

1. नागर, करवट, पृ - 121

व्यवस्था के खिलाफ कई वीर भारतीयों ने लोगों का नेतृत्व किया। इन वीरों में कईयों के नाम उपन्यास में आ जाते हैं। बेगाम हजरा महल, मम्मुखाँ, नाना पेशवे, तांत्या टोपे, लक्ष्मीबाई, अजीमुल्ला खां, मौलवी डंकाशाह आदि का जिक्र उपन्यास में हुआ है।

इंडियन नोशनल कांग्रेस की स्थापना संबन्धी विवरण भी उपन्यास में प्राप्त है। सर ह्यूम ने इसकी स्थापना की थी और पहला अधिनिवेशन सन १८८५ दिसंबर २८ के बंबई में हुआ। बंबई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कालेज में आयोजित प्रस्तुत अधिनिवेशन का अध्यक्ष व्योमेश चन्द्रबनर्जी थे। यह घटना इतिहास सम्मत है।

तद्युगीन कई सामाजिक गतिविधियाँ भी कथा में प्राप्त होती हैं। खत्री वर्ग की एक वर्गीय समस्या उस समय उभर आयी थी। खत्रीयों को उस समय के सेन्ससवाले ने बनिया के अन्तर्गत रख दिया। उससे पहल वे क्षत्रियों के अलर्गत थे। इस बात पर हंगामा हुई। इस विरोध के कारण १९०० सितंबर को भारत सरकार के सेन्सस कमीशनर श्री.ए.एच रिजले के द्वारा यह घोषण की गई कि खत्रियों को पुन क्षत्रियों में माना जायेगा। खत्रियों के वर्गीय इतिहास की इस घटना को भी उपन्यास में उभारा गया है।[1] सन् १८९९ में भारत के विविध भागों में जो अकाल हुआ था उसका उल्लेख उपन्यास में हुआ है। बंबई में उसी समय प्लेग की बीमारी भी फैली। वैसे ही सन् १९०२ में लखनऊ में भी प्लेग का आक्रमण हुआ। इन दारुण परिस्थितियों का विशद वर्णन भी नागरजी ने किया है।

इनके आलाव लखनऊ - कानपुर के बीच रेल का आरंभ, सन् १८१७ का प्रेस आक्ट जैसी अन्य कुछ घटनायें भी इतिहास से ली गयी हैं। इन इतिहास सम्मत

---

1. नागर, करवट, पृ - 351

घटनाओं तथा इतिहास पुरुष उपन्यास के लिए ऐतिहासिक परिवेश तैयार करते हैं। भाषा और शैली भी ऐतिहासिकता के लिए सहायक सिद्ध हुई हैं। अवध के सन्दर्भ में चौक की भाषा, अंग्रेजि शिक्षित भारतीयों के लिए अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी, बंगालियों के मुँह से उनकी बोलचाल की भाषा जैसे सन्दर्भोचित भाषा-प्रयोग से उपन्यास की गरिमा बढ गयी है।

मुख्य ऐतिहासिक घटनायें विवरणात्मक शैली में चित्रित की गई हैं। अवध के नवाब का निष्कासन, कांग्रेस का अधिनिवेशन आदि का विशद वर्णन हुआ है। इस प्रकार मुख्य कथा के साथ ही इतिहासपरक वातावरण की सृष्टि की गई है। इस वातावरण सृष्टि के लिए कुछ ऐतिहासिक घटनाएँ तथा इतिहास पुरुषों के नाम का उल्लेखन सहायक हुए हैं।

पीढियाँ

'पीढियाँ' उपन्यास नागरजी का हंसगीत है। उनकी मृत्यु के बाद इसका प्रकाशन हुआ है। 'पीढियाँ' 'करवट' की अगली कडी के समान है। 'करवट' में जहाँ कथा को समाप्त किया गया था वहाँ से 'पीढियाँ' की कथा शुरु होती है। उपन्यासकार ने 'अपनी बात' में कहा है ''करवट' में १८५४ से १९०२ तक के भारत का चित्रण है वैसे ही 'पीढियाँ' में सन १९०५ के स्वदेशी आन्दोलन और क्रान्तिकारी आतंकवाद से लेकर सन् १९८६ के विघटनकारी आतंकवाद तक का काल अंकित है।"[1]

'पीढियाँ' में एक साथ कई कथायें चलती है। इनमें डॉ. देशदीपक टण्डन और उसकी तीन पीढियों की कथा मुख्य है। इसमें देशदीपक के अलावा उसका पुत्र

---

1. नागर, पीढियाँ, पृ - 6

जयन्त, पौत्र सुमन्त तथा सुमन्त का पुत्र युधिष्ठिर प्रमुख पात्र बनकर आते हैं। उनकी कथा के साथ कई सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक परिस्थितियों का अंकन भी हुआ है। ये परिस्थितियाँ स्वतन्त्रतापूर्व भारत की भी हैं तथा स्वातंत्योत्तर भारत की भी।

युधिष्ठिर शहीद जयन्त का जीवनीपरक उपन्यास लिख रहा है। यही उपन्यास का केन्द्र विषय है। शेष सभी घटनाएँ तथा उपकथाएँ इस मुख्य कथा के सहायक रूप में आती हैं। जयन्त के बारे में जानते के लिए युधिष्ठिर उसके समकालीन कई व्यक्तियों के साथ साक्षात्कार करता है जिससे जयन्त के व्यक्तित्व की कई छिपी हुई पहलुओं पर प्रकाश पडता है। जयन्त राजनीति और नारियों में रुची रखता था। एक बार एक युवति उससे गर्भवती हो जाती है। जयन्त इस अपमान से बचने के लिए इंगलैंड चला जाता है और कुछ बरस बाद बारिस्टर होकर लौट आता है। बारिस्टरी से वह खूब धन कमाता है और राजनीति में भी वह एक स्थान पा लेता है। उसकी शादी मनोरमा से होती है। सुमन्त, युधिष्ठिर का पिता, उन दोनं का पुत्र है। पत्नी के अलावा उसका संबन्ध एक दूसरी मनोरमा से भी था जो विवाहित थी। उसमें भी एक बेटा पैदा होता है। जयन्त ने 'स्वदेशी आन्दोलन' से लेकर सन् १९४२ के 'भारत छोडो आन्दोलन' तक सभी प्रमुख आन्दोलनों में भाग लिया और उसकी मृत्यु १९४२ में पुलीस के हाथों से होती है।

जयन्त की कथा के माध्यम से भारत की कई ऐतिहासिक घटनाएँ भी वर्णित हैं। बीसवीं सदी की कुछ प्रमुख घटनाओं जैसे स्वदेशी आन्दोलन, बंग-भंग, जालियाँवालाबाग का हत्याकाण्ड, चौरी-चौरा काण्ड, प्रथम-द्वितीय महायुद्ध, गाँधीजी का सत्याग्रह, असहयोग आन्दोलन, उसका स्थगन, असेंबली में बम फेंकना, भगतसिंह आदि की फाँसी, साइमन कमीशन, नमक कानून तोडो आन्दोलन, भारत छोडो

आन्दोलन, पंजाब के आपरेशन ब्लूस्टार, इंदिरा गाँधी की हत्या, पंजाब में आतंकवाद, अयोध्या में बाबरी मस्जिद-राम जन्मभूमि का विवाद आदि का इस उपन्साय में उल्लेखन हुआ है। इनको उपन्यास में क्रम से नहीं दिखाया गया है। इनकी ऐतिहासिकता स्पष्ट करने के लिए कुछ घटनाओं की तिथियाँ दी गयी है और कुछ ऐतिहासिक पुरुषों के नाम भी।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकें स्वाधीनता आन्दोलन की दृष्टि से जनचेतना और प्रसार के काल थे। गाँधीजी के आगमन से भारतीय जनता में एक नवोन्मेष जागृत हुआ। अनशन तथा अहिंसा जैसे नये हथियार को लेकर गाँधीजी समरमुख में अवतरित हुए थे। गाँधीजी के असहयोग का खिलाफत से जोडकर हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करने का प्रयास हुआ था। हिन्दु-मुस्लिम के बीच दरार लाने का ब्रिटीश सरकार का प्रयास भी दिखाया गया है। कांग्रेस को हिन्दू संस्था बताकर मुसलमानों को उसमें शामिल होने से रोका गया।

स्वदेशी आन्दोलन सन् १९०६ में विपिनचन्द्रपाल और साहयोगियों के नेतृत्व में भारत भर आरंभ हुआ। विदेशी मालों का बहिष्कार इसका लक्ष्य था। कांग्रेस ने भी इनका सहयोग दिया। विदेशी मालों पर नेताओं ने यह आरोप लगाया कि अधिक सफेदी लाने के लिए विलायती चीनी, गाय और सुअर की हड्डियों से साफ की जाती है। और विलायती जूते-बूट पहनने से गऊहत्या का दोष लगेगा क्योंकि उसे गऊ के चमडे से बनाया जाता है। इन आरोपों से ब्राह्मण लोग इन मालों का विरोध करेंगे, नेताओं का लक्ष्य यह था।[1] हिन्दू-मुस्लिम के बीच दरार पैदा करने केलिए अग्रेजों ने

---

1. नागर, पीढियाँ, पृ - 123

'फूट डाले और राज करो' की नीति अपनाकर बंगाल को पश्चिमी बंगाल तथा पूर्व बंगाल - दो भाग में विभक्त किया गया। सन १९०५ में, लार्ड कर्जन द्वारा लिये गये इस फैसले पर लोगों ने हंगामा शुरू किया। कलकत्ता में हडताल और जुलूस हुए। जनविद्रोह के कारण आगे यह कानून रद्द कर दिया गया। जालियनवाला बाग की दुर्घटना भारत के इतिहास का सबसे बडी ट्रैजडी है। अंग्रेज़ों की दमन नीति के विरुद्ध एकत्र हुए लोगों पर सन् १९१९ अप्रैल १३ को जनरल डायर के नेतृत्व में गोली चलायी गयी। करीब एक हज़ार लोगों की मृत्यु इस दुर्घटन में हुई। 'इस घटना का विवरणात्मक चित्रण उपन्यास में दिया गया है।"[1]

पहला विश्व महायुद्ध सन् १९१४ से १९१८ तक था। भारत को इसमें ब्रिटन का साथ देना पडा था। सन् १९२० में गांधीजी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन शुरु हुआ। उपन्यास में चौरी चौरा के पुलीस थाने का आक्रमण का ज़िक्र भी हुआ है। पुलीस के आक्रमण से क्रुद्ध होकर लोगों ने थाने को आग लगाया था। इससे दुःखी होकर गाँधीजी ने असहयोग आन्दोलन स्थगित करने का आदेश दिया।"[2] उत्तर प्रदेश में जो किसान आन्दोलन चला था उसका उल्लेख भी उपन्यास में है।

अंग्रेज़ों ने भारतीय जन जागृति को दबाने के लिए दो कानुन बनाये थे - ट्रेड डिस्प्यूटस बिल जो मज़दूरों को हडताल के हक से वंचित करता था और दूसरा पब्लिक सेफ्टी बिल जिसका उद्देश्य था आज़ादी की बढती लहर को कुचलना। ८ अप्रैल सन् १९२९ को एसेंबली में पहला बिल पास हुआ। दूसरे की बारी आयी तो दो क्रान्तिकारियों ने बम फेंका, फिर पिस्तौल से फायर किया। वे क्रान्तिकारियाँ थे

---

1. नागर, पीढियाँ, पृ - 285
2. नागर, पीढियाँ, पृ - 296

बटूकेश्वर दत्त और भगतसिंह। उन्होंने एसेम्बली में 'हिन्दुस्तान सोशिल्स्ट पार्टी' के लेटर पैड पर अंग्रेज़ हुकूमत को चेतावनी दी थी। उपन्यास में इसका विवरण ऐसा दिया गया है - "बम-बम करके बहुत से लोग धबराहट के मारे उठ खडे हुए। ....यह पर्चे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी' के गुलाबी रंग के लेटर पैड टाइप थे। शीर्षक था-बहरो को सुनाने के लिए।"[1] सैमन कमीशन का विरोध[2] नमक कानून तोडो आन्दोलन[3], गाँधीजी का हरिजनोद्धार आन्दोलन[4] भारत छोडी आन्दोलन[5] और द्वितीय महायुद्ध[6] आदि कई प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं के जिक्र उपन्यास को ऐतिहासिक बना देती हैं।

स्वतंत्रता पूर्व इन घटनाओं के अलावा स्वातंत्र्या के बाद की कुछ ऐतिहासिक घरनायें भी उपन्यास में प्रस्तुत की गयी हैं। इन्दिरा गाँधी के समय के 'पंजाब के आपरेशन ब्लू स्टार', इसके परिणाम स्वरूप इन्दिरा गाँधी की हत्या, पंजाब में आतंकवाद, फिर दिल्ली में एन्टी सिख रायट, पंजाब में सिख टेरोरिज़्म, राजीव गाँधी के समय में रामजन्म भूमि वाली बाबरी मस्जिद का ताला खुलवाना आदि का जिक्र उपन्यास में हुआ है।

इन ऐतिहासिक घटनाओं के साथ कई ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम भी आ गये हैं। इन्हें कथा पात्रों के रूप में विकसित नहीं किया गया है, बल्कि उपन्यास की

---

1. नागर, पीढियाँ, पृ - 324
2. नागर, पीढियाँ, पृ - 323
3. नागर, पीढियाँ, पृ - 327
4. नागर, पीढियाँ, पृ - 355
5. नागर, पीढियाँ, पृ - 378
6. नागर, पीढियाँ, पृ - 374

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तैयार करते समय इनके नामों का उल्लेखन मात्र किया गया है। महात्मा गाँधी, जवहर लाल नेहरु, सरदार पटेल, सैयद अहमद खाँ जिसने अलिगढ में मोहम्मेडन ऐंग्लो ओरियन्टल कालज की स्थापन की थी, होमरुल लीग के प्रवर्तक मिसेज़ एनी बेसेंट तथा बालगंगाधर तिलक, हिन्दू महासभा के विनायक दामोदर सावरकर, मुस्लीम लीग के मुहम्मद अली जिन्ना, चन्द्रशेखर आज़ाद, पं. गोविन्द वल्लभ पन्त, एसेंबली में बम फेंकनेवाले वटूकेश्वर दत्त और भगत सिंह, भगत सिंह के साथ फाँसी पर चढाये गए सुखदेव तथा राजगुरु जैसे भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिये गये कई लोगों के नाम उपन्यास में आ गये हैं। स्वतन्त्र भारत के इतिहास के साथ इन्दिरागांधी, जनरल वैद्य जो आपरेशन ब्लू स्टार के समय सेनाधघ्यक्ष था, सन्त लोंगोवाल जो पंजाब के हत्याकाण्ड में मारे गये, जैसे आधुनिक भारत के कुछ इतिहास सम्मत व्यक्तियों का भी उल्लेख हुआ है।

'पीढियाँ' उपन्यास में भाषा तथा संवाद से भी ऐतिहासिकता लाने का प्रयास हुआ है। भाषा के अन्तर्गत लखनऊ, अयोध्या और कलकत्ते की खडीबोली का यथोचित प्रयोग हुआ है। अयोद्या की स्थानीय बोली का उदाहरण ऐसा मिलता है - "अरे बहुजी, जब पहल रामजी महजिद - माँ परगट भए रहे नां तो हुआ एक मिया भाई रहे कानेश्टेबिल।"[1]

अवध की ग्रामीण भाषा ऐसी है - "हमका तो छूवते डर लागत है।"[2]

बंगालियों के लिए उनकी बोली दी गयी है- "अबे चाटूजी नहीं, चाटूज्जे। अंग्रेज़लोग शाला होमारा उच्चारोन भ्रष्ट करके चाटोर्जी बना दिया।"[3]

---

1. नागर, पीढियाँ, पृ - 31
2. नागर, पीढियाँ, पृ - 121
3. नागर, पीढियाँ, पृ - 312

नागर के उपन्यासों में संवाद योजना का भी महत्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत उपन्यास में कई ऐतिहासिक घटनाओं का जिक्र पात्रों के संवाद से होता है। जैसे सुमन्त कहता है - "चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का बनवाया राम मन्दिर टूट गया। बाबरी मस्जित बन गयी। तब से इन पाँच-छः सौ वर्षों से इस भूमि ने कभी चैन के दिन नहीं देखे।"[1] उसी तरह बी.पी. वर्मा के मुँह से पंजाब के आपरेशन ब्लूस्टार, इंदिरा गांधी की हत्या, राजीव गांधी द्वारा रामजन्मभूमि का ताला खुलवाना आदि ऐतिहासिक तथ्यों का प्रकाशन उपन्यास में होता है।

प्रस्तुत उपन्यास की रचना शैली में भी आकर्षणीयता है। इसकी कथा आत्मकथात्मक शैली, पूर्व दीप्त शैली, डायरी शैली, वर्णनात्मक शैली जैसे कई शैलियों से आगे बढती है। संस्मरण के रूप में भी कई ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रकाश डाला गया है।

निष्कर्ष

नागरजी के उपर्युक्त ऐतिहासिक उपन्यासों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि इन उपन्यासों का ऐतिहासिक पक्ष सशक्त है। प्रत्येक उपन्यास भारतीय इतिहास के भिन्न-भिन्न कालों को पाठक के सामने व्यक्त करता है। नागरजी ने अपने उपन्यासों में प्रागैतिहासिक काल से लेकर समकालीन भारत तक के इतिहास के कुछ पक्षों को खोल दिया है। कुछ उपन्यासों मं घटनायें ऐतिहासिक हैं तो कुछ में पात्र और कुछ उपन्यासों का वातावरण ऐतिहासिक है। जो भी हो इतिहासबोध इन उपन्यासों की खासियत है। यह इतिहासबोध भारत के अतीत को समझने का मौका देता है, साथ

1. नागर, पीढियाँ, पृ - 29

ही साथ यह अतीत हमें क्या सिखाता है इसका अवबोध भी देता है। ये उपन्यास हमें भारत के भविष्य के बारे में सोचने का अवसर भी देते हैं। 'पीढ़ियाँ' जैसे उपन्यास उपन्यासकार की इतिहाससंबन्धी नुतनदृष्टि का पश्चिय देते हैं। आजकल सामयिक इतिहास की चर्चा साहित्यिक क्षेत्र में बहुत हो रही है। इसलिए इस दृष्टि से नागरजी का ऐतिहासिक प्रेम सराहनीय है और उन्होंने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों के द्वारा उपन्यास क्षेत्र में एक अलग पहचान बनायी है।

अध्याय 3

नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में काल्पनिकता

अध्याय ३

नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में काल्पनिकता

इतिहास और कल्पना के समन्वय से ऐतिहासिक उपन्यास जन्म लेता है। ऐसे उपन्यासो की यही एक विशेषता है कि इनमें कुछ इतिहास को प्रमुखता देते हैं तो कुछ कल्पना के सहारे औपन्यासिक स्वरूप प्राप्त करते हैं। इतिहास प्रधान ऐतिहासिक उपन्यासों मे भी कल्पना को गौण मानकर अलग नहीं रखा जा सकता। क्योंकि कल्पना उपन्यास का अविभाज्य अंग है। ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने केलिए काल्पनिक घटना, पात्र एवं वातावरण की सृष्टि की जाती है। मुख्य खटना इतिहास से है तो उसके लिए पृष्ठभूमि तैयार करने में कल्पना की सहायता ली जाती है। अगर किसी इतिहास पुरुष पर केन्द्रित होकर उपन्यास की रचना हो रही है तो उस व्यक्ति के चरित्र चित्रण में कल्पना इतिहास की मदद करती है।

इतिहासकार यदि कल्पना प्रवण न हो तो भी उसका काम चल रकता है। लेकिन ऐतिहासिक उपन्यासकार के लिए कल्पना शीलता अनिवार्य गुण है। ऐतिहासिक उपन्यासों में अतीत के मृतकाल को कल्पना के द्वारा जीवन्त एवं सरस बनाया जाता है। जब कभी इतिहास ऐतिहासिक उपन्यासकार की पकड से दूर हो जाता है तब कल्पना ही सहायक बनती है और उपन्यास को पूर्ण बनाती है। इतिहास और

कल्पना को सुचारु ढंग से मिलाकर प्रस्तुत करना सफल ऐतिहासिक उपन्यासकार का लक्षण है।

अमृतलाल नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में भी कल्पना का प्रयोग उचित ढंग से हुआ है। उनके 'सुहाग के नूपुर' तथा 'एकदा नैमिषारण्ये' की मुख्य कथायें काल्पनिक आधार पर रची गयी हैं। 'मानस का हंस' तथा 'खंजननयन' में यथाक्रम तुलसीदास तथा सुरदास की जीवनी को आकर्षक बनाने के लिए कुछ काल्पनिक पात्रों तथा घटनाओं को सम्मिलित किया गया है। 'शतरंज के मोहरे' तथा 'सात घूंघटवाला मुखडा' में इतिहास की नीरसता कम करते तथा तदयुगीन राजनैतिक सामाजिक परिस्थितियों को व्यक्त करने केलिए काल्पनिकता का उपयोग हुआ है। 'करवट' तथा 'पीढियाँ' में काल्पनिक कथा की पृष्ठभूमि में भारत के स्वतन्त्रता संग्राम तथा परवर्ती कुछ ऐतिहासिक घटनायें अंकित की गयी हैं। इन कल्पना पक्षों का विश्लेषण नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों के अध्ययन और मूल्यांकन में सहायक सिद्ध होगा।

शतरंज के मोहरे

अवध के नवाबी ज़माने की कथा कहनेवाला यह उपन्यास उस समय के सामाजिक, राजनौतिक तथा सांस्कृतिक वातावरण की सृष्टि भी करता है। मुख्य पात्र तथा परिस्थितियाँ इतिहास पर आधृत है, साथ ही कुछ काल्पनिक घटनाओं तथा पात्र भी हैं जो उपन्यास तथा उसमें निहित इतिहास को आकर्षक बना देती हैं। काल्पनिक पात्रों में दिग्विजय ब्रह्मचारी, नइम, कुल्सुम, भुलनी आदि के नाम मुख्य हैं। इन पात्रों के द्वारा कुछ सामाजिक पक्षों पर प्रकाश डाल गया है। इसके लिए प्रस्तुत घटनाये भी काल्पनिक हैं।

दिग्विजय ब्रह्मचारी उपन्याय का आदर्शपात्र है। इस दयालु एवं वीर पात्र के द्वारा उपन्यास में मानव मूल्यों का उद्घाटन हुआ है। जीवन भर वे अन्याय से लडते आये हैं। सौतेले भाई के लिए अपना घन और अधिकार त्यजकर वे विरागी बन जाते हैं। धर्म परिवर्तित भाई की मृत्यु होने के बाद उनकी बेटी कुल्सुम की रक्षा वे अपने कन्धों पर ले लेते हैं। कुल्सुम के रक्षार्थ वे समाज से बहुत लडते हैं। पर घोखे से उनके हाथों में कुल्सुम का अपहरण हो जाता है और वह वेश्या बनने के लिए मज़बुर हो जाती है। इस घटना से भीतर से टूट जानेवाले ब्रह्मचारी साधु जीवन बिताने लगते हैं। इस मानवतावादी चरित्र में अपने आदर्श पर अडिग रहने का मनोबल, अनीतियों के विरुद्ध लडने की शक्ति, साथ ही पवित्रता तथा सादगी जैसे उच्च गुण मैजूद हैं। इस पात्र के संबन्ध में कई काल्पनिक घटनायें उपन्यास में मिलती हैं।

नारी शोषण के शिकार हैं कुल्सुम और भुलनी। कुल्सुम दिग्विजय ब्रह्मचारी की भतीजी है। उसका पिता धर्मपरिवर्तित क्षत्रिय था। धार्मिक संघर्ष में माता-पिता के खो जाने के बाद चाचा ब्रह्मचारी उसकी रक्षा कर रहा था। पर समाज उसे वेश्या बनाकर छोडता है। ब्रह्मचारी के हाथ से कंजर लोग उसे उठा ले जाते हैं और उसे वेश्या बना देते हैं। भुलनी भी कुल्सुम की भांति समाज की अनीति तथा पुरुष की वासना का शिकार है। भुलनी स्वाभिमानी भारतीय नारी का प्रतीक है जिसमें आत्मसम्मान, आदर्श और सतीत्वन विद्यमान है। उस हरिजन बालिका पर एक अंग्रेजी अफसर आक्रमण करता है और उसके चरित्र का भंग करता है। इस घटना से समाज, विरादरी तथा माँ-बाप तक उसका तिरस्कार करते हैं। इस प्रकार अपमान सहकर वह जीना नहीं चाहती। नईम उससे विवाह का प्रस्ताव रखता है, पर स्वाभिमानी भुलनी इनकार करते हुए उससे कहती है - "जमराज से मोर बियाहु होई चुका महाराज।

जियै के बदे अपन धरम न छाँड़वा"[1] वह अपमान से बचने के लिए आत्महत्या करती है। यह पात्र अंग्रेजों की उच्छृंखलता तथा समाज की निस्संगता का शिकार है। पुरुष द्वारा नारी का अपमान होता है, फिर भी समाज नारी को ही दण्ड देता है, पुरुष बच जाता है। भुलनी ऐसी नारियों का प्रतिनिधित्व करती है।

नईमने भी काल्पनिक पात्रों में मुख्य स्थान पा लिया है। ऐतिहासिक पात्र दुलारी की चारित्रिक विशेषताओं को उभारने में इस पात्र का महत्वपूर्ण स्थान है। वह दुलारी का प्रेमी था और उसके साथ भाग जाने की योजना भी उसने की थी। इस संदर्भ में उपन्यासकार ने अपनी कल्पना शक्ति का खूब प्रयोग किया है। दुलारी से अलग होने के बाद वह भुलनी से मिलता है। अनाथ भुलनी से विवाह करने का प्रस्ताव वह रखता है। भुलनी के आदर्श और स्वाभिमान देखकर उसके दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आ जाता है। वह सच्चे प्रेम को पहचानता है। वह आदर्श निष्ठ बन जाता है और जब दुलारी एक बार फिर अपने प्रेम और संपत्ति के आकर्षण में उसे फँसाने की कोशिश करती है, तब वह उसे ठुकराता है। ब्रह्मचारी के समान उपन्यास में उच्च आदर्शों की स्थापना करनेवाला पात्र है नईम।

इन मुख्य पात्रों के अलावा कुछ अन्य काल्पनिक पात्र भी छोटी-छोटी भूमिका उदा करते हैं। वे हैं - लाला कुँअर, शिवनन्दन सिंह, फजल अली, कुछ बाँदियाँ आदि। इन पात्रों तथा इनसे संबन्धित काल्पनिक घटनाओं से तद्‌युगीन परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है और वास्तविक वातावरण सृष्टि करने में ये बहुत सहायक भी बन गये हैं।

---

1. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 101

सुहाग के नूपुर

तमिल महाकाव्य 'चिलप्पतिकारम' पर आधारित 'सुहाग के नूपुर' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में लिखा गया उपन्यास है। दक्षिण भारत की प्राचीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में रचित इसका प्रतिपाद्य सामाजिक समस्या है। कुलबधु और नगरवधु के बीच का संघर्ष इसका मुख्य विषय है। सामाजिक विषय पर चलने के कारण इसके मुख्य सभी पात्र कल्पना से निर्मित है।

कथा तमिलनाडु के 'कावेरीपट्टणम' नगर की पृष्ठभूमि में घटित होती है। व्यापार और धनवैभव के कारण उसका यश सुदूर तक फैला हुआ था। विदेशों के साथ उसका व्यापार संबन्ध था। बात के प्रमाण के लिए कई विदेशी व्यापारियों के नाम तथा उनकी बातचीत उपन्यास में दी गयी है। उस समय के सामाजिक वातावरण को दिखाने के लिए एक नृत्य समारोह का विशद वर्णन भी मिलता है. उस नृत्य महोत्सव में नगरवधुओं से एक श्रेष्ठ नर्तकी को 'कामदेव का धनुष' घोषित किया जाता था। माधवी को यह उपाधि प्राप्त होती है।

कोवलन, कन्नगी तथा माधवी इस उपन्यास के मुख्य पात्र हैं। ये तीनों काल्पनिक होने के कारण उनके द्वारा घटित प्रायः सभी घटनायें भी काल्पनिक हैं। कोवल और कन्नगी के विवाह की पहली रात में माधवी कन्नगी के अपमान करने की कोशिश करती है। इस घटना से कोवलन, कन्नगी तथा माधवी के चरित्र का एक चित्र पाठक को मिलता है। माधवी कन्नगी से उसके सुहाग के नूपुर अपनाना चाहती है और उसे अपनी कटु उक्तियों द्वारा अपमानित करने का प्रयास भी करती है। कोवलन मौन रहकर माधवी को इसके लिए सहमति देता है। पर कन्नगी अपने उच्च चरित्र, विनय और संस्कार से माधवी को जवाब देती है।

कन्नगी उन कुलवधुओं का प्रतीक है जो वासनायुक्त पुरुषों के कारण जीवन भर दुख भोगने के लिए मजबूर बन जाती है। कोवलन विवाह से पहले ही माधवी से प्रेम करता था और विवाहोपरान्त भी पत्नी कन्नगी की उपेक्षा करके उस नगरवधु के आकर्षण जाल में पडा रहता है। कन्नकी आदर्श पत्नी है। वह कभी भी पति का नियन्त्रण नहीं करती। सभी दुःख सहकर अपने पति-गृह में ही रहती है। अपना दुःख प्रकट करके ससुराल का अपमान करना भी उसे पसन्द नहीं था। उस साध्वी, पतिव्रता नारी की तपस्या का फल आखिर मिलती ही है। माधवी द्वारा तिरस्कृत कोवलन कन्नगी के पास लौट आता है। वह सारा धन-संपत्ति माधवी पर गँवा चुका था। कन्नगी का उच्च चरित्र यहाँ प्रकट होता है। वह पति को नयी जिन्दगी शुरू करने के लिए अपना अमूल्य संपत्ति अपने सुहाग के नूपुर-बेचने के लिए तैयार होती है। बाद में वह कोवलन को मृत्युदण्ड से बचाने का कार्य भी करती है। कन्नगी के सतीत्व की प्रशंसा करते हुए मधुरा महाराज कहते हैं - "दुविधा में बंधी हुई स्त्री कभी किसी भी पुरुष को बल नहीं दे सकती। ....सती ही अपने पुरुष को बल प्रदान कर सकती है क्योंकि वह द्विविधा से रहित होती है।"[1]

कन्नगी भारतीय दृष्ट से आदर्श पत्नी है। वह अपने पति की इच्छा को अपनी इच्छा समझती है। वह सर्वसहा होकर पतिकुल के अभिमान की रक्षा करती है। अपने ससुर द्वारा दिये गये सुहाग के नूपुर उसके लिए सारी धन दौलत से मूल्यवान है। माधवी उससे जब उसके धुँधरु बाँधने को कहती है तब वह कहती है - "बहन! मेरे देवतुल्य पतिकुल ने सुहाग के नूपुरों से मेरे पैरों को बाँध दिया है। ये धुँधरु तुम्हारे

---

1. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 249

ही पैरों में शोभा पायेंगे।"[1] इस प्रकार स्वाभिमानी, पति-भक्त एवं मर्यादाशील पत्नी के रूप में कन्नगी का चित्रण हुआ है।

माधवी नगरवधुओं का प्रतिनिधित्व करती है। कथागति का प्रमुख नियन्ता भी माधवी है। नगरवधुओं की बीच रहकर भी वह कुलवधु बनने का स्वप्न देखती रहती है। इस स्वप्न के साक्षात्कार के लिए वह कोवलन से शादी करती है। पर कोवलन तथा समाज उसे कुलवधू की प्रतिष्ठा नहीं देते। वह अपनी पुत्रि का नाम कोवलन के वंशवृक्ष में जोडकर उसको गौरव देने का प्रयास भी करती है। कोवलन उससे सच्चा प्यार करता है, पर उसे कुलवधू नहीं नगरवधू के रूप में ही रखता है। माधवी कन्नगी से कुलगौरव का प्रतीक 'सुहागा के नूपुर' अपनाना चाहती है। यह कोशिश भी असफल होने पर वह क्रुद्ध हो जाती है। वह कोवलन की सारी धन-संपत्ति हडपकर प्रतिशोध लेती है। यही नहीं वह कोवलन को तिरस्कृत करके एक राजपुरुष से प्रेम संबन्ध जोडती भी है। इसी से उसके जीवन का पतन शुरू होता है। राजपुरुष उसे अपमानित करके छोड देता है तो वह आत्मग्लानी से कराह उठती है। जब कावेरीपट्टणम बाढ में डूबा उसमें बहकर वह एक बौद्ध शिविर में पहुँचती है।

माधवी के द्वारा नागरजी ने वेश्या समस्या को उभारा है। माधवी द्वारा वे समाज से यह प्रश्न उठाते हैं कि ''शीलयुक्त, एकनिष्ठा पालन करनेवाली नगरवधू क्या कुलवधू के समान प्रतिष्ठा के लायक नहीं?"[2] माधवी कोवलन से एकनिष्ठ प्यार करती है और इसलिए वह अपने को कुलवधू का लायक समझती है। वह नगरवधू बनने के अपने निर्भाग्य को कोसती है। अपना दुःख प्रकट करती हुई वह चेलम्मा से कहती है

---

1. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 89
2. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 42

- "कितना अच्छा होता मौसी यदि हम इस विपत्ति न पडकर कुलीनों के समान ही जीवन का व्यवहार कर पाती।"[1] वह अपने घुंघुरुओं को छोडकर सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रतीक सुहाग के नूपुर अपनाना चाहती है। वह अपनी स्थिति पर हँसती है। कहती है "स्त्री का जीवन भी क्या है। उसे सती होकर भी चैन नहीं और वेश्या होकर भी नहीं।"[2] वह न कोवलन को अपना सकी और कुलवधू का गौरव। वह कोवलन से कहती है - "तुमने मेरे लिए कुछ भी नहीं किया। जो कुछ किया अपनी वासना की तृप्ति के लिए किया। और तुम जब अपनी सती पत्नी के नहीं बने तो मेरे क्या बनोगे।"[3] ये शब्द वासनायुक्त सभी पुरुषों के लिए एक प्रहार है।

नारी प्रधान उपन्यास 'सुहाग के नूपुर' का एक ही मुख्य पुरुष पात्र कोवलन है। पुरुष सत्तात्मक समाज तथा वासना युक्त पुरुषों का प्रतिनिधि है कोवलन। कन्नगी का पति और माधवी का प्रेमी - एक ही समय वह इन दोनों भूमिकायें निभाता है। लेकिन दोनों रूपों में वह पराजित और अशान्त है। वह पत्नी को दासी मात्र मानता है। विवाह की पहली रात में वह कन्नगी से कहता है - "पत्नी के रूप में पुरुष एक स्त्री को दासी बनाकर अपने घर लाता है, समझी।"[4] पुरुष जाति का दर्प वह हमेशा दिखाता है। पत्नी को विवाह की पहली रात में ही अपनी प्रेमिका के घर ले जाकर उसका अपमान करना इस दर्प का उदाहरण है।

कोवलन कभी-कभी आदर्श पति बनने का प्रयास तो करता है। माधवी को छोडकर कन्नगी का मात्र बनना वह चाहता है। पर वह विवश है। वह कन्नगी से कहता

---

1. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 40
2. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 46
3. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 220
4. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 83

है - "मेरी विवशता समझो देवी, मैं प्रेम के आकर्षण में तुम्हारी और माधवी की ओर समान रूप से खिंचा हुआ, परिस्थितिवश दो भागों में फटने के लिए बाध्य हो गया हूँ। .....मैं तुम दोनों में से किसी एक का नहीं हो सकता, पूर्ण रूप से स्वयं कभी अपना भी नहीं हो सकता।"[1] वह पत्नी से केवल सहधर्मिणी या मंत्राणी रूप नहीं चाहता, शायनकक्ष में उसे वेश्या भी बनना है।

कोवलन माधवी के प्रेम में आमग्न होकर उसका गुलाम सा बन जाता है। माधवी के कहने पर वह पत्नी को विवाह की पहली रात में ही माधवी के घर ले जाता है और कहता है - "लो प्रिये, तुम्हारी नई दासी को ले आया।"[2] लेकिन जब माधवी अपने दर्प से बहुत आगे निकलती है और कन्नगी का अपमान करने लगती है, कोवलन सह नहीं पाता। वह माधवी से छुटकारा पाना चाहता है। कई बार प्रयास भी करता है। पर उसके मोहपाश से बाहर निकलना उसके लिए असंभव था। अन्त में जब माधवी उसे तिरस्कृत करती है तब वह पत्नी का मूल्य जान लेता है। पत्नी ही उसे नयी जिन्दगी दे देती है।

कोवलन अहमग्रस्त पुरुष का प्रतीक है। वह नारी को सुख-सुविधा तथा वासनावृत्ति का उपकरण मात्र समझता है। लेकिन समाज से उपेक्षित पुरुष के लिए पत्नी का अंचल मात्र ही पनाह बन जाता है। पत्नी और परस्त्री के बीच डावाँ डोल करनेवाले पुरुषों का प्रतीक है कोवलन।

चेलम्मा, पेरियनायकी, पान्सा, नगरत्ना, मानाइहन, देवन्ती आदि पात्र भी कथा गति को विकसित करने में सहायक बनते हैं। चेलम्मा माधवी का नृत्य गुरु है।

---

1. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 146
2. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 88

वह अपने यौवन में सर्वश्रेष्ठ नर्तकी और सुन्दरी थी। इसीलिए घमण्डी भी। लेकिन बूढी हो जाने पर उसकी हालत करुणा जनक बन जाती है। धन, यौवन और सौन्दर्य की अस्थिरता को वह उम्र बढने पर पहचानती है। माधवी को वह समय-समय पर उपदेश देती है। बुढापे में नगरवधुओं की क्या दशा हो जाती है, इसका मिसाल है चेलम्मा का जीवन। पेरियनायकी, विदेशी व्यापारी पान्सा की प्रेमिका है और माधवी का पालन-पोषण उसने किया है। पेरियनायकी और पान्सा का प्रेम-संबन्ध आदर्शनिष्ठ है। कन्नगी की दासी देवन्ती तथा माधवी की दासी नागरत्ना भी काल्पनिक पात्रों की कोटि में हैं। इन सभी काल्पनिक पात्रों तथा घटनाओं के ज़रिए उपन्यासकार तद्‌युगीन सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं तथा संस्कृतिक पक्षों को प्रज्वलित करने में सफल हुए हैं।

सात घूँघटवाला मुखडा

'सात घूंघटवाला मुखडा' एक ऐसा उपन्यास है जिसमें इतिहास सम्मत बेगम समरू के रोमांचक एवं घटनापूर्ण जीवन का वर्णन आकर्षणीय ढंग से किया गया है। उपन्यासकार ने स्वयं बताया है कि यह इतिहास नहीं ऐतिहासिक चरित्र प्रधान उपन्यास है। इसलिए इसमें कल्पना का पाना स्वाभाविक ही है। लेकिन काल्पनिक पक्ष का बहुत कम उपयोग ही इसमें हुआ है।

इतिहास सम्मत बेगम समरू के जीवन पर आधारित प्रस्तुत उपन्यास में उसके जीवन की छिपी हुई बातें कल्पना की सहायता से कथानुकूल निर्मित की गयी है। जैसे, बेगम उर्फ दिलाराम के जन्म और बचपन के बारे में इतिहास चुप है। इसलिए उपन्यासकार ने कथा की गति और अकर्षण बढाने के लिए कल्पना की है कि उसका जन्म कश्मीर में हुआ तथा बशीर के पिता द्वारा उसका अपहरण हुआ। बेगम के अन्य पुरुषों के साथ अनैतिक संबन्ध स्थापित करना भी कल्पना है। कथारंभ में बशीर-मुन्नी

का प्रेम चित्रित है। मुन्नी-बशीर का प्रेम, मुन्नी को हज़ार अशर्फियों के लिए बशीर द्वारा बिकना, समरु के साथ उसका प्रेम-नाटक, फिर टॉमस से अनैतिक संबन्ध जैसे कई काल्पनिक प्रसंग उपन्यास में मिलते हैं।

उपन्यास को आकर्षक बनाने के लिए तथा ऐतिहासिक पात्र और घटनाओं के विकास के लिए बशीर, मेरी, मुश्तरी जैसे कुछ पात्रों की कल्पना की गयी है। लवसूल की शासन कुशलता दिखाने के लिए चिमाणाजी - तोताराम प्रसंग बहुत उपयुक्त है। बेगम के दिल की कठोरता दिखानेवाली घटना है मुश्तरी की हत्या। नवाब समरु से प्रेम करने की जुर्म में मुश्तरी को बेगम जीते जी आँखें फुडवाकर दीवाल में चुनवा देती है। यह उस समय की प्रचलित दण्ड-रीति थी। दास-दासियों के जीवन का कोई मूल्य नहीं था। शासकों के इच्छानुसार वे पलते थे, उनके विरोध पाने पर नष्ट भी होते थे। मुश्तरी इसका उदाहरण है। मुश्तरी की हत्या पर दुखी होकर नवाब समरू आत्महत्या करता है। इस घटना का आधार भी नागरजी की कल्पना है। क्योंकि इतिहासानुसार नवाब की स्वाभाविक मृत्यु हुई है।

उपन्यास में बहुत छोटे छोटे काल्पनिक पक्षों के द्वारा आकर्षणीयता बढाने का प्रयास किया गया है। पात्रों में भी बहुत कमं ही कल्पना जनित हैं, वे भी अप्रधान पात्र हैं। लेकिन इन काल्पनिक घटनाओं तथा पात्रों के बिना उपन्यास पूर्ण नहीं हो सकता। इसलिए इस विश्लेषण से यह बात सिद्ध होती है कि अतीत की संस्कृति और सामाजिक गतिविधियों को खुलकर दिखाने के लिए इतिहास की सहायता करनेवाला तत्व है कल्पना। इतिहास को इतिहास बनाने और उसे सही ढंग से औपन्यासिक रूप में प्रस्तुत करने के लिए कल्पना का योगदान उल्लेखनीय है।

एकदा नैमिषारण्ये

'एकदा नैमिषारण्ये' संस्कृति प्रधान उपन्यास है। देश की भावात्मक एकता इस उपन्यास के द्वारा उपन्यासकार का लक्ष्य है। इसका कथा सूत्र और मुख्य पात्रों का नाम पुराण से लिया गया है। उपन्यास की मुख्य घटना नैमिषारण्य में आयोजित महासत्र है। इस विषय को लेकर उपन्यास लिखने का कारण नागरजी ने उपन्यास की भूमिका में बताया है। पुराण से उन्हें यह ज्ञात हुआ कि नैमिष आरण्य में सुदूर अतीत में एक सांस्कृतिक आन्दोलन चलाया गया था। और इतिहास से यह पता चला कि भारशिवों और वाकाटक के शासनकाल में एक महान सांस्कृतिक आन्दोलन चलाया गया था।[1] पुराण और इतिहास की इन घटनाओं को जोडकर नागरजी ने एक कथा तैयार की जिसकी पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है और मुख्य पात्र पौराणिक। पौराणिक पात्रों का आधार भागवत पुराण है। पुराणों में इतिहास का अंश भी है और कल्पना भी। लेकिन पुराणों में निहित इतिहास का ठीक-ठीक कालगणना पूरी तरह संभव नहीं है। क्योंकि विद्वानों के अनुसार पुराणों की रचना काल और उनमें निहित घटनाओं के समय में करीब दो हज़ार वर्षों का अन्तर है। इसलिए 'एकदा नैमिषारण्ये' में प्रस्तुत पौराणिक पात्रों तथा घटनाओं को कल्पना के अन्दर रखकर विचार-विश्लेषण किया गया है।

उपन्यास के प्रमुख पौराणिक पात्र भार्गव सोमाहुति, नारद, सरजू वशिष्ठी, नैमिष के कुलपति शौनक, पुराण कथावाचक महात्मा सौति, आर्य भार्गवी आदि हैं। भार्गव सोमाहुति ही कथा का संचालक पात्र है। व्यास परम्परा के भार्गव अपने पूर्वजों

---

1. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, अपनी बात, पृ - 8

द्वारा संकलित अमूल्य ग्रन्थों को लिखित रूप देकर सुरक्षित रखना चाहते हैं। इसके लिए नैमिषारण्य को उचित स्थान समझते हैं। उनके इस प्रयास में उन्हें नैमिषारण्य के कुलपति गणपति नाग, कथावाचक सौती, नारद जैसे कई महापुरुषों से सहायता मिलती है। भार्गव महाभारत संहिता को लिखने के लिए आचार्य गणपति नाग को चुन लेते हैं। इस घटना को पुराण से समानता है। पुराण के अनुसार व्यास मुनि ने भगवान गणपति से महाभारत लिखवाया था। और उन दोनों के बीच जिन शर्तों को रखा गया था वे इस उपन्यास में भी हैं। उपन्यास में गणपति नाग का शर्त यह था कि भार्गव को धारा प्रवाह काव्यालाप करना होगा और भार्गव ने ऐसा शर्त रखा कि गणपति जो लिखते हैं उसका अर्थ उन्हें ही बताना होगा। महाभारत के संबन्ध में ऐसा कहा जाता है कि उसका प्रवचन सबसे पहले महर्षि व्यास ने अपने शिष्य वैशम्यायन के सम्मुख किया था। वैशम्यायन ने जनमेजय को यह कथा सुनायी। महाभारत का तीसरा संस्करण भार्गववंशी कुलपति शौनक के समय में हुआ था। हर बार इसमें बहुत से नए आख्यान व उपाख्यान जोड दिये गये थे। उपर्युक्त घटनाओं के आधार पर नागरजी ने उपन्यास की रचना की है।

उपन्यास की मुख्य कथा, केन्द्रपात्र भार्गव सोमाहुति है। सोमाहुति से संबन्धित कई काल्पनिक कथायें मिलती हैं। उनके पिता और ज्येष्ठभाई की कथा, भाई की हत्या संबन्धी घटना, फिर नैमिष में महासत्र के आयोजन के लिए सोम का प्रयास आदि छोटी छोटी घटनायें उपन्यास के कथापक्ष को विकसित करती हैं। सोमाहुति और इज्या का प्रेम संबन्ध और फिर विवाह जीवन उपन्यास की मुख्य काल्पनिक कथा है। इज्या से उनकी भेंट एक वन में हुई थी। इसका विशदवर्णन उपन्यास में है। वन में एक दुराचारी पुरुष के हाथ से सोम ने उसे बचाया था। उसके बाद वह सोम की माता के

साथ रहती थी। सोम और इज्या के प्रेमपूर्ण जीवन और आपसी श्रद्धा को दिखानेवाली घटनायें पाठकों के मन में आनन्द भर देती हैं।

व्याम सोमाहुति ने राष्ट्रीय समन्वय को लक्षित करके ज्ञान, कर्म और भक्ति का समन्वय चाहा। उनके अनुसार संस्कृति की भावात्मक एकता से मानव की उन्नति साध्य है। उनका कहना है - "अनेकता निःसन्देह मानवीय है, किन्तु अनेकता में एकता के दर्शन करनेवाला ही श्रेष्ठ श्रद्धावान होता है।"[1] उन्होंने प्रत्येक नर-नारी को जागृति का मंत्र दिया है कि "धर्मप्राण नर-नारी वृन्द सचेत हों, अपनी क्लीवता त्यागें। धर्म को पहचाने और अधर्म का नाश करने के हेतु कृतसंकल्प हो जाय-यतो धर्मस्ततोज्य।"[2] नाना प्रकार की शक्तियों को एकनिष्ट बनाना उनका उद्देश्य है, वे आत्म संयमी, सौम्य एवं शान्त कर्मठ व्यक्तित्व के अधिकारी हैं।

दूसरा प्रमुख पौराणिक पात्र है नारद। उपन्यास का नारद कण्ववंशी देवव्रत हैं। नारद परम्परा के एक वयोवृद्ध नारद से नारद गद्दी का उत्तराधिकार पाकर वे नारद बन गये थे। पुराण के अनुसार नारद ब्रह्म का पुत्र हैं। उपन्यास का नारद उस नारद की परम्परा के अनुयायी हैं। नारद धुमक्कड प्रकृति के हैं और हरिभक्त भी। उपन्यास में उनका चित्रण ऐसा किया गया है - "वेद, उपनिषद्, पूर्व उत्तर मीमांसा, स्मृति, छंद, ज्योतिष, व्याकरण आदि अनेक शास्त्रों के पंडित, इतिहास, पुराणों के व्याख्याता, राजनीति और व्यवहार - शास्त्र मर्मज्ञ महर्षि नारदजी संगीत और नृत्य के महापंडित और विपुल कलाधर थे।"[3]

---

1. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 427
2. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 292
3. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 4

नारद के संबन्ध में कुछ हास्यास्पद घटनाओं का चित्रण भी मिलता है। उपन्यासारंभ में ही ऐसी एक घटना का चित्रण है। नारद अपने भ्रमण के बीच कामवृन्दावन में पहुँच गये। वहाँ के पोखर में स्नान करती हुई नग्न वृन्दाओं को देख लेनेवाले पुरुष को फिर स्त्री बनकर रहना पडता है, ऐसी एक प्रथा वहाँ प्रचलित थी। नारद इस प्रथा में फँस गये। उन्हें नारीवेश धारण करना पडा। वृन्दाओं का तर्क था "यह पुरूरवा और उर्वशी के काल से होता चला आया है।"[1] इसका और एक उल्लेख भी उपन्यास में एक जगह मिलता है - "हरगौरी वन के मातृसत्तात्मक नियमानुसार पुरुरवा के पिता सुघुम्न को 'इला' नामक स्त्री बनना पडा ऐसी एक कथा को उद्घृत किया गया है।"[2] कामवृन्दावन की तुलसी वृन्दाओं को नारद ने प्रेमाराधना करने के लिए शालिग्राम दे दिया। इस पौराणिक प्रथा के समान आचरण आजकल भी व्रज में मिलता है। वहाँ कार्तिक शु.।। को तुलसी शालिग्राम के विवाह का लोकोत्सव होता है। उस दिन देवालय मे पूजित शालिग्राम शिला के साथ भावूक स्त्रियाँ अपनी तुलसी के विवाह का आयोजन करती है।'[3] नारद के संबन्ध में और एक कथा भी है। नारद परम्परा के एक नारद को अपनी हरिभक्ति पर गर्व था। भगवान विष्णु ने उन्हें अपनी माया से अहंकारमुक्ति कराया। इसके लिए विष्णु ने नारद को लेकर एक मरुभूमि में पहुँचा और वहाँ विष्णु ने नारद से पानी माँगा। पानी के लिए नारद एक घर पहूँचे और वहाँ की लडकी से शादी करके वहाँ रहने लगे। उनके तीन बच्चे हुए। अचानक वहाँ प्रलय हुई और नारद की पत्नी तथा बच्चे उसमें डूब गये। इस पर रोते रहते समय नारद विष्णु से मिले तभी जान गया कि वे सब भगवान की माया थी। वहाँ न प्रलय

---

1. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 2
2. नागर, एकदा नैमिषारण्ये
3. प्रभु दयाल मीतल, व्रज का सांस्कृतिक इतिहास पृ - 274

६४४९१

थी और न कोई मरुभूमि। आधे घण्डे में नारद को अनेक वर्ष बीतने का भ्रम ही हुआ था। यह एक हास्यास्पद कथा है जो उपन्यास को सरस बना देती है। उपन्यासान्त में नारद का गृहस्थ जीवन दिखाया गया है। नारद उस जीवन से अशान्त थे। इसलिए वे सन्यासी बनकर हिमालय प्रस्थान करते हैं। उपन्यास का आरंभ नारद से होता है और अन्त भी। मुख्य पात्र भार्गव सोमाहुति के सहायक तथा मित्र के रूप में उपन्यास में नारद का उल्लेखनीय स्थान है।

भारत चन्द्र, प्रज्ञा, इज्या, सरजू वशिष्ठी जैसे काल्पनिक पात्र भी इन पौराणिक पात्रों के साथ अपनी भूमिका निभाते हैं। भारत चन्द्र प्रकाण्ड पण्डित और योगविद्या में निपुण थे। पर लूटेरों के आक्रमण से उनकी बुद्धि खो गयी। अबोध स्थिति में उन्होंने अपने इकलौते पुत्र को मार डाला। भार्गव सोमाहुति के प्रयास से वे पुनः आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं और उसे बुद्धि वापस मिलती है। वे सम्राट चन्द्रगुप्त के शासन में सहायक बनते हैं। प्रज्ञा भारत की पत्नी है। वह पति द्वारा अपने इकलौते पुत्र की हत्या होने पर टूट गयी थी। उसने एक बार साँप के कुण्ड में कूदकर खुदकुशी करने का प्रयास किया था। भार्गव ने उसे बचाया था। भार्गव और नारद की सहायता से पुनः वह पति सेवा में निरत हुई।

उसके उचित व्यवहार से भारत को बुद्धि वापस मिलती है। प्रज्ञा और इज्या बहनें जैसी जी रही थीं। इज्या की मृत्यु के बाद उसके पुत्र की रक्षा प्रज्ञा करती है। उसका रूप भी सुन्दर है। उसका विवरण इस प्रकार दिया गया है - "साँचे में ढली तन्वंगी श्यामा देह में, सुघड़ नाक-नक्श में निश्चय ही सौन्दर्य है, पर मूल रूप से आकर्षण उसके भाव सौन्दर्य में है। करुणा मानो शरीर धारण कर सामने आ गयी हो और अपने संपर्क में आनेवाली हर वस्तु को आत्मवत् बना रही हो, जिससे दृष्टि और

दृश्य का भेद ही मिट गया हो।"[1] उसके करुणा और प्रेम का परिचय देनेवाले हैं उसके पति के ये शब्द - ''यह मेरे लिए सुमेरू के समान है। कभी यह मेरे लिए प्रकाश ही प्रकाश थी - सुमेरु के दीर्घकालीन दिवस जैसी।''[2]

इज्या, भार्गव सोमाहुति के लिए प्रेरणा है। भार्गव उसका रक्षक है। वह भार्गव की लक्ष्यप्राप्ति के लिए अपनी इच्छाओं को त्यजती है। वह भार्गव को शादि से तब तक रोकती है जब तक उनकी लक्ष्य प्राप्ति नहीं होती। नैमिष सत्र के आरंभ होने के बाद भार्गव-इज्या की शादि होती है। वह पति के सुख दुःख में सहज भाव से समर्पित है। उसमें साहस भी विद्यमान है। इसका मिसाल प्रकट करनेवाली एक घटना भी उपन्यास में मिलती है। कुछ आक्रमणकारियों द्वारा सोम के आश्रम पर हमला हुआ और वे उनके अमूल्य ग्रन्थाकार सब लूटकर चले गये। इज्या ने उनको रोकने का बहुत प्रयास किया। वह बहुत समय तक उनसे लडती रही। उसने अपनी जान की चिन्ता न करके भार्गव की अमानत की रक्षा करने का प्रयास किया। माता के रूप में भी वह उत्तम है। इज्या आदर्श प्रेमिका, पत्नी और आदर्श माता है।

तपस्विनी सरजू विशिष्ठी आजन्म ब्रह्मचारिणी और परम कुटनीतिज्ञ हैं। उनमे करुणा, प्रेम, भक्ति के साथ ही दृढता, कठोरता और घृणा आदि भी विद्यमान है। "उनका हृदय मैदानों जैसा व्यापक और विशाल है, किन्तु वह ऊसर मरूभूमि है। जैसे मरुस्थल की मृगमरीचिका दृष्टि को बाँधती है, वैसे ही सरजू मैया की करुणा भी दूर से असीम श्वेत झील-सी झलकती है, पर निकट जाने पर वह कोरी मृगमरीचिका ही सिद्ध होती है।"[3] वे नागेश्वर के विरुद्ध लडती रहती हैं। चन्द्रगुप्त के शासक बनने के पीछे सरजू वासिष्ठी का दृढ निश्चय था।

---

1. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 47
2. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 91
3. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 381

अन्य काल्पनिक पात्रों में योगिराज नागेश्वर सन्त बुरबुज, पुराण कथावाचक महात्मा सौति, सोमपुत्र प्रचेता, नर्तकी लवण शोभिका, शाहगुल, आदि भी हैं। इन पौराणिक तथा काल्पनिक पात्रों के द्वारा इतिहास, पुराण, आध्यात्मिकता सामाजिकता आदि कई विषयों का चित्रण उपन्यास में संभव हुआ है। जिन काल्पनिक घटनाओं का अंकन हुआ है उनसे उपन्यास की आकर्षणीयता और कथागति के विकास में सहायता मिली है।

मानस का हंस

महाकवी तुलसीदास की जीवनी पर आधृत 'मानस का हंस' में काल्पनिक पक्ष बुलंद है। जीवनी को उपन्यास बनाने के लिए कल्पना की भी आवश्यकता है, नहीं तो जीवनी जीवनी ही रह जायेगी, उपन्यास नहीं। यह जीवनी किसी इतिहास पुरुष की हो तो उपन्यास में ऐतिहासिक झलक भी मिलेगी। इतिहास को आकर्षक बनाने के लिए भी कल्पना सहायक है। इन दोनं प्रकारों से 'मानस का हंस' का काल्पनिक पक्ष महत्वपूर्ण है।

उपन्यासारंभ में ही उपन्यासकार की कल्पना-शक्ति दिखाई पडती है। प्रकृति चित्रण में नागरजी की कल्पना हम देख सकेंगे - "बादल ऐसे गरज रहे हैं मानो सर्वग्रासिनी काम क्षुधा किसी संत के अन्दर आलोक को निगलकर दम्भ-भरी डकारे ले रही हो। ....भक्ति चमक उठती है।"[1] तुलसी के जन्म समय का वर्णन भी कल्पना की उपज है। इतिहासानुसार तुलसी बचपन से ही माता-पिता से तिरस्कृत हो चुके थे। उनके अन्तः-साक्ष्य इसका प्रमाण देता है।[2]

---

1. नागर, मानस का हंस, पृ - 7
2. तुलसी, कवितावलि (7/72, 7/57, 7/73)

उपन्यास में इस बात को ऐसे प्रस्तुत किया गया है कि तुलसी को जन्म देते ही माता की मृत्यु हुई और पिता ने उसे जन्मकुण्डली में दोष होने के कारण छोड दिया। तुलसी के मामा द्वारा बधावा का भेजना, पिता आत्माराम द्वारा नक्षत्र विचार, तुलसी को छोडने के लिए दासी को सौंपना जैसी घटनायें कल्पना निर्मित हैं। इसी प्रकार तुलसी के दुःखपूर्ण बचपन, पार्वती अम्मा द्वारा पालन-पोषण आदि बातों का भी प्रमाण नहीं। तुलसी के बचपन के समय अयोध्या की क्या सामाजिक - राजनैतिक स्थिति थी इसका विवरण भी काल्पनिक ढंग से दिया गया है। शेषसनातन की पाठशाला में पढते समय भृत्य का काम करना, बटेश्वर की चुनौती स्वीकार करके आधी रात को श्मशान में जाकर शंखनाद करना, आदि काल्पनिक प्रसंगों से नागरजी ने तुलसी दास के आरंभिक जीवन की महत्वपूर्ण विशेषताओं का अंकन किया है।

तुलसीदास को अध्यापक रूप में भी उपन्यास में चित्रित किया गया है। लेकिन इस बात का भी कोई प्रमाण नहीं। ऐसा चित्रित करने से नागरजी अपने नायक को पण्डित तथा अध्यापक वृत्ति के लायक सिद्ध करना चाहते हैं। मोहिनी-प्रसंग का भी ऐतिहासिक आधार नहीं। आमुख में नागरजी स्वयं कहते हैं कि "मृगनयनी के नयन सर को अस लगि न जाहि' उक्ति गवाही देती है कि नौजवानी में तुलसी किसी के तीरे-नीमकश से बिंधे होंगे।"[1] इसके आधार पर मोहिनी का निर्माण हुआ है। इस प्रसंग द्वारा तुलसी की भावुकता, संवेदनशीलता, कलानिष्ठा और रागात्मक वृत्ति का परिचय मिलती है। तुलसी के मन में राम और काम के बीच संघर्ष चलता है और रामपक्ष भी विजय होती है। तुलसी की निष्ठापूर्ण भक्ति का परिचय भी इस घटना से होता है। मेधा भगत और कवि कैलास को बन्दी बनाये जाने की घटना मुगल शासकों

---

1. नागर, मानस का हंस, आमुख पृ - 5

के अत्याचार और दमननीति का चित्र प्रस्तुत करनेवाली है। तुलसी के ज्योतिष ज्ञान और उनके व्यक्तित्व का प्रभाव का संकेत भी इससे मिल जाता है।

तुलसी पत्नी रत्नावली को छोडकर विरक्त होने का संकेत इतिहास में है। लेकिन इसके लिए जो कारण उपन्यास में दिया गया है वह जनश्रुति के आधार पर लिखा गया है। इसलिए तुलसी का रत्नावली पर अत्यधिक मोह तथा इस बात पर रत्ना द्वारा अपमान और तुलसी का घर छोड जाना आदि घटनाएँ काल्पनिक ही कहनी होंगी। गृहत्याग के बाद का रामकली संदर्भ भी शुद्ध काल्पनिक है। यह भी राम-काम संघर्ष को दिखाता है।

तुलसी की बढती हुई ख्याति से उनके विरोधियों की संख्या भी बढी। विरोधियों की करतूतों से संबंधित विभिन्न घटनायें उपन्यास में जोडी गयी हैं जिन्हें कल्पना सृष्टि कही जा सकती है। रत्नावली एक बार उनसे मिलने आती है और साथ रहने की अनुमति मांगती है। पर तुलसी इनकार करते हैं। इससे तुलसी के विरक्तिभाव, भक्ति की एकनिष्ठता तथा दृढ निश्चय का प्रमाण मिलता है।

उपन्यास में प्रस्तुत इन काल्पनिक घटनाओं पर विचार करने पर इस निष्कर्ष पर हम पहूँच सकते हैं कि एक औपन्यासिक रचना होने के कारण 'मानस का हंस' में निहित कल्पना पक्ष भी जीवनी और इतिहास पक्ष की तरह ही महत्वपूर्ण है। उपन्यास की ऐतिहासिकता की रक्षा करते हुए ही इन काल्पनिक अँशो को जोडा गया है।

खंजननयन

'खंजननयन' के मुख्य पात्र कवि सूरदास की जीवनी को उपन्यास रूप में प्रस्तुत करने में कल्पना का स्थान उल्लेखनीय है। इतिहास पुरुष सूर के जीवन से

संबन्धित प्रामाणिक बात बहुत कम ही उपलब्ध होती हैं। इसलिए इन कम प्रमाणों से एक जीवनी परक उपन्यास तैयार करने के लिए कई काल्पनिक घटनाओं और काल्पनिक पात्रों का निर्माण उपन्यासकार ने किया है। मुख्य पात्र सूर के बचपन से लेकर अन्त तक की अधिकांश घटनायें जो उपन्यास में मिलती हैं वे काल्पनिक हैं। सूर, वल्लभाचार्य तथा विट्ठलदास आदि इतिहास पुरुषों के अलावा शेष मुख्य पात्र भी कल्पना से निर्मित हैं।

पहली कल्पना उनसे माता-पिता तथा भाईयों के संबन्ध में है। इनके संबन्ध में कोई भी आधार भूत प्रमाण उपलब्ध न होने के कारण जनश्रुति के आधार पर उपन्यास में घटनाओं का चित्रण किया गया है। सूर के पिता को भागवत गायक और एक भाई को संगीतप्रिय दिखाया गया है। इतिहासानुसार सूर ने अपने बाल्य में ही घर छोड दिया था। इस बात को बल देने के लिए और इसके लिए पीठिका तैयार करने केलिए सूर के प्रति पिता का क्रोध और भाइयों की ईर्ष्या आदि चित्रित की गयी हैं। सूर की कृष्ण भक्ति और कृष्ण के साथ सख्यभाव आदि उनकी ही कृतियों से प्रमाणित हैं। इससे संबन्धित एक घटना का वर्णन भी उपन्यास में मिलती है। यह घटना ऐसी है कि एकाकी सूर को उनकी माँ ने कृष्णमूर्ति से मिलाकर कृष्ण के साथ सख्यभाव जोड देती है।[1] उसी दिन से कृष्ण को सूर अपना सखा मानने लगते हैं। सूर और इस कृष्णसखा की आपसी बातचीत के अनेक प्रसंग उपन्यास में मिलते हैं जो उपन्यासकार की कल्पना को दर्शाता है।

सूर की ज्योतिष विद्या की सिद्धि दिखाने के लिए भी कई काल्पनिक घटनाओं का रूपायन हुआ है। चन्दलमल के घर में जो भविष्यवाणी सुनाते हैं यह

---

1. नागर, खंजननयन, पृ - 18

इसका उदाहरण है।[1] लाला हलास राय के घर में इन्द्रजाल दिखाकर उनके घरवालों में श्रद्धा उत्पन्न करना[2] भी सूर की यशप्राप्ति का मिसाल है। उपन्यास का आरंभ ही एक काल्पनिक घटना से होता है। कालू मल्लाह की नाव पर लूटेरों का आक्रमण, नाव का पानी में लापता होना और फिर सूर की ज्ञान दृष्टि से उसका पता चलाना आदि के चित्रण से भी सूर की अद्‌भुत सिद्धियों का प्रकाशन नागरजी का उद्देश्य है। सूर के महत्व और लोकप्रियता दिखाने के लिए प्रस्तुत इन घटनाओं के साथ उनके विरोधियों का कुकर्म भी दिखाया गया है। मथुरा में रहते समय कुछ ईर्ष्यालु लोगों ने सूर और उनके साथी कंतो को उनके सोते समय विवस्त्र बनाकर एक नाटक खेला। सूर के भक्तों के सामने उन्हें अपमानित करना विरोधियों का लक्ष्य था। लोग उन दोनों को दोषी मानकर पीटने लगे। वारणासी में रहते समय सूर को कुएँ में गिराकर मार डालने का प्रयास एक दुष्ट व्यक्ति ने किया था।

उपन्यास का सबसे आकर्षक काल्पनिक प्रसंग नागराज से संबन्धित है। जब भोलानाथ की कोठरी में सूर रहते थे तब एक नाग से उनका स्नेह संबन्ध था। सूर उसे दूध पिलाते थे। एक दिन केंचुली से नाग की आँखें ढक गयी तो सूर ने उसे बचाया था। यह काल्पनिक कथा सूर की सहजीवियों के प्रति हमदर्द उद्‌घाटित करती है।

सूर संबंधी कई घटनाओं के अलावा कल्पित पात्र कंतो से संबन्धित सभी घटनायें भी काल्पनिक हैं। नागरजी की कल्पना का उपज है कंतो मल्लाहिन। एक किंवदन्ती के आधार पर कंतो की सृष्टि की गयी है। उपन्यासकार ने भूमिका में बताया है कि उन्होंने सुना है कि सूर किसी मल्लाहिन के इश्किया चक्कर में फंसकर एक बार

---

1. नागर, खंजननयन, पृ - 31
2. नागर, खंजननयन, पृ - 50

बुरी तरह से मारे-पीटे गये थे।[1] इसी जनश्रुति की आधार भूमि पर कंतो का चयन सूर की प्रेमिका के रूप में किया गया है। कंतो कानी और विरूप है। पर उसका स्वर मधुर है सूर उसकी सुरीली आवाज़ से आकर्षित हो जाते हैं। उसकी निकटता सूर में वासना जागृत करती है। ऐसे सन्दर्भों में कभी स्वयं कंतो ही उन्हें काबू में लाती है और कभी उनके अन्तर्मन का श्याम सखा।

कंतो नारी शोषण का शिकार है। कानी और कुरुपा होकर भी पुरुष उसे नहीं छोडते। कंतो पर एक शरणार्थी वंशभ्रष्ट राजा आक्रमण करता है। उससे बचने का साहस कंतो में था। अपमान से वह देवी से चण्डी बन जाती है। नारी के कठोर भाव का चित्रण इस काल्पनिक प्रसंग से होता है। कंतो सूर के प्रति अत्यधिक प्रेम रखती है। उनके लिए वह अपना प्राण तक न्योच्छावर करती है। कुछ मुसलमान जब सूर पर अत्याचार करते हैं तब उन्हें बचाने के प्रयास में उनके हाथों से उनकी हत्या हो जाती है। उसका सारा जीवन उसने सूर के लिए कुरबान किया। इस प्रकार 'कंतो' सूर नामक इतिहास पात्र के चरित्र-विकास के लिए निर्मित है। कथा को गति देने और सरस बनाने में इस कल्पना-प्रसूत पात्र का स्थान बहुत बडा है।

'खंजननयन' के अन्य काल्पनिक पात्र हैं पं. शूलपाणि, हीरो बाबा, पं. सीताराम, दाऊ बाबा, स्वामी ब्रह्मानन्द, चन्दनमल, उजागरमल, हुलासराय, छिदम्मीलाल आदि। लाजो, सुनैना, गंगा, अनारो जैसे कुछ काल्पनिक नारी पात्र भी हैं जिन्हें अप्रमुख ही कहा जा सकता है। पं. शूलपाणि और सीताराम दोनों सूर के गुरू है। सूर के व्यक्तित्व विकास में दोनों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शूलपाणि गुरु से ज्योतिष विद्या और स्वामी ब्रह्मानन्द से संगीत सीखकर सूर ने अपनी जीवन यात्रा आरंभ की थी।

---

1. नागर, खंजननयन, पृ - 6

चन्दनमल, उजागरमल, हुलासराय जैसे व्यापारियों की प्रस्तुति से तत्कालीन सामाजिक और आर्थिक स्थिति का पता चलता है। चन्दनमल एक धनी व्यापारी है। बडे व्यापारों के अलावा चोरी छिपके काला धन्धा भी करता है। अफसरों और शासकों को खुश करने में वह सतर्क है। वह बडा भक्त भी है। अपने बुरे कामों का प्रायश्चित वह घर में भजन-कीर्तन करवाकर कर देता है। उजागर मल तथा हुलासराय भी व्यापारी लोग हैं। ये तीन सूर के भक्त भी हैं।

छिदम्मी लाल और चक्रपाणि सूर के विरोधी हैं। छिदम्मी काशी के गुण्डों का सरदार था। उसे जोनपुर के बादशाह ने 'मल्लमार्तण्ड' की उपाधि प्रदान की थी। लोग उसे भी डर के मारे कर देते थे। सिकन्दर लोदी के आक्रमण के बाद बनारस में गुंडों का राज बढ गया था। छिदम्मी इनमें एक था। उसने सूर को भी अपने वश में लाने का प्रयास किया। इस प्रयास में पराजित होकर उसने सूर को कुएँ में डालकर मारने तक की कोशिश की। लेकिन सूर का महत्व जानकर अन्त में उसने सूर के आगे सिर झुका दिया। चक्रपाणि ने भी सूर को मारना चाहा पर वह प्रयास भी असफल बन गया।

शकुर खाँ और नूर खाँ जैसे पात्रों की सृष्टि से मुसलमानों का अत्याचार दर्शाना उपन्यासकार का लक्ष्य है। उन दोनों ने मिलकर हिन्दू होने के कारण सूर से कोल्हू चलाया और कंतो की हत्या की थी। मुसलमानों की धार्मिक कट्टरता का संकेत इस घटना के माध्यम से प्राप्त है।

भोले गुरु और कालू केवट ऐसे काल्पनिक पात्र हैं जिनके कारण सूर की सिद्धियों की बात सब कहीं फैल जाती है। दोनों विरुद्ध चरित्र की हैं कि एक अपने चरित्र की रक्षा के लिए हत्या तक करती है, तो दूसरी अपनी काम वासना से पुरुषों को फंसाती है। लाजो भारतीय आदर्श से भरी नारी है जो दो पठानों की हत्या करके

अपने मान की रक्षा करती है। सूनैना सूर की दासी थी जो अपनी वासना से सूर को भ्रमित करती है।

इन काल्पनिक पात्रों से उपन्यासकार ने सूर की जीवनी को अधिक जीवन्त और आकर्षक बना दिया है। उपन्यासकार द्वारा प्रयुक्त यह काल्पनिकता सूर के जीवन चरीतात्मक इस उपन्यास को और सफल एवं प्रामाणिक सिद्ध करने मे सहायक हुई।

करवट

'करवट' की भूमिका मे उपन्यासकार ने यह बताया है कि अंग्रेजी शिक्षा के कारण भारतीय समाज में आये परिवर्तनों का इतिहास काल्पनिक पात्र-पत्रियों के द्वारा प्रस्तुत उपन्यास में अंकित किया गया है।[1] करवट की मुख्य कथा काल्पनिक है। खत्री परिवार की कथा के साथ कुछ ऐतिहासिक घटनायें भी चित्रित करनेवाले इस उपन्यास की मुख्य सभी पात्र काल्पनिक हैं।

मुख्य पात्र तनकुन उर्फ बंसीधर टण्डन के जीवन की विविध घटनाये जोडकर उपन्यास की कथा तैयार की गयी है। तनकुन जैसे एक काल्पनिक पात्र के द्वारा उस समय के सामाजिक और राजनैतिक वातावरण को दर्शाना उपन्यासकार का उद्देश्य है।

नवाबी महलों में उस समय अनेक षड्यन्त्र चलते थे। बीवियाँ, रखैल तथा दास दासियाँ मिलकर महल से धन चुराना भी उस समय बहुत आम बात बन गयी थी। इस प्रकार की एक घटना का चित्रण हस्सो के माध्यम से होता है। हस्सो जो बादशाह

---

1. नागर, करवट, पृ - 7

की प्रेमिका है हैदरीखाँ और रसुल बाँदी की सहायता से बादशाह के बुरे वक्त में महस से जेवर चुराकर भाग जाती है।

गाँव में चलनेवाले कई अत्याचारों का पर्दाफाश भी हुआ है। रसूलपुर ग्रण्ट गाँव की भूमि अपनाने के लिए वहाँ के शिवाले के पूजारी ने एक कपट नाटक खेला। पूजारी के लोगों ने उस भूमि में पानी भरा एक कलसा डाला। और लोगों में यह विश्वास जगाया कि उस खेत में शंकर भगवान प्रकट हुए है। भक्ति से उन्मत्त गाँववालों ने वहाँ शंकर का मन्दिर बनवाने का निश्चय ले लिया। खेत के यथार्थ मालिक ने अपने जमीन्दार से सहायता माँगी। जमीन्दार ने भगवद्दर्शन का भेद खुलवाया और कपटी पूजारी को दण्ड दिया। भक्ति की आड में चलनेवाली कपटता का चेहरा उपन्यासकार ने यहाँ खुलकर प्रकट किया है।

उस समय समाज में गानेवाली महिलायें, पुरुषों को अपने आकर्षण जाल में फँसाकर धन कमाती थीं। भगौती प्रसाद नामक युवक एक गानेवाली लडकी और उसके आदमियों के द्वारा लूटा जा रहा था। और इसके लिए वह युवक 'जिन्नत' आदि का बहाना करता था। एक प्रसंग ऐसा है कि लाला सतनारायण का बेटा बिरिज नारायण उर्फ बिरजू और चुलबुली बेगम की पुत्री गोती आरा के बीच प्रेम संबन्ध होताहै। बिरजू के पिता ने उसे रोकना चाहा पर वह उस लडकी के आकर्षण में पडकर शराबी बन जाता है।

अर्थ समाज के प्रचार के पीछे कई नकली धार्मिक-सांस्कृतिक संस्थाएँ भी खुल गयी थी। इन संस्थाओं की आड में युवा लोग मद्य और कामनियों को पाकर समाज को उल्लू बनाते रहे। उपन्यास में बिरजू और डेविड द्वारा स्थापित 'द इस्ट एण्ट रेलिजस सोसायटी' का असली स्वरूप प्रकट होता है।

सामाजिक दुराचारों को अभिव्यक्ति देने केलिए शिवरात्रि के दिन में घटित एक घटना का वर्णन उपन्यास में किया गया है। शिवरात्री के दिन भक्त गंगा-गोमती में नहाकर मोक्ष प्राप्त करना चाहते थे। इस अवसर पर लुटेरे फायदे उठाते थे। वे भक्तों को पानी में घसीट ले जाकर उन्हें मारते और गहने लूट जाते थे। एक वृद्ध को इस प्रकार पानी में घसीट लिया गया। लेकिन यह काम लूटेरों का नहीं था, बल्कि वृद्ध की बेटी के प्रेमी का था। वह अपने प्रेम संबन्ध में काटा बनकर रहनेवाले वृद्ध को मार डालना चाहता था। आर्य समाजियों ने उस वृद्ध को बचा दिया।

ऐसी कई काल्पनिक घटनाओं से उपन्यास की कथा बुन गयी है। इस उपन्यास के पात्र भी अधिकांश कल्पनाजनित ही हैं। पुरुष पात्रों में मुख्य पात्र तनकुन, उसके मित्र पार्किन्सन, मि. पिन्काट, विपिनचन्द्र तथा उसका पुत्र देशदीपक उर्फ खोखा आदि हैं। तनकुन उर्फ बंसीधर टण्डन कथा का केन्द्रपात्र है। छोटी उम्र में ही वह उर्दू तथा फारसी का पण्डित बन जाता है। अंग्रज़ी भी पढकर वह समाज में अपनी प्रतिष्ठा को बढाता है। उसकी विद्वता से अंग्रेज़ियों के बीच भी उसे स्थान मिलता है।

तनकुन की महत्वाकांक्षा उल्लेखनीय है। वह अंग्रेजियों का विरोध खुलकर करना नहीं चाहता। अंग्रेजियों की भारतीय विरुद्ध करतूतों से वह दुःखी है। पर अपने स्वार्थलाभ के लिए सब सह लेता है। जब एक अंग्रेजी पादरी हिन्दू देवी-देवताओं का अपमान करता है तब वह शिवरतन से कहता है - "'शहजोर हमेशा कमज़ोरों को दबाते ही आये हैं। इसलिए इनके बकवास को भूल जाइए। चूंकि हमारा मुस्तकबिल अंग्रेजी जबान से ही निखर सकता है इसलिए चुप होकर पढ लिजिये। जब पढाई पूरी हो जाये तो साले की टांग तोड देंगे।''[1] इसी मनोवृत्ति ने उसे नैन्सी और पार्किन्सन से

---

1. नागर, करवट, पृ - 16

दोस्ती कराने के लिए प्रेरित किया है। नैन्सी के आकर्षण में पडकर वह अपने आदर्शों तक का कुर्बान करता है। शराब पीना उसे पहले पसन्द नहीं था। पर नैन्सी के प्रति प्रेम से वह शराब पीने लगा और नैन्सी के साथ अनैतिक संबन्ध भी उसने जोड दिया। लेकिन इसके बाद उसे अपनी अनदेखी पत्नी के बारे में सोचकर आत्मनिन्दा होती है। उसका विवाह नौ साल की उम्र में हुआ था और उस दिन के बाद उसने उस लडकी को देखा तक नहीं था। जब नैन्सी बंसीधर को छोडकर चली जाती है, वह अपनी पत्नी को गाँव से ले आता है। धन मोह से उसने कुछ ऐसे काम भी किया है जिसमें वह बाद में पश्चाताता है। वह नैन्सी के लिए कुछ अमूल्य भारतीय ग्रन्थों को विदेश बेच देता है। बाद में इस बात पर अफ़सोस करते हुए वह पिन्काट से कहता है - "मैं अपने देश का ज्ञान खज़ाना विदेशों में पहूँचाकर अपने मुल्क और अपनी कौम को गरीब नहीं बनाना चाहता। मैंने अपनी खुदगरज़ी की तंग नज़री से बहुत पाप कर लिया, अब नहीं करूँगा।"[1]

तनकुन कुछ आदर्शों पर टिका रहता है। उसका विवाह नौ साल की उम्र में हुआ था। जब पिता धन मोह से उससे दूसरी शादि के लिए कहता है तो वह घर छोडकर चला जाता है। नौकरी मिलने के बाद वह अपनी पत्नी को कलकत्ता ले जाता है। वह शिक्षा को जीवन में आवश्यक मानता है। खुद वह उर्दू, फारसी और अंग्रेज़ी पढता है, और पत्नी को भी पढाता है। उसकी सुधारवादी दृष्टि सराहनीय है। वह पत्नी को अंधविश्वासों से मुक्त कराता है। वह बडा उदारशील भी है। पैतृक संपत्ति के लिए उसके भाइयों ने जब कुचाल चलाया तब उसने अपना हिस्सा स्वेच्छा से उन्हें दे दिया।

---

1. नागर, करवट, पृ - 96

बंसीधर अंग्रेजी शासन के गुणों को मानने में नहीं हिचकता। भारत की प्रगति के लिए अंग्रेजी शासन ही वह उचित समझता है। भारत की सामन्तवादी शासन व्यवस्था पर वह दुःखी है। वह सोचता है - "यह औले-दौले दरबारी रईस भला क्या किसी अच्छे प्रबन्ध को करने की बुद्धि रखते हैं। मूर्ख हैं सबके सब। ....अंग्रेज़ ही इन्हें जूते मार-मार कर अक्ल सिखलायेंगे।"[1] इस अंग्रेज़ी प्रेम से उसे फायदा हुआ है। वह एक स्कूल के हेडमास्टर से 'असिस्टेंट डायरेक्टर आफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन्स' तक बन जाता है। उसे रायसाहब की उपाधि भी मिलती है। अन्तिम काल में वह इंडियन नेशनल कांग्रेज मे शामिल होकर देश सेवा के लिए अपना जीवन सौंप देता है। इसकी मृत्यु प्लेग की बीमारी से हुई।

अन्य पात्र में देशदीपक प्रमुख है। एक महान पिता का महान पुत्र है वह। पिता बंसीधर उसे विदेश भेजकर आई सी एस पास कराना चाहता है। पर उसकेलिए धन की जरूरत थी। उतना धन पिता के पास नहीं है यह जानकर वह लाहौर जाकर डाक्टर बनता है। वह कर्ज लेकर आई सि एस. लेना नहीं चाहता।

वह पिता की तरह उच्च आदर्शवाला है। लाहौर में एक हिन्दू लडकी कौसल्या को मुसलमान लोग उठाकर ले गये। लोगों ने उसे उन बदमाशों के हाथ से बचा लिया। पर हिन्दू समाज ने उसे तिरस्कृत कर लिया। तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था ऐसी थी कि मुसलमानों के हाथ में एक बार पडने से हिन्दू लडकियों को फिर अपने समाज में स्वीकार नहीं किया गया था। देशदीपक ने इस प्रथा का विरोध किया। जब कौसल्या को इस प्रकार समाज ने ठुकरा दिया तो देशदीपक ने उसे अपना लिया। वह कौसल्या से शादी करके घर ले आया।

---

1. नागर, करवट, पृ - 31

देशदीपक का धर्म संबन्धी दृष्टिकोण भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वह मन्दिर, मस्ज़िद या गिरजाघर को धर्म नहीं समझता। वह माता-पिता को ब्रह्म मानता है। वह अपनी माँ से कहता है - "जिस ब्रह्म से जातियाँ छोटी, बडी या म्लेच्छ बना दी जाती है, उस ब्रह्म से मैं नफरत करता हूँ।.... जो विचार या काम मुझे सच्चाई से जोड देता है और मेरे मन में ऐसे खूबसूरत विचार लाता है जो मेरी रूप को, मेरी आत्मा को मतलब यह है कि मेरी स्पिरिचुएलटी को पवित्र बना देता है वह शायद ब्रह्म हो सकता है।"[1] वह मूर्ती पूजा का भी विरोधी है, कहता है कि मुगलों ने भारत के मन्दिरों और मूर्तियों को तोड डाला तो अच्छा किया। इन पत्थर की मूर्तियों को पूज-पूजकर ही भारतीयों का अकल पत्थर वन गया।[2] आर्य समाज के प्रभाव से अवतार-वाद पर भी उसका विश्वास खो गया था। उसने राम कृष्ण शंकर आदि पर विश्वास रखना गलतफहमि माना है।

देशदीपक न्यायप्रिय व्यक्ति है। एक डाक्डर होने के नाते वह शत्रु-मित्र हिन्दू-मुस्लीम भेद भाव नहीं रखता। वह खुल्लीमल का इलाज भी करता है जिसने उसके परिवार पर अन्याय किया था, और परिवार से निकाले गये उस व्यक्ति को सहारा भी देता है। गोती आरा तथा मंगरू के संदर्भ में भी उसका भलेपन दिखाई देता है।

बंसीधर और देशदीपक के अलावा उनकी पत्नियाँ चंपकलता तथा कौसल्या मुख्य काल्पनिक पात्र हैं। दोनों आदर्शनारियों की कोटि में आनेवाली हैं। बंसीधर टंडन की शादी चमेली से बहुत छोटी उम्र में हुई थी। शादी करके दोनों अपने अपने घरों में वापस गये। फिर बंसीधर बडे होकर कमाई शुरू करने के बाद अपनी पत्नी को साथ

---

1. नागर, करवट, पृ - 21
2. नागर, करवट, पृ - 177

ले आता है। चमेली एक अनपढ गंवारी थी। पढे-लिखे पति के इच्छानुसार वह अपने गंवारू रूप, यहाँ तक अपना नाम तक परिष्कृत करने के लिए तैयार होती है। वह चमेली से चपकलता टंडन बनती है साथ ही अंग्रेजी शिक्षा भी प्राप्त करती है। ब्रह्मसमाजी पति के मतानुसार उसने पर्दा छोडा, मूर्तिपूजा पर भी उसका विश्वास कम होने लगा। उपवास रखना जैसे संस्कारों को छोडने के लिए वह तैयार हो गयी। एक बार जिन रुढियों को उसने छोडा था उन्हें फिर कभी भी लौटाना उसे मंजूर नहीं था। पति के गांव में उसे इससे बहुत सारी तकलीफें झेलनी पडती है। पर वह अपने प्रगतिशील विचार पर अटल रही। पति के सभी सद्कर्मों में वह साथ देती है। वह अपने पति के लिए बच्चों की खुशी छोड सकती है। इस संबन्ध में वह कहती है - "माँ जरूर हूँ पर बेटे के हित में भी इनसे अलगाव की बात में सोज भी नहीं सकती।"[1] कौसल्या जो चंपक की पुत्रवधू है अपने ससुरालवालों के अनुरूप सुशील और उच्चगुणोंवाली है। एक दुर्घटना के फलस्वरूप वह देशदीपक की जिन्दगी में आयी थी। मुसलमान गुंडाओं के हाथ में पडने पर वह अपने घर और ससुराल से निकाल दी गयी थी। तभी नये विचारवाले आदर्श युवक देशदीपक ने उसे शादी करके उसकी रक्षा की। इस घटना के बाद कौसल्या भी समाज में नारी-शोषण के विरुद्ध काम करने लगी। वह भी अपने ससुर और पति के समान समाज सुधार का काम करती है। उसने पढी-लिखी लडकियों में जागृति लाने के लिए उन्हें एकत्र किया। उसने निसहाय स्त्रियों को काम देने के लिए बहुत से आयोजन किए वह दो आर्य कन्या पाठशालाएँ चलाने लगी। वहाँ शिक्षा मुफ्त में दी जाती थी। कौशल्या कथाओं और दृष्टांतों से हंसाती, मधुर कंठ से गीत भजन गाकर मुग्ध कराती, वह लोकप्रिय बन गयी। उपर्युक्त दोनों महिला पात्र अपने अपने पतियों को सभी अच्छे कामों में साथ देकर नारीकुल के गौरव की अधिकारियाँ बन गयी हैं।

---

1. नागर, करवट, पृ - 186

इन पात्रों के अलावा बहुत अन्य पात्र भी उपन्यास में हैं जिनमें पार्किन्सन, नैन्सी, मिस्टर पिन्काट, विपिन, हरनाथ, त्रिलोकनाथ, मैगी आदि के नाम उल्लेखनीय है। मि. पार्किनसन तथा मि. पिन्काट बंसीघर के अंग्रेजी दोस्त हैं। नैन्सी कुछ समय बंसीघर की प्रेमिका रही। वह बूढा माल्कम की जवान पत्नी थी। अपने पति से असंतुष्ट नैन्सी पार्किन्सन से पहले प्यार करती थी। फिर बंसीधर को अपने आकर्षण में फँसाती है। माल्कम की हत्या होने के बाद वह अवध से कलकत्ता जाकर वहाँ के एक संपन्न युवक से आदी करती है। वह अपने पहले पति से विश्वासघात करती रही। वह राजनीति में भी दखल देती है। माल्कम के विरुद्ध वह कुछ राजकाज का काम करती है। उसकी करतूतों की वजह से ही पति की हत्या भी होती है। नारी की उच्छुंखलता तथा कुटिलता का उदाहरण नैन्सी के चरित्र चित्रण से पाठकों को मिलता है। त्रिलोक नाथ बंसीधर का दोस्त है। उसे विवाहिता पत्नी के अलावा एक अंग्रेजी महिला मैगी से भी संबन्ध है। वह इन दोनों पत्नियों को मिलाकर आगे ले चलने में कामयाब हुआ है। मैगी अंग्रेजी नारी होकर भी भारतीय त्रिलोक से शादी करके आदर्श भारतीय नारी बनकर जी रही है। वह पतिव्रता होकर जीना चाहती है। उसके चरित्र की एक विशेषता तभी हम देख पाते हैं कि जब अपने पुत्र के लिए पति तक को छोडकर वह विदेश जाने के लिए तैयार हो जाती है। उसके अन्दर के अंग्रेजी संस्कार ने उससे यह निर्णय करवाता है। विपिन और हरनाथ, बंसीधर के रिश्तेदार तथा सहायक उपन्यास हैं।

उपन्यास की प्रमुख कथा तथा पात्र काल्पनिक होने पर भी वातावरण अधिकतर इतिहास के अनुकूल है। जो भी काल्पनिक वातावरण प्रस्तुत किये गये हैं वे कथा को आकर्षक बनाने में सहायक बने हैं। पात्रों की चरित्रगत विशेषतायें एक हद तक उनके संवादों से प्रस्तुत की गयी हैं। भाषा भी प्रत्येक चरित्र की सामाजिक तथा धार्मिक स्थिति के अनुकूल हैं।

उपर्युक्त कल्पना पक्षों के आधिक्य के बावजूद भी 'करवट' उपन्यास का आन्तरिक स्वर इतिहास का है। कल्पना इस इतिहास का सहायक साधन है।

पीढियाँ

पीढियाँ समकालीन इतिहास पर आधारित उपन्यास है। इसमें सन् १९०५ से लेकर सन् १९८६ तक की प्रमुख राजनैतिक घटनाओं का उल्लेख किया गया है। इसके लिए प्रसंगानुसार कुछ इतिहास पुरुषों के नाम भी उपन्यास में सम्मिलित किये गये हैं। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि इस उपन्यास का मुख्य विषय होने पर भी काल्पनिक कथा-उपकथाओं, काल्पनिक घटनाओं तथा काल्पनिक पात्रों के द्वारा उसे औपन्यासिक कला की दृष्टि से उत्तम कलाकृति बनाया गया है। इसलिए 'पीढियाँ' का कल्पना पक्ष महत्वपूर्ण है।

उपन्यास का आरंभ ही एक काल्पनिक घटना से होता है। श्रीमती जगदम्बा की ज़मीन और हवेली हडपने केलिए भूतपूर्व मुख्यमंत्री भैरव प्रसाद वर्मा ने धर्म का सहारा लिया। उसने ऐसा अफवाह फैलाया कि उस जमीन पर एक मुसलमान फकीर की मज़ार है। इससे मुसलमान लोगों ने जगदम्बा देवी के विरुद्ध आन्दोलन शुरू किया। लेकिन भैरव प्रसाद याने कि वर्मा का षडयन्त्र असफल हो गया। लोगों ने उसकी बातों की कपटता समझी। ज़मीन जगदम्बा को मिला।१ इस प्रसंग से कपट राजनेता का पर्दाफाश होता है। आधुनिक राजनेता का हथियार धर्म है। लोगों के बीच धार्मिक संघर्ष उपजा कर अपनी कार्य सिद्धि का मार्ग खोलना स्वार्थी नेताओं का उपाय है। बी.पी. वर्मा स्वातन्त्र्योत्तर भारत के कपट राजनेताओं का प्रतीक है। उसके कौशल प्रकट करनेवाली और एक घटना भी है। उसने अपनी बहन कुशलेबीवी का ज़मीन अपना बनाकर रखा था। जब कुशलो और पुत्र ने उस ज़मीन को वापन मांगा तब वह

क्रुद्ध हो गया। युधिष्ठिर की सहायता से फिर वह ज़मीन कुशलो के पुत्र को मिला।[1] इन दो घटनाओं के अलावा और भी काल्पनिक घटनायें उपन्यास में हैं जिनसे कई सामाजिक राजनैतिक परिस्थितियों का विवरण मिलता है। गोबरधन प्रसंग[2], डॉ. श्रीमाली से संबन्धित घटना,[3] रिच्छपाल प्रसंग[4] आदि ऐसी काल्पनिक घटनाओं हैं।

उपन्यास के सभी पात्र कल्पना निर्मित है। इसलिए उनसे संबन्धित अधिकांश घटनायें भी काल्पनिक ही हैं। केन्द्र पात्र जयन्त की जीवन की एक घटना है सरस्वती के द्वारा उसका अपमान करने का प्रयास। रामलोचन पाण्डे नामक व्यक्ति ने सरस्वती को जयन्त की नाजायस औलाद कहकर उसके वारिसों से धन अपनाने का प्रयास किया। पर जावेद इस प्रयास को असफल कर दिया।[5]

शासकों की विलासिता और स्वेच्छापूर्ण जीवन को दिखानेवाली घटना भी है। भारत के एक रियासत के राजा ने अपनी प्रियतमा रखैल को खुश करने के लिए हवागाडी खरीदना चाहा। इसके लिए वह प्रजा से मोटरावन टैक्स वसूल करने लगा। लोग गरीबी से मर रहे थे। इस संदर्भ में उन्हें मार-पीटकर टैक्स वसूल करने लगा।[6] भारत के कुछ राजा-नवाबों ने अपनी विलासिता से अपने राज्य के बुनियाद हिला रहे थे। इसका चित्र पाठक को देना प्रस्तुत कल्पना से उपन्यासकार का लक्ष्य है।

उपन्यास के सभी पात्र उपन्यासकार की कल्पना सृष्टि है। नागर के 'करवट' उपन्यास की अगली कडी है 'पीढियाँ'। 'करवट' जहाँ समाप्त होता है वहीं से

---

1. नागर, पीढियाँ पृ - 26
2. नागर, पीढियाँ पृ - 140
3. नागर, पीढियाँ पृ - 205
4. नागर, पीढियाँ पृ - 226
5. नागर, पीढियाँ पृ - 271
6. नागर, पीढियाँ पृ - 287

'पीढियाँ' शुरू होती है। जयन्त 'पीढियाँ' का केन्द्र पात्र है। उसकी जीवनी उपन्यास का मुख्य विषय है। इसलिए इस पात्र का चरित्रचित्रण सारे उपन्यास में व्याप्त है। बचपन से उसने माता-पिता के नियन्त्रण के बाहर रहना चाहा। पढाई से अधिक राजनीति में उसकी रुचि थी। समाज सुधारक के रूप में उसको चित्रित किया गया है। वर्गीय संघर्ष के विरुद्ध उसने काम किया। चौक में जब हिन्दू-मुस्लीम दंगा हुआ तब दोनों के बीच खडे होकर उन्हें शान्त करता है उससे जयन्त का साहस पूर्ण व्यक्तित्व व्यक्त होता है। उस प्रसंग में वह कहता है - "आप नहीं मानेंगे और लूट-मार करेंगे तो आप लोगों के हाथों पहले मेरी ही जान जायेगी, आइए, मैं तैयार हूँ।"[1]

जयन्त के चरित्र का बुरा पक्ष भी था, वह था उसकी उच्छृंखलित कामवासना यौवन काल में अनेक युवतियों से उसका प्रेम संबन्ध था। प्रेमकिशोरी नामक विधवा से पहले वह प्रेम करने लगा, फिर अनारो से, अनारो उससे गर्भवती भी हो जाती है। इनसे संबन्धित विशद वर्णन उपन्यास में है। अनारो से बचने के लिए जयन्त इग्लैंड चले गये और वहाँ से बैरिस्टर होकर लोटा। इग्लैंड में भी उसने कई नारियों से अनैतिक संबन्ध जोडा। जूली उनमें से एक थी जो जयन्त के साथ भारत आयी। भारत में जयन्त ने बैरिस्टर होकर धन और प्रतिष्ठा पाये। राजनीति में भी विशिष्ट स्थान उसने हासिल किया। उसकी पत्नी मनोरमा टण्डन के अलाक उसके जीवन में और एक मनोरमा भी थी जो मि. खन्ना की पत्नी थी। जयन्त को इस मन्नो खन्ना में भी एक पुत्र हुआ था। यह प्रसंग भी जयन्त के अनैतिक संबन्धों को प्रकाशित करता है। जयन्त के इस लंपट चरित्र पर युधिष्ठिर मनोवैज्ञानिक ढंग से विचार करता है - 'वह मूल रूप से व्यभिचारी व्यक्ति नहीं था। परिस्थितियों ने उनका वैसा रूप बना दिया।.... विलायत में जो कुछ

---

1. नागर, पीढियाँ पृ - 159

स्त्री प्रसंग हुए वे मात्र उनके भारतीय संयम की विरोध प्रतिक्रिया से हुए थे। हर शेर आदमखोर नहीं होता लेकिन संयोगवश चाट लग जाने पर वह हो ही जाता है।'[1]

सन् १९१२ में विलायत से लौटने के बाद जयन्त सन् १८ तक वकालत करता रहा। असने यश और धन कमाया। सन् १९१९ के बाद निष्काम देश सेवक बन गया। उसका देश प्रेम इतना गहरा था कि इसके लिए अपने प्रेमिका तक को छोड देता है। जूली नामक विदेशी प्रेमिका को उसने इसलिए छोडा कि उसने मिसेज़ एनी वेसेंट को 'आयरिश कुतिया' कहा था। जयन्त यह सह नहीं पाता कि कोई भारत या भारत के लिए लडनेवाले का अपमान करे। कांग्रेस में काम करके कई बार जेल गये। बयालीस के आन्दोलन में अपने छप्पन वर्ष की आयु में वह शहीद हुआ।

इस उपन्यास का नायक वास्तव में वे शहीद जयन्त ही है। उसका चरित्र चित्रण संस्मरण और पूर्वदीप्त शैली में उभारा गया है। उपन्यास की आधिकांश घटनायें उससे संबन्धित हैं।

जयन्त के अलावा उसका पुत्र सुमन्त का भी चरित्र चित्रण हुआ है। सुमन्त ने भी अपने पिता की तरह राजनीति में अपना स्थान पा लिया। माता-पिता के आपसी झगडे में उसका बचपन दर्दनाक बन गया था। उसे बार्डिंग में भर्ति करायी गयी। बडे होकर वह उत्तरप्रदेश का मुख्य मंत्री बन जाता है। पर उसके मित्र बी.पी. वर्मा धोखे से उससे मन्त्री पद अलग कर देता है। इन परिस्थितियों से दुःखी होकर वह उस जगह को छोडकर अयोध्या जाकर बसता है। सुमन्त को आदर्श राजनेता के रूप में चित्रित किया गया है।

---

1. नागर, पीढियाँ पृ - 257

सुमन्त का पुत्र युधिष्ठिर तथा उसका दोस्त जावेद अन्य दो प्रमुख पात्र हैं। दोनों एक ही पत्र में काम करनेवाले हैं। युधिष्ठिर अपने दादा जयन्त की जीवनी लिखना चाहता था पर जावेद ने पहले इसका हक अपनाया। इसलिए युधिष्ठिर जयन्त की जीवनी पर आधारित उपन्यास की रचना करने लगता है।

युधिष्ठिर के उपन्यासकार रूप के साथ उसके जीवन का वैयक्तिक पक्षों का भी दर्शन होता है। वह आदर्श पति, आदर्श पिता तथा आदर्श पुत्र है। सुमन्त और शारदा के प्रति वह बडी श्रद्धावान है। पत्नी शकुन्तला के सामने वह स्नेहसंपन्न पति है। पत्नी को अपने व्यक्तित्व को बनाए रखने की अनुमति वह देता है। अंशु के लिए तो वह वात्सल्यनिधि पिता है।

युधिष्ठिर आधुनिक भारतीय युवक का प्रतिनिधि है। वह तत्कालीन भारतिय राजनैतिक, सामाजिक परिस्थितियों से दुःखी है। धर्म के नाम पर होनेवाले संघर्षों पर वह अपना विरोध प्रकट करता है। बाबरी मस्जिद-रामजन्म भूमि की समस्या पर युधिष्ठिर और जावेद के बीच तर्क होता है। हिन्दू-मुसलमान झगडे से भारत को मुक्त करने की आशा वह रखता है। उसे अनेक देवी-देवताओं पर भी विश्वास नहीं, केवल एक पर वह विश्वास रखता है। उसका ईश्वर के प्रति विचार ऐसा है - "वह ईश्वर कैसा है, मोरमुकुटधारी है, या पायजामा पहनता है अथवा हैटकोट, यह वो नहीं जानता। ......उसका विश्वास है कि सत्य का प्रकाश ही ईश्वर है।"[1]

जावेद भी युधिष्ठिर जैसा उत्साही युवा है। उसने भी पत्रकारिता में खूब नाम कमाया है। उपन्यास में प्रस्तुत उपकथाओं में जावेद का स्थान महत्वपूर्ण है।

---

1. नागर, पीढियाँ पृ - 69

सरस्वती से जुडी हुई घटना में जावेद ही नया मोड लाता है। जावेद और युधिष्ठिर की दोस्ती भी सराहनीय है। समाज में चलनेवाले हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष के लिए अपवाद है उन दोनों की दोस्ती।

बी.पी. वर्मा याने भैरव प्रसाद वर्मा कुटिल राजनेता है। हर समाज में राजनीति में ऐसा एक कपटी व्यक्ति ज़रूर मिलता है। बी.पी. पहले तो जयन्त का शिष्य और सुमन्त का दोस्त था। पर धीरे धीरे अधिकार सुख से मस्त होकर वह अपना आदर्श खो बैठा। वह कुछ समय तक यू.पी. का मुख्यमंत्री भी रहा था। और जब सुमन्त टण्डन मुख्य मंत्री बना तो बी.पी. ने चालबाज़ियों से उसे उस पद से भ्रष्ट कर दिया। उसकी कुशाग्र बुद्धि और कपटता का मिसाल युधिष्ठिर और जावेद के साथ जो साक्षात्कार होते हैं उनसे प्राप्त होता है। जब युधिष्ठिर उससे इन्टर्व्यू लेने आता है तब वह एक रुद्राक्ष माला पहनकर हिन्दू धर्म के अनुयायी का अभिनय करता है। बाद में जब जावेद से मिलता है तब रुद्राक्ष हटाकर मुस्लिम समर्थक बन जाता है। साथ ही युधिष्ठिर और जावेद के बीच दरार पैदा करने की कोशिश भी वह करता है। वह बडा बडा आदर्श कहता है - "हमारे फादर गरीब ज़रूर थे मगर बडे आनेस्ट थे उन्होंने हमको यह उपदेश दिया था..... और बहुत ग्रेटफुल हूँ उनका।"[1] यहीं 'आदर्शनिष्ठ' बी.पी. ही सुमन्त पर छल करता है। उसे मुख्यमन्त्री पद से निष्कासित करता है। उसके छल और ढेढे चरित्र का परिचायक है श्रीमति जगदम्बा देवी का ज़मीन संबन्धी घटना भी। उसकी ज़मीन अपनाने के लिए बी.पी. ने यह अफवाह फैलाया कि उस जमीन की हवेली में एक मुसलमान फकीर की मज़ार है। इससे मुसलमान लोगों ने जगदम्बा देवी के विरुद्ध आन्दोलन शुरू किया। इससे फायदा उठाकर ज़मीन अपनाना

---

1. नागर, पीढियाँ पृ - 46

बी.पी. का उद्देश्य था। पर यह कोशिश असफल हो गयी। अपने पोलिटिकल इमेज को हानी पहुँचानेवाले युधिष्ठिर और जावेद को अपने वश में करने का प्रयास भी वह करता है। इसके लिए युधिष्ठिर के माता-पिता सुमन्त और शारदा देवी तथा जावेद के पिता मुश्ताक हुसैन के पास भी जाता है। स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी के आगे भी सिर झुकाने में वह नहीं हिचकता। आधुनिक राजनीति में एक आम राजनेता की चरित्रगत विशेषता है यह। कपट राजनेताओं का 'टिपिकल' प्रतीक है भैरव प्रसाद वर्मा उर्फ बी.पी. वर्मा।

अन्य प्रमुख काल्पनिक पात्र है शकुन्तला, शारदा, मनोरमा खन्ना, मुश्ताक हुसैन, जगो बाबा आदि। शकुन्तला युधिष्ठिर की पत्नी और अध्यापिका है। ये दोनों भूमिका वह अच्छी तरह निभाती भी है। इनके अलावा वह अछी बहु और अंशु के लिए अच्छी माँ भी है। वह आधुनिक ही नहीं कभी उत्तराधुनिक बन जाती है। पति के शराब पीने से वह विरोध नहीं करती, यहीं नहीं पति के इच्छानुसार वह स्वयं पीती भी है पढी-लिखी होने के कारण युधिष्ठिर इतिहास जैसे अपने उपन्यास की बातों पर उसके साथ चर्चा करता है। आधुनिक भारतीय नारी को जिस प्रकार एक साथ अनेक भूमिकायें निभानी पढती है। उनका उदाहरण है शकुन्तला। शारदा भी उत्तम गृहणी की कोटि में आनेवाली है। भूतपूर्व मुख्यमन्त्री सुमन्त की पत्नी और स्वयं भूतपूर्व एम.एल.ए भी है। वह पति की देखभाल के लिए कुछ दिन अयोध्या में रहती है और पौत्र अंशु के प्रति वात्सल्य से कुछ दिन उसके साथ भी उपन्यास में मनोरमा नाम के दो पात्र हैं। एक जयन्त की पत्नी मनोरमा टण्डन और दूसरी जयन्त की प्रेमिका मनोरमा खन्ना। मनोरमा खन्ना की भूमिका अधिक प्रमुख है। वह रायबहादूर बाबू रघुनन्दन प्रसाद खन्ना की तीसरी पत्नी थी। बडी सुन्दर थी। पर पति से उपेक्षा पाकर निराश जीवन व्यतीत कर रही थी। उसी समय खन्ना का मित्र बैरिस्टर जयन्त से उसका परिचय हुआ। दोनों

का परिचय प्रेम में पराजित हो गया। झगडालू पत्नी से अतृप्त जयन्त का रूख पहचानकर उसे प्यार देने में मनोरमा खन्ना सफल हुई। इस रिश्ते में उनका एक पुत्र भी हुआ जो लोगों के आगे खन्ना पुत्र होकर ही जाना जाता था। पर मनोरमा ने स्वयं अपने पुत्र से इस सहस्य का उद्‌घाटन किया कि उसका यथार्थ पिता जयन्त है। जयन्त की जीवनी पर आधारित उपन्यास रचना में युधिष्ठिर को मनोरमा खन्ना से बहुत सहायता मिलती है। समाज सेविका के रूप में भी मनोरमा खन्ना का चित्रण हुआ है।

मुश्ताक हुसैन, जगो बाबा आदि कुछ पात्र जयन्त की जीवनी लिखने में सहायक सिद्ध होते हैं। जिस प्रकार जयन्त की जीवनी कई ऐतिहासिक घटनाओं को चित्रित करने का माध्यम बनी, उसी प्रकार ये काल्पनिक पात्र भी उपन्यास की ऐतिहासिक और इतिहास पुरुषों की प्रस्तुति में सहायक बन गये हैं।

निष्कर्ष

नागरजी के इन आठों ऐतिहासिक उपन्यासों के कल्पना पक्ष पर विचार करने से हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि उपन्यास का मुख्य धेय इतिहास दर्शन होने पर भी उपन्यास कला के लिए उपयुक्त कल्पना को समेटने में भी उपन्यासकार ने सफलता पायी है। इन काल्पनिक प्रसंगों की प्रयुक्ति में भी इतिहास को कोई चोट न पहूँचाने में नागरजी ने विशेष ध्यान दिया है। ऐतिहासिक यथार्थ को यथावत् अपनाने पर भी मनोरंजनार्थ जिन कल्पनाओं का समावेश इनमे किया गया है उनसे उपन्यासों का कलात्मक सौन्दर्य बढता है। इनसे पाठकों की उत्सुकता और रुचि में वृद्धि होती है।

काल्पनिक घटनाओं और पात्रों के नियोजन से अतीत कालीन सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक परिस्थितियों का विशद चित्र पाठकों को मिलता

है। साथ ही कथा गति के लिए भी ये सहायक है। ऐतिहास पुरुषों के वैयक्तिक चित्रण में तथा ऐतिहासिक घटनाओं के लिए पृष्ठभूमि तैयार करने में इन कल्पनाओं का स्थान बहुत बडा है। चर्चित उपन्यासों में जितनी ऐतिहासिकता का महत्व है काल्पनिकता का महत्व भी उससे कम नहीं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि अमृतलाल नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में इतिहास और कल्पना का जो मणिकांचन संयोग हुआ है वह उपन्यासों की सफलता को उज्वल कर देता है।

अध्याय ४

नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में आधुनिक भावबोध

अध्याय ४

नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों में आधुनिक भावबोध

'आधुनिकता' आजकल साहित्य क्षेत्र में निरन्तर चर्चित विषय है। आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में साहित्य को परखने और जाँचने की प्रवृत्ति साहित्य जगत् में प्रकट है। परम्परा से उचित तत्त्वों का अनुशीलन, मानवमूल्यों की अभिव्यक्ति, राजनीति तथा समाज में उत्तम आदर्शों का पुनर्निमाण, तरह-तरह की समस्याओं के प्रश्नुतीकरण तथा उनके लिए समाधान ढूँढना आदि आधुनिक भावबोध का लक्षण है। आधुनिकता का मतलब केवल नवीनता से नहीं। उसका व्यापक रूप है। वह एक प्रक्रिया है जो समाज को नवीनता और क्रान्ति का संदेश देती है। साहित्य के सन्दर्भ में साहित्य का जो पक्ष सामाजिक यथार्थ को व्यक्त करता है वही उसकी आधुनिकता है। आधुनिकता के बारे में यह कहना होगा कि वह नित्य क्रियाशील तथा गतिमान है। इसे परम्परा से हम अलग नहीं कर सकते। वह परम्परा और वर्तमान से समान रूप से संबन्धित है।

उपन्यासों के सन्दर्भ में उनके विषय और शिल्प उन्हें आधुनिक बना देते हैं। उनमें जिस उपन्यास का विषय हर युग मे प्रासंगिक है उसे आधुनिक के अन्तर्गत रखा जा सकता है। आधुनिक उपन्यासकार जीवन की सभी जटिलताओं को और उनसे

जूझनेवाले समाज को चित्रित करके अपने उपन्यासों को आधुनिक परिवेश प्रदान करते हैं। संवेदनशील रचनाकार अपने अनुभवों से प्रेरित होकर रचना का विषय तैयार करते हैं। उन अनुभवों को वे नये ढंग से अभिव्यक्त कर प्रभावशाली बना देते हैं। कालजयी घटनाओं और इतिहास पुरुषों को अपनी रचनाओं के मुख्य विषय बनाकर रचनाकार उन कृतियों को नित्य-नवीन तथा प्रासंगिक बना देते हैं। विश्वक्रान्तियाँ, कई सामाजिक तथा राजनैतिक समस्यायें और कबीर, तुलसी, सूर, स्वामि विवेकानन्द, रजाराम मोह राय जैसे इतिहास पुरुष आदि इस प्रकार की रचनाओं के मुख्य विषय बन गये हैं।

अमृतलाल नागर के सभी उपन्यासों में आधुनिकता की झलक है। जनमानस से निकटतम संबन्ध रखनेवाली उन रचनाओं के द्वारा कई सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा राजनैतिक गतिविधियों पर विचार-विमर्श भी किया गया है। नागरजी के ऐतिहासिक उपन्यासों की विशेषता यह है कि उनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में समसामयिक कई पहलुओं पर भी चर्चा की गई है। उनका प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास 'शतरंज के मोहरे' से अन्तिम रचना 'पीढियाँ' तक के उपन्यासों में कई समस्याओं तथा सांस्कृतिक पक्षों का विश्लेषण किया गया है। कुछ उपन्यास समाज को ग्रसित कई समस्याओं से अवगत करानेवाले हैं तो कुछ हमारी संस्कृति तथा भावात्मक एकता को बढावा देनेवाले हैं।

नागरजी के 'शतरंज के मोहरे' में शासकों की विलसिता और फलस्वरूप देश के सांस्कृतिक ह्रास का चित्रण है। 'सात घूँघटवाला मुखडा' तथा 'सुहाग के नूपुर' नारी प्रधान उपन्यास हैं।

नारी शोषण, नारी के विविध रूप तथा नारी की प्रतिहिंसा जैसे मुद्दो का चित्रण इनमें हुआ है। 'सुहाग के नूपुर' वेश्या समस्या को भी प्रतिपादित करता है। नारी के दो रूप, कुलवधु तथा नगरवधू, और दोनों रूपों में उसका शोषण, नारी के प्रति

पुरुष की स्वार्थपरक दृष्टि जैसे प्रासंगिक विषयों पर यह उपन्यास विचार करता है। 'एकदा नैमिषारण्ये' भारतीय संस्कृति तथा धार्मिक विषय पर चर्चा करता है। 'मानस का हंस' तथा 'खंजननयन' में यथाक्रम तुलसी और सुरदास जैसे इतिहास पुरुषों की जीवनी के द्वारा धार्मिक संघर्ष, भक्ति का महत्व तथा कई युगीन समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। करवट तथा 'पीढियाँ' में स्वतन्त्रता पूर्वक तथा स्वातन्त्र्योत्तर भारत की कई समस्यायें जैसे वर्ग संघर्ष, सत्ता का दुरुपयोग, राजनीतिक कपटता आदि का आवरण हटाकर लोगों को सचेत करने का प्रयास हुआ है। नागरजी के इन ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक उपन्यासों में चित्रित उक्त युगीन परिस्थितियों ने इन्हें आधुनिक बना दिया है।

नागरजी के ऐतिहासिक उपन्यायों में मुख्य रूप से युगीन समस्यायें जैसे नारी समस्या, धार्मिक संघर्ष, आस्था और जिजीविषा, राजनैतिक समस्यायें, सांस्कृतिक मूल्य चेतना, साहित्यिक क्षेत्र की समस्यायें, अन्धविश्वास और मिथ्याचरण आदि बुलंद है।

नारी जीवन की विडंबना

नागर के प्राय सारे के सारे उपन्यासों में नारी के जीवन नारी संबन्धी विविध पक्षों का उदघाटन हुआ है। उनके 'सुहाग के नूपुर' तथा 'सात घूंघटवाला मुखडा' स्त्री केन्द्रित हैं। 'सुहाग के नूपुर' का मुख्य स्वर नारी शोषण है। वासनायुक्त स्वार्थी पुरुषमेधा समाज में नारी हमेशा शोषित और पीडित है। सामाजिक, आर्थिक आदि सभी स्तरों पर पुरुष उसका शोषण कर रहा है। भारत की आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों ने पुराने समय से नारी को वेश्यावृत्ति करने के लिए विवश किया है। यह समस्या प्राचीन काल से आज तक जेस का तस चली आ रही है। समयानुसार बाह्य स्वरूप में थोडा अंतर होगा।

'सुहाग के नूपूर' में नगरवधू बनाम कुलवधू संबन्धी मूल्यों की टकराहट मुख्य प्रतिपाद्य है। कथा की पृष्ठभूमि कावेरीपट्टणम की सामाजिक स्थिति ऐसी थी कि नगरवधू को भी समाज में स्थान दिया गया था। वहाँ के युवक घर में विवाहिता पत्नी के साथ और रूपहाट में नगरवधू के साथ वासनायुक्त जीवन बिता रहे थे। उपन्यास का पात्र कोवलन उन युवकों का प्रतिनिधि है। वह नगरवधू के आकर्षण में पत्नी की अवहेलना करता है और नगरवधू को कुलवधू की प्रतिष्ठा से वंचित कर उसे भी दुःखी बनाकर छोडता है। नारी कुलवधू तथा नगरवधू दोनों रूपों में पीडित हैं। स्वार्थी पुरुष उन्हें केवल अपने मनोरंजन के खिलौने बनाते हैं।

कोवलन पत्नी को दासी मानता है। वह पहली रात में ही कन्नगी से कहता है - 'पत्नी के रूप में पुरुष एक स्त्री को दासी बनाकर अपने घर लाता है समझी। साधारण स्त्रियाँ साधारण मोल पर घर में बिकती हैं, ऊँचे कुलों की स्त्रियों को दासी बनाने के लिए सोने-रूप की थैलियों का मुंह खुल जाता है, अन्तर केवल इतना ही है।[1] नारी को केवल दासी या मनोरंजन का उपकरण माननेवाला कोवलन अपने दुहरे नैतिक मूल्यों के कारण न माधवी को सुखी रख पाता है न ही कन्नगी को। स्वयं भी इन दोनों के बीच पडकर जीवन को संघर्षमय बना देता है। वह अपनी विवशता व्यक्त करता है - 'मेरी विवशता समझो देवी, मैं प्रेम के आकर्षण में तुम्हारी और माधवी की ओर समान रूप से खिंचा हुआ परिस्थितिवश दो भागों में फटने के लिए बाध्य हो गया हूँ।'[2] पुरुष की यही विवशता पारिवारिक संबन्धों के विघटन का कारण बन जाता है।

नागरजी ने माधवी के चरित्र द्वारा वेश्यावृत्ति संबन्धी मूल्यों का विश्लेषण किया है। एक नगरवधू जो कुलवधू की संपूर्ण निष्ठा का पालन करने पर भी कुलवधू

---

1. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 83
2. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 146

के गौरव की अधिकारिणी नहीं बनती। वासना युक्त पुरुष को जीवन में पूर्ण तुष्टि मिलने के लिए वेश्या की आवश्यकता है, पर उसे कुलनारी की प्रतिष्ठा देने के लिए वह तैयार नहीं। स्वार्थी पुरुषों के खोखलेपन का उद्घाटन नागरजी ने किया है। माधवी के द्वारा वेश्याओं की बेबसी भी दिखायी गयी है। वह कहती है - "कितना अच्छा होता मौसी यदि हम इस विपत्ति में न पडकर कुलीनों के समान ही जीवन का व्यवहार कर पाती।"[1] वह समाज से न्याय माँगती है - "मैं भी न्याय लूँगी। वेश्या बनाने के लिए डाकुओं, कुट्टनियों का जाल फैलाकार जब हमें व्यवसाय की वस्तु बनाया जाता है तब सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रश्न क्यों लुप्त हो जाता है। मैं स्वेच्छा से वेश्या के यहाँ बिककर नही आई थी। मैं भी सती हूँ। मेरे सम्मुख भी अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न है।"[2] वेश्या नाम देकर समाज से दूर रखनेवाली नारियों का शब्द इसमें मुखरित होता है।

नारी शोषण के इन चित्रों के साथ पातिव्रत्य जैसे उच्च भारतीय मूल्यों की ओर भी पाठकों का ध्यान आकर्षित किया गया है। कन्नगी आदर्श भारतीय नारी है जो पति तथा ससुराल का गौरव कायम रखने के लिए अपने दुःखों को सह लेती है। पति और उसकी प्रेमिका द्वारा अपमानित होकर भी वह उनसे विनयपूर्ण व्यवहार करती है। उसके शील का महत्व उससे ससुर मासात्तुवान के इन शब्दों से प्रकट होता है - "बेटी तुम्हारा शील ही तुम्हारे पितृकुल की यशोगाथा गा रहा है और तुम्हारा असत्य भाषण मेरे कुल की लाज बचा रहा है।"[3] इसप्रकार के आदर्शीकरण भी स्त्री का शोषण है। सर्वसहः सिद्ध कर स्त्रीयों के गुणगान के माध्यम से स्त्रीयों से खूब लाभ उठानेवाले हैं पुरुष समाज। अधिकांश रचनाकार भी इस पुरुष मेधा समाज का प्रतिनिधि है। यहाँ

---

1. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 42
2. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 165
3. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 101

नागर भी पतिव्रता कन्नगी का आदर्शीकरण के द्वारा एक प्रकार का स्त्री शोषण करते है। इस आदर्श पात्र से स्त्री का यथा तथ्य चित्रण हुआ है।

शतरंज के मोहरे में नारी का एक दूसरा रूप सामने आता है। इसके दुलारी का चरित्र कन्नगी के विरुद्ध है। सौन्दर्य और सत्तामोह दुलारी के नैतिक पतन का कारण बन जाते हैं। अपने सौन्दर्य और कुटिल चाल से अवध की महारानी तक वह बन जाती है। नारी शोषण का चित्ररण इस उपन्यास में भी हुआ है। इसके दो पात्र भुलनी और कुल्सुम पुरुष की वासनावृत्ति के शिकार हैं। भुलनी का सतीत्व एक अंग्रेज़ अफसर द्वारा भंग हो जाता है। पुरुष की स्वार्थता का शिकार बननेवाली भुलनी को उसके माता-पिता तथा समाज तिरस्कृत कर देते हैं। यह समाज के एकपक्षीय दृष्टिकोण का नतीजा है। पुरुष द्वारा नारी का अपमान होने पर भी सजा केवल नारी को मिलती है। पुरुष बच जाता है। इस आधुनिक युग में भी यही चल रहा है। 'खंजननयन' की कंतो को भी पुरुषवर्ग के आक्रमण को झेलना पडता है। वह कानी और कुरुपा होकर भी पुरुष उसे वासनापूर्ति का उपकरण बनाने की कोशिश करता है। यह हमारे समाज का अभिशाप है कि स्त्री किसी भी उम्र की हो किसी भी स्तर की हो,पुरुष की वासना की शिकार बनती है।

नारीक्रय के शिकार है 'शतरंज के मोहरे' की कुल्सुम तथा सात घूँघटवाला मुखडा की मुन्नी। निरीह बालिका कुल्सुम कंजरों के हाथों से बेचकर वेश्याओं के बीच पहुँच जाती है। मुन्नी को बशीर के पिता खरीद लाये। उसे पालकर बडे होने पर बेचना उसका उद्देश्य था। मुन्नी बशीर के साथ एक शान्त परिवारिक जीवन का सपना देख रही थी। लेकिन बशीर अपनी वासना पूर्ति के साधन बनाने के बाद दस हज़ार अशर्फियों के लिए बेच डालता है। बशीर के इस अत्याचार ने उसके कोमल हृदय को

कठोर बना दिया। वह नवाब की पत्नी बनकर महल पहूँचते ही अपनी पुरानी भावनाये छोड देती है। वह कई पुरुषों के साथ संबन्ध जोडकर अपनी कार्यसिद्ध करती है। उसके मन में विद्रोही भाव जागृत करने की जिम्मेदारी बशीर को है। बशीर उस समाज का प्रतिनिधि है जो आर्थिक तथा शारीरिक स्तर से नारी का शोषण करता है।

जुआना के अनैतिक संबन्धों पर उपन्यासकार ने व्यंग्य किया है। जुआना अपने पति के जीते जी अन्य पुरुषों से संबन्ध रखती है और पति की मृत्यु के बाद वह गम की मूर्ति बनकर अभिनय करती है। नागरजी ने उसकी पातिव्रत्य पर व्यंग्य करते हुए उसके लिए 'सती', 'साध्वी' 'महादेवी' आदि शब्दों का प्रयोग किया है। जुआना उन नारियों का प्रतीक है जो संपूर्ण सुख प्राप्त करने पर भी अतृप्त है।

पुरुष समाज द्वारा नारी की ज़िन्दगी बनती है और बिगड़ती है। अतीत काल से नारी, समाज द्वारा शेषित एवं पीडित है। इस दर्दनाक स्थिति पर कई ऐतिहासिक घटनाओं एवं पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार ने प्रकाश डालने की कोशिश की है। आज भी प्रासंगिक ऐसे नारी जीवन की अभिव्यक्ति नागर के ऐतिहासिक उपन्यास को चार चॉद लगाने में समर्थ है।

धार्मिक संघर्ष

भारत के सामाजिक तथा राजनैतिक गतिविधियों पर धर्म का प्रभाव हर युग में पडा है। धर्म के नाम पर अनेक लडाइयाँ हुई हैं। आज भी हो रही हैं। भारत में जब मुसलमान लोग बाहर से आये तब से हिन्दू और मुसलमानों के बीच संघर्ष चल रहा है। आधुनिक भारत की सबसे अधिक चिन्ता जनक समस्या भी यही धार्मिक संघर्ष है। नागरजी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में इन पहलुओं पर विचार किया है।

मुगल शासन काल पर आधारित मानस का हंस तथा 'खंजननयन' में हिन्दू-मुस्लीम संघर्ष का जीता जगता चित्र प्राप्त है। मुगल शासको की दमन नीति का अंकन दोनो उपन्यासों में हुआ है। मानस का हंस में अयोध्या के रामजन्मभूमि-बाबरी मस्जित संघर्ष का प्रारंभिक रूप का चित्रण जो हुआ है वह बिल्कुल प्रासंगिक है। बाबरशाह ने अयोध्या में रामजन्मभूमि का मन्दिर तोडकर बाबरी मस्जिद के निर्माण करके भारतीय हिन्दुओं की धार्मिक आस्था पर प्रहार किया। उस समय हिन्दू लोग धार्मिक आचारों को डर के मारे चोरी छिपकर किया करते थे। रामजी का जन्मदिन भक्त गुपचुप मानाया करते थे। उन्हें अयोध्या रावण की लंका के समान लग रहा था।[1] सत्ता के बल पर हिन्दुओं तथा उनकी धार्मिक आस्था पर चोट पहूँचायी जाती थी। हिन्दुओं के मन्दिर तोडे जाते थे और पवित्र तीर्थस्थलों को अपवित्र बनाया जा रहा था। 'खंजननयन' में भी ऐसे कई प्रसंग प्राप्त होते हैं। सिकन्दर लोदी के शासन काल भी अराजकत्व पूर्ण समय था। हिन्दुओं की पवित्र भूमियों को मुसलमान शासक मलिन किये जाते थे - "बहुत से घाटों पर साधू और गौमाता के कटे सिर टंगे हैं। कहीं जादू-टोने का भय उत्पन्न करके कि यहाँ आओगे तो चोटी कट जाएगी, दाढी कट जाएगी घाट बन्दकर दिए हैं। स्नान-पूजा, यज्ञ-कीर्तन सब कुछ लोप हो चुका है।"[2] इन परिस्थितियों में लोगो की आस्था खण्डित हो गयी। उन्हें ईश्वर पर विश्वास तक लोपित हो गया था। मुसलमान द्वारा हिन्दुओं पर किये जानेवाले अत्याचारों का एक उदाहरण 'खंजननयन' में मिलता है। शकुरखाँ नामक मुसलमान अपने कोल्हू में बैल के बजाय अंधे सूर को बाँधकर काम करवाता है। अपने विरोधी धर्मवाले को पीडा पहुँचाने से वह मज़ा ले रहा था। सूर को बचाने की कोशिश करने के जूर्म में वह कंतो की हत्या भी करता है।[3]

---

1. नागर, मानस का हंस, पृ - 301
2. नागर, खंजननयन, पृ - 10
3. नागर, खंजननयन, पृ - 123

धर्म संबन्धी यह संघर्ष आधुनिक युग में भी पाया जाता है। 'पीढियाँ' उपन्यास में आयोध्या की रामजन्मभूमि-बाबरी मस्जिद की समस्या की नवीन हालत पर काशी डाल गया है। राजीव गाँधी के समय रामजन्मभूमि का ताल खोला गया और इस बात पर अयोद्या में बडे तनाव की स्थिति फैली थी।[1] भारत के सामने आज भी यही भूमि बडी समस्या है। अयोध्या की इस भूमि के नाम पर भारत में बरसों से हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष हो रहा है। इस इक्कीसवीं शति में भी मन्दिर-मस्जिद के बीच पडकर अनेकों की मृत्यु हो रही है और भारतीय जनजीवव अशान्त और अस्तव्यस्त बन गया है। भारत की इस ज्वलंत समस्या से उपन्यासकार सचेत हैं। इसके अर्थ हीनता उनके शब्दों में प्रकट है।

धर्म परिवर्तन आधुनिक युग से भी संबन्धित विषय है जो मुगलकाल से चली आ रही है। 'मानस का हंस', 'खंजन नयन', 'करवट' जैसे उपन्यासों में धर्मपरिवर्तन के विभिन्न कारणों को चित्रित किया गया है। मुगलशासन के समय आर्थिक लोभ से आकर्षित होकर कुछ हिन्दू लोग इस्लाम धर्म को अपनाते थे। हिन्दू धर्म की रुढियाँ और कट्टरता भी हिन्दुओं को अपने धर्म की उपेक्षा करने में प्रेरित करती थी। इस धर्म के अन्तर्गत अनेक धर्म और संप्रदाय उपजे जिनके कारण लोगों की उनमें आस्था और विश्वास कम होने लगे थे। ये जो हिन्दू मुसलमान बने वे अपने ही बन्धुओं पर आक्रमण करने लगे। इस बात को साबित करनेवाला कथन खंजननयन में मिलता है - "कुछ बरसों पहल सिकंदर सुल्तान ने जब गद्दी पर बैठने के बाद महावन से आकर मथुरा में पहली मारकाट मचाई थी तब जो परिवार जबरन मुसलमान बनाए गए थे वे ही इस समय शहर में सबसे अधिक आतंककारी है।"[2]

---

1. नागर, पीढियाँ पृ - 29
2. नागर, खंजननयन पृ - 10

अनेक लोगों ने अपने जीवन की रक्षा के लिए धर्म परिवर्तन को अपनाया। मुसलमानों के हाथ से अपने मन्दिरों को तोडते देखकर हिन्दुओं का अपने धर्म पर विश्वास कम हो गया। खंजननयन में एक लालाजी इस स्थिति को व्यक्त करते हुए कहते हैं - "इस समय कितने लोग अपने धर्म बदलने की बात सोच रहे हैं। हमारे कृष्ण भगवान तो अब अल्ला के आगे घुटने टेक चुके हैं।"[1] करवट में भी धर्म संबन्धी कुछ चित्र खींचे गये हैं। करवट की पृष्ठभूमि भारत की स्वतन्त्रता पूर्व काल है। तब अंग्रेज़ों की भाषा, आचार व्यवहार तथा उनके धर्म का प्रभाव भारतीयों पर पडा था। ईसाई और हिन्दुओं के बीच टकराहट भी उस समय हो रही थी। करवट में फादर जेकिन्स द्वारा हिन्दू देवी-देवताओं का अपमान करने की घटना मिलती है। उसने अपने जूतों के अन्दर राम और कृष्ण की तस्वीरें चिपाकर हिन्दुओं के धार्मिक आस्था की अवहेलना की। इन हिन्दू-विरुद्ध करतूतों के बावजूद भी कुछ भारतीय अपने इच्छानुसार हिन्दू से ईसाई बन गए। ईसाई लडकियों से शादी करने के लिए युवा लोगों ने धर्म परिवर्तन को तो कुछ लोगों ने अन्य स्वार्थ सिद्धि के लिए धर्मपरिवर्तन को तैयार हो गये थे। उपन्यास में पंडित त्रिवेणी सहाय द्विवेदी[2] तथा विपिन के पुत्र[3] ने धर्म परिवर्तित लोगों का अच्छा दृष्टान्त हैं।

नागरजी धर्म की विकृतियों के प्रति पाठकों को सजग करना चाहते हैं। धर्म जब देशकाल तथा अन्य परिस्थितियों को विकृत कर देता है तब उस धर्म का विरोध करना उचित मानव धर्म है। एकदा 'नैमिषारण्ये' में व्यास सोमाहुति कहता है - "अधर्म सबका शत्रु है। कभी-कभी देशकाल और स्वयुक्तियों के प्रभाव से अधर्म धर्म का वेश

---

1. नागर, खंजननयन, पृ - 66
2. नागर, पीढियाँ पृ - 157
3. नागर, पीढियाँ पृ - 314

धारण करके, किसी धर्म संघ की सर्वोच्च सत्ता हस्तागत करके यदि धर्म का रूप बिगाडे, अपने हीन व्यक्तित्व से अपने पद की मान-मर्यादा और आदर्श को आघात पहुँचाए तो उससे युद्ध करना, उसे परास्त करना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है।"[1] नारद ने धर्म की परिभाषा इस प्रकार प्रस्तुत की है - "यह शब्द धर्म धारणात्मक 'घृञ' घातु से 'मन्' प्रत्यय का योग करने से बनता है। इसका अर्थ है जो सबको धारण करे, जिस पर लोक स्थिति निर्भर हो।"[2] यज्ञदत्त धर्म के संबन्ध में कहता है - "सर्वभूत की हित-चिन्ता और मैत्री ही शाश्वत धर्म है।"[3] करवट मे देशदीपक अपनी धर्म संबन्धी विचार प्रकट करता है - जिस ब्रह्म से जतियाँ छोटी, बडी या म्लेच्छ बना दी जाती है, उस ब्रह्म से मैं नफरत करता हूँ। ....जो विचार या काम मुझे सच्चाई से जोड देता है। और मेरे मन में ऐसे खुबसूरत विचार लाता है... मेरी स्पिरिचुएलटी को पवित्र बना देता है, वह शायद ब्रह्म हो सकता है।[4] अयोध्या की भूमि के नाम पर हिन्दू-मुस्लिम के बीच संघर्ष चलनेवाले इस देश मे ऐसे भी कुछ युवा लोग हैं जो धर्म का मतलब मानवता मानते हैं। 'पीढियाँ' में भिन्न धर्मवाले युधिष्ठिर और जावेद एक ही थाली से खाना खानेवाले जिगरी दोस्त हैं।

नागरजी ने अपने इन उप्यासों में चित्रित भिन्न-भिन्न घटनाओं के द्वारा भिन्न धर्म के बीच की दूरी कम करने का ख्वायिश व्यक्त किया है। धार्मिक झगडे और भेद-भावों से एक ध्वंसात्मक वातावरण आजकल देश में व्याप्त है। इस ओर सचेत कर भारतीय संस्कृति के अनुरूप धर्म का रूप प्रस्तुत करके भारतीय जनमानस मे व्याप्त

---

1. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 291
2. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 223
3. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 222
4. नागर, करवट, पृ - 201

विषाक्त धार्मिक भावना को अमृत स्नान से पवित्र बनाने का एक महान प्रयत्न उपन्यासकार ने किया है। प्रस्तुत प्रयास के द्वारा नागरजी के ऐतिहासिक उपन्यास समकालीन तथा कालजयी बन जाते हैं।

आस्था और मानवतावाद

आधुनिक युग हर तरह से विद्रोह और अनास्था को प्रतिफलित करता है। इस निराशा पूर्ण युग में आशा और आस्था से लोगों को जागरूक करना साहित्य का अपना ध्येय है। नागरजी के ऐतिहासिक उपन्यासों में इन गुणों का समावेश हुआ है। नागरजी का विश्वास है कि आस्था जिजीविषा तथा मानवतावाद जैसे उच्च मूल्यों के बिना जीवन में विकास असंभव है। अनास्था के अन्धकार से घेरा हुआ व्यक्ति अपने जीवन में पराजित हो जाता है।

नागरजी ने मानवीय आस्था बढाने के लिए भक्ति को सबसे उचित साधन माना। भौतिक जीवन की जटिलताओं से निराश-हताश लोगों के लिए अमृत मंत्र है भक्ति। 'मानस का हंस' और 'खंजननयन' में भक्ति की महत्ता को रेखांकित किया गया है। माता-पिता द्वारा उपेक्षित तुलसी को रामभक्ति जीने की इच्छा प्रदान की थी। तुलसी के बारे में कहा गया है कि आस्था में वे अंगद का पाँव रहे हैं।[1] आस्था और मानवतावाद के प्रति नागरजी का दृष्टिकोण तुलसी के शब्दों से व्यक्त होता है - "श्रद्धा और विश्वास ऐसी संजीवनी-बूटी है कि जो एक बार घोलकर पी लेता है, वह चाहने पर मृत्यु को भी पीछे ढकेल देता है।"[2] अकाल और महामारी से पीडित लोगों को शान्ति और शक्ति देने के लिए तुलसी ने रामलीला का आयोजन किया था। उन्होंने

1. नागर, मानस का हंस, पृ - 106
2. नागर, मानस का हंस, पृ - 376

भक्ति से लोगों में आस्था और जिजीविषा को बढाया। उपन्यास में सत्य, आस्था और लगान को जीवन सिद्धि के मूल कहा है। भक्ति के द्वारा आस्था प्रदान करते का प्रयास उपन्यास में हर कहीं मिलता है - "राम थे, राम हैं, राम सदा रहेंगे और इस पृथ्वी पर एक दिन रामराज्य आकर रहेगा।"[1] 'खंजननयन' में भी भक्ति का महत्व दिखाया गया है। सूर अपनी नेत्र विहीनता के बावजूद भी जीवन में भक्ति की सहायता से आगे बढे। तुलसी और सूर, दोनों भक्ति के द्वारा अपनी काम वासना पर विजय पा लेते हैं। उनके लिए भक्ति ही जीवन की बुनियाद है। 'खंजननयन' में सूर की जीवनी के द्वारा जीवन में आस्था और विश्वास के स्थान पर विचार किया गया है। सूर कहते हैं - "विश्वास लाख हथौडी की चोट से भी नहीं टूटता लालाजी। नीलकंठ के समान विषपान करके भी विश्वास सदा अजर-उमर है - विश्वास से शक्ति उत्पन्न होती है।"[2] जीने के लिए आस्था की कितनी आवश्यकता है और इसमें भक्ति का योगादान क्या है, इन्ही बातों पर महापुरुषों द्वारा उपदेश दिया गया है। ग्वाल दाऊ सूरज से कहता है - "लोक मानस विखंडित और आस्थाहीन हो रहा है। इन्हें जीने के लिए आस्था चाहिए, शांति चाहिए, रस चाहिए। भजन-कीर्तन से अपनी आसक्ति बढाओ और लोकमंगल के लिए नाम का प्रचार करो।"[3]

'एकदा नैमिषारण्ये' में पुराने मूल्यों के द्वारा आधुनिक मानव में आस्था जगाने का प्रयास हुआ है। हमारी संस्कृति की गरिमा अनिर्वचनीय है। उसके प्रतिफलन से आज के परिष्कृत समाज की कई समस्याओं का समाधान ढूँढना भी उपन्यास का लक्ष्य है। इसका मुख्य पात्र भार्गव सोमाहुति आस्थावादी है। भारत चन्द्र की मानसिक

---

1. नागर, मानस का हंस, पृ - 361
2. नागर, खंजननयन पृ - 66
3. नागर, खंजननयन पृ - 88

दशा और उस समय के भारत की स्थिति एक समान थी। दोनों लूटेरों के आक्रमण से उत्साह रहित और निर्जीव सा बन गये थे। भार्गव सोमाहुति ने भारतचन्द्र को मृतावस्था से पूनरुज्जीवित करके उसे नयी आस्था प्रदान की थी। भारत देश में भी देशवासियों की एकता से ऊर्जा भरने की प्रयास भार्गव ने किया।

'शतरंज के मोहरे' तथा 'सुहाग के नूपुर' के समापन में आस्था का स्वर मुखरित है। शतरंज के मोहरे के दिग्विजय ब्रह्मचारी के द्वारा निराशा और फिर आस्थावाद के दर्शन होते हैं। वह एक बार निराशा में डूब जाता है - "यदि सत्य है तो ऐसा क्यों हुआ? पुण्य का फल पाप क्यों? विश्वास का फल विश्वासघात क्यों? हे सूर्यनारायण! हे बजरंग, तुम झूठे हो, ईश्वर नहीं है, प्रेम नहीं है, आस्था नहीं है, सब मिथ्या है, मिथ्या है।"[1] लेकिन बाद में वह उस परम सत्य को पहचानता है कि रात के बाद दिन अवश्य आता है। आस्था रहित मनुष्य संसार से बचने के लिए कभी आत्महत्या कर लेता है नहीं तो वह पागल बन जाता है। नवाब नसीरुद्दीन सत्तामोही बन्धुजनों के बीच अकेला था और इस अकेलापन ने उसे पागल बना दिया। 'सात घूँघट वाला मुखडा' में नवाब समरू निराशा से आत्महत्या करने के लिए विवश हो जाता है। इन नवाबों की ज़िन्दगी धन और विलासिता के बीच भी अतृप्त रहा। 'सुहाग के नूपुर' के द्वारा नागरजी ने अपना आस्थावादी दृष्टिकोण प्रकट किया है। मूलकथा चिलप्पतिकारम में कावेरी के जलप्रलय से कथा समाप्त होती है। नागरजी ने इस दुःखान्त घटना के स्थान पर कोवलन और कन्नगी के नये जीवन से अपने उपन्यास की परिसमाप्ति की है। अपनी सारी घन-संपत्ति नष्ट होकर निराशा में डूबे कावलन को कन्नगी ने जिजीविषा तथा नया विश्वास प्रदान किया।

---

1. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 206

नागरजी का आस्थावादी दृष्टिकोण उनके उपन्यासो द्वारा पाठक तक प्रवाहित होता है। अतीत की सुखद एवं दुखद घटनाओं का चित्रण तथा इतिहास पुरुषो की जीवनी के द्वारा आधुनिक मानव में जीने की स्फूर्ति और आस्था भरने का सफल प्रयास नागरजी ने किया है। आजकल मानव आस्था विहीन होकर इधर-उधर भटक रहा हैं। उसे लक्ष्यबोध से संपन्न बनाकर कर्तव्य एवं सामाजिक कल्याण की ओर उन्मुख करने के लिए ये उपन्यास निस्सन्देह सहायक हैं।

साहित्यक्षेत्र की समस्यायें

साहित्यकार का तालूक समाज से है। समाज के समस्याओं का प्रतिफलन साहित्यकार और उनके साहित्य पर पडना स्वाभाविक हैं। समाज के गुण-दोषो को प्रस्तुत करने का दायित्व भी एक सफल उपन्यासकार में निर्भर है। इसलिए साहित्यकार के लिए मित्रों के समान शत्रुओं का भी कोई कमी नहीं होती। विरोधी जन साहित्यकार केलिए अनेक बाधायें उपस्थित करती हैं। उनकी परवाह न करके आगे जानेवाले मात्र ही सफलता प्राप्त करते हैं। नागरजी के ऐतिहासिक उपन्यासों में इस विषय पर भी चर्चा हुई है।

'मानस का हंस' में तुलसीदास के साहित्यिक जीवन की झंकि प्रस्तुत की गयी है। तुलसी ने लोकभाषा में रामकथा की रचना करने का जब निश्चय किया तब कई पण्डितों के विरोध का सामना करना पडा। वे काशी और अयोध्या में इन लोगों के आक्रमणों का शिकार बने। कथा प्रवचन से भी तुलसी की लोकप्रियता बढी। इससे क्षुब्ध होकर अयोध्या के ब्राह्मण, पण्डे-पुजारी, महंत आदि ने एकत्र होकर उनके विरुद्ध षडयन्त्र रचा। तुलसी को बदनाम करने के लिए कई अपवाद फैलाया गया। 'रामचरितमानस' के रचनाकाल मे भी उन्हें कई विघ्नों का सामना करना पडा। मानस

को चुराने का असफल प्रयास भी हुआ। इन आक्रमणों में तंग आकर वे अयोध्या से काशी चले गये। लेकिन वहाँ भी उन्हें शान्ति नहीं मिली। उन्हें कई बार अपना स्थान परिवर्तित करना पडा। तुलसी की सहायता करने की वजह से उनका भक्त टोडरमल की हत्या उनसे शत्रुओं द्वारा हुई। वे काशी में एक मठ का गोस्वामी बन गये थे। पर वहाँ के आचार और रीतियाँ उन्हें अच्छा न लगने के कारण तुलसी ने उस पद को छोड दिया। तुलसी के जीवन में विरोधियों द्वारा जैसा उपद्रव हुआ था वैसा सूर के जीवन में भी हुआ था। सूर के संगीत, शकुन विद्या और शास्त्र ज्ञान से मथुरा में उनकी ख्याति फैली। इसे शत्रुओं की संख्या बढ गयी। उन्हें कुएँ में गिरकर मारने का प्रयास तक विरोधियों ने किया था।

आधुनिक काल में भी प्रतिष्ठित साहित्यकार को अनेक प्रतिबन्धों को झेलकर अपने कर्मपथ परचलना पड़ता है। 'पीढियाँ' में युधिष्ठिर को अपनी उपन्यास रचना के बीच कई लोगों से मिलना पडा। उनमें सहायक भी है और विरोधी भी। बी.पी. वर्मा नामक कपट नेता युधिष्ठिर के काम में बाधा डालने का प्रयास करता है। उसे यह भय लग रहा था कि युधिष्ठिर के उपन्यास के द्वारा उसकी कपटता खुल जायेगी। इसलिए युधिष्ठिर को उसके उद्यम से रोकने का बहुत प्रयास वह करता है।

साहित्य के क्षेत्र में आपसी छल-कपट का बोलबाला हो गया है। एक की प्रतिष्ठा दूसरे से सहा नहीं जाता। एक दूसरे को नीचे दिखाने का प्रयास करता रहता है। इस आधुनिक साहित्यिक परिस्थिति का सुव्यक्त चित्रण नागरजी के उपन्यासों में प्राप्त होता है।

अंग्रेजों का अनुकरण

अंग्रेज़ों ने जब से भारत पर शासन शुरू किया तब से ही उनका प्रभाव भारतीयों पर पडने लगा। उनकी वेष-भूषा, भाषा, आचार-विचार रहन-सहन, सभी को

भारतीयों ने आराधना की दृष्टि से देखा भारतीयों केलिए विशेष आकर्षक प्रतीत हुआ। उनका अन्धा-धुन्ध अनुकरण भारतीयों ने किया था। अंग्रेजी बोलने का प्रयास कभी-कभी हास्यास्पद बन जाता था। 'करवट' में अंग्रेज़ों के आगे प्रतिष्टा मिलने के लिए तनकुन की कोशिश विशेष उल्लेखनीय नैन्सी को प्रभावित करने के लिए अंग्रेज़ी बोलने की कोशिश करता है - "दिस बुक फार यू मेमहसाहब एण्ड नो दाम फार इट।"[1] वह अंग्रेज़ों के समान वेश धारण करता है और शराब भी पीता है। शराब पीना अंग्रेज़ों के लिए आम बात है। उनका अनुकरण करना भारतीय आधुनिकता का लक्षण समझते हैं। 'पीढियाँ' के युधिष्ठिर, जावेद, शकुन्तला आदि इस कोटि में आनेवाले हैं। इस उपन्यास का और एक पात्र बी.पी. वर्मा अंग्रेजी बोलकर अपने 'पण्डित्य' प्रदर्शन करते हैं। 'मगर गाँड नोज़', आई नेवर फेल्ट इट बिकाज़ आई नो कि इमोशन गाढा होता है और सेन्टीमेन्ट तो इट इज़ जस्ट ए पासिग फेज।"[2]

भारतीय अपने मौसम के अनुरूप वेश-भूषा छोडकर अंग्रेज़ी वस्त्रधारण को अपनाते हैं। 'करवट' में इसका वर्णन है "... अब बूट, कोट, पतलून वास्कट की दायीं-बायीं जेबों से छाती पर चमकती हुई रूपहली या सुनहरी घडी की चेन, हाथ में केन, सिर पर गोल फेल्ट टोपी, आँखों पर चश्मा लगाए शान से आते-जाते जवान पुरानी आबादी की गलियों में भी कम नज़र नहीं आते।"[3] शिक्षित युवा लोग अन्धविश्वासों और रुढियों का निराकरण करने लगे। नारियों ने पर्दा छोडकर अंग्रेजी पति-पत्नी के समान हाथ मिलाकर घूँमने का साहस भी अपनाया।

धर्म परिवर्तन या नाम में परिवर्तन भी अंग्रेज़ों को खुश करने के लिए कुछ लोगों ने किया था। 'करवट' में ऐसे प्रसंग मिलते हैं। कृपानारायण द्विवेदी मि.के. डेविड

1. नागर, करवट, पृ - 41
2. नागर, पीढियाँ पृ - 44
3. नागर, करवट, पृ - 338

बन गया[1] और टिकमसिंह, टी. सिंग हो गया। पंडित त्रिवेणी सहाय द्विवेदी ने अपना धर्म परिवर्तन किया।[2] अंग्रेज़ों को संतुष्ट करके बडे बडे पद प्राप्त करने के लिए लोग ऐसे काम करते थे। विदेशियों के खेल-कूद को भी भारतीयों ने बडी दिलचस्पी से अपनाया है। क्रिकेट की प्रचुरता यहाँ बरसों पहले से हुई है। अंग्रेज़ों के अनुकरण के विविध पहलुओं का चित्रण नगर के उपन्यासों में मिलते हैं। वे आज भी प्रासंगिक हैं। इस प्रकार के अन्धानुकरण से भारतीय मूल्यों का ह्रास होता है। अंग्रेज़ों के खूबियों को नज़रअन्दाज़ करने में हम असमर्थ रह जाते हैं। लेकिन जहाँ भारतीयता को बनाये रखना है वहाँ हम अंग्रेज़ीयत को अपनाते हैं।

राजनैतिक समस्याएँ

एक देश की राजनीति वहाँ के जनजीवन द्वारा साहित्य में प्रतिफलित होना स्वाभाविक है। साहित्य सामाजिक हो या ऐतिहासिक उसमें तदयुगीन शासन व्यवस्था की छाप ज़रूर पडती है। नागर के विविध ऐतिहासिक उपन्यासों में राजशासन के समय से लेकर स्वातन्त्योत्तर भारत के जनतन्त्र तक की राजनीति को उभारा गया है। इन शासकों के बीच युगों का अन्तर है, पर सत्तामोह, सत्ता का दुरुपयोग और युद्ध विभीषिका सभी युग में पाये जाते हैं। शासकों की विलासिता राजनीतिज्ञों की कुटिलनीति जैसे कई समस्यायें नागरजी के ऐतिहासिक उपन्यासों की विशेषताएँ हैं।

'शतरंज के मोहरे' अवध की नवाबी संस्कृति तथा तद्‌युगीन राजनैतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालनेवाला उपन्यास है। उस समय शासन व्यवस्था तथा संस्कृति इतनी गिर गयी थी कि धोबी का पुत्र तक नवाब के सिंहासन पर बैठने लगा

---

1. नागर, करवट, पृ - 320
2. नागर, करवट, पृ - 157

था। सत्ता मोही जन अपने कुटिल तन्त्रों से शासन हासिल करने का प्रयास कर रहे थे। इस उपन्यास में सन् १८२० ई. के कुछ पूर्व से लेकर सन् १८३७ ई. तक के लखनऊ का यथार्थ चित्रण हुआ है। शासकों की विलासिता तथा संस्कृति का ह्रास मात्र अवध से संबन्धित नहीं है। संपूर्ण भारत में कई बार कई शासन व्यवस्था में यह दिखाई पडा है। गादर के कुछ वर्ष पूर्व लखनऊ की राजनैतिक स्थिति अन्यवस्थि थी। नवाबों के अनैतिक तथा उच्छृंखल शासन प्रणालि अंग्रेज़ों को अवध अपनाने में सहायक बन गयी। गाज़ीउद्दीन हैदर तथा नसीरुद्दीन हैदर जैसे विलासी शासकों के कारण ही अंग्रेज़ी शासन के लिए भारत में अनुकूल वातावरण की सृष्टि हुई। इस उपन्यास में नवाबी शासन की ह्रासोन्मुखी प्रवृत्तियों द्वारा सामन्तवाद की ह्रासशीलता दिखाई गयी है। नसीरुद्दीन हैदर इस सामन्ती व्यवस्था का प्रतिनिधि है। वह विलास, जर्जर, दुर्बल नवाबों का प्रतीक है जो एक शतरंज के मोहरे के समान है। दिग्विजय ब्रह्मचारी के माध्यम से उपन्यासकार सामन्तवादी मूल्यों की अलोचना करते हैं। सामन्तवाद तथा अंग्रेज़ी शासन बराबर है। दोनों सामान्य जनता के लिए कुछ नहीं करते। इस संबन्ध में उपन्यास में कहा गया है - "नवाबों को अपनी विलासिता और शान दिखाने के लिए रुपयों की अवश्यकता थी, नवाबी दरबार के अफसरों-कारिंदों को लूट और रिश्वत की आवश्यकता थी, अंग्रेज़ों को तो हडपने की हविस थी हीं - इन सब बडे लुटेरों से आए दिन दबायी जाकर अवध की प्रजा हर तरह से त्रस्त हो उठी थी। नवाब देशी, उनके वजीर, अमूले, कारिंदे देशी और उन्हें चलानेवाली प्रेरणा शक्ति कंपनी सरकार के रेजिडेण्ट की विदेशी बन्दूकें और संगीनों थीं और इस विदेशी बन्दूकों की गोलियाँ इन संगीनों के धाव सीधे अवध की प्रजा की छाती पर ही होते थे।"[1]

---

1. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 71

उपन्यास में एक जगह सामन्तवादी नवाब नसीरुद्दीन हैदर के मुंह से ही प्रजातन्त्र का गुणगान होता है - "अबकी किसी जिन्दगी मे अगर मैं बादशाह बना तो इंग्लैण्ड की तरह पार्लियामेंट ज़रूर बनाउँगा। एक आदमी की बादशाहत असूलन गलत है। ....अगर हमारे यहाँ भी पार्लियामेंट होती तो मुझसे यह दीगर बादशाहों से अकसर जो जुल्म हो जाते हैं। वे न हो पाते।"[1] उन्नीसवीं सदी के नवाबी शासन की कमज़ोरियाँ दिखाकर प्रजातन्त्र को सामन्तवाद से बेहतर बताने का प्रयास उपन्यासकार ने यहाँ किया है।

'सात घूंघटवाला मुखडा' में भी कुछ राजनैतिक समस्याओं का अंकन हुआ है। मैडम जुआना अपने सैन्दर्य और बुद्धिपूर्ण चाल से सरघना की रानी बन जाती है। पर अपने दिल को काबू में रखना उससे न हो पाया। इसीसे उसका पतन हो जाता है। जुआना देश से अधिक महत्व अपने दिल को देती है। इसके संबन्ध में बशीरखां ने कहा है - "तुम्हारी रियासत अब महज तुम्हारा दिल भर ही हैं दिलाराम। जब उस पर ही तुम्हारा काबू नहीं तो यह समझ लो कि नवाब समरू की दी हुई रियासत के किसी आदमी पर भी अब तुम्हारा वह काबू नहीं रह गया। दिल के काबू में रहने से आलम काबू में रहता हैं।"[2] राजनैतिक नेताओं के लिए एक और सन्देश भी उपन्यास में है कि "सियासत का खेल पर्दा-दर-पर्दा सात फाटकों मे बन्द होकर खेलना चाहिए ताकि इस हाथ की खबर उस हाथ को भी न लगे।"[3]

'मानस का हंस' में नागरजी ने मुगलकालीन वातावरण को उभारा है। उस समय देश भर आतंक हो रहा था। हुमयूं और शेरशाह की लडाई से आम जनता का

1. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 335
2. नागर, सात घूँघटवाला मुखडा, विज्ञप्ति, पृ - 150
3. नागर, सात घूँघटवाला मुखडा, विज्ञप्ति, पृ - 85

जीवन अशान्त बन चुका था। अकबर उनके पूर्वजों की अपेक्षा कुशल शासक था। पर इनके बाद फिर स्थिति बिगड गयी। तुलसी कहते हैं - "अक्बर शाह के समय में थोडा बहुत सुशासन आया था, अब वह भी समाप्त हो गया। शासक दिल्ली में रहता है। उसे नित्य हीरे, मोती जवाहरात और सेना चाहिए. स्त्री और घन की लूट का नाम ही कलिकाल है, सारे पाप यहीं से आरंभ होते हैं।"[1] मुगल शासकों की अराजकतापूर्ण शासनरीति का विशद चित्रण उपन्यास में किया गया है। "हिन्दू-मुसलमान' तो हम तुम पंच होते हैं, राजा राजा होता है। ...वह बस लडवइयों को ही भर पेट खिला सकता है। हमारा कोई नहीं'[2] यह विलाप आधुनिक प्रजातन्त्र में भी गूँज उठता है। खंजननयन में भी मुगलकालीन राजनैतिक वातावरण की सृष्टि हुई है। खंजननयन में सिकन्दर लोदी के शासन काल की दमननीति का वर्णन हुआ है। उस समय की आतंक भरे वातावरण का परिचय इन शब्दों से मिलता है - "मुसलमान के राज में मारकाट के काजे कभी कोऊ बात होवे है भला। त्योहार के दिना, हमारी माँ-बहन के माथे को सिन्दूर आग की लपटों सौ उठ रथौ हैं चौराये-चौराये पै।"[3] हिन्दू प्रजा पर अनेक प्रकार के प्रशासनिक अत्याचार हो रहे थे। कहीं उनका धन लूट जाता था कहीं उनकी मान मर्यादा नष्ट होती थी। और उनकी धार्मिक भावनाओं पर आघात पहूँचाया जाता था। धर्मप्राण हिन्दू जनता को उनकी पवित्र नदियों तथा तीर्थस्थानों में स्नान करने से मना किया गया था।

आधुनिक राजनीति की कपटनीतियों पर प्रकाश डालनेवाले उपन्यास है 'करवट' तथा 'पीढियाँ'। 'करवट' ब्रिटीश शासकों की दमननीति को दिखाता है।

---

1. नागर, मानस का हंस, पृ - 90
2. नागर, मानस का हंस, पृ - 165
3. नागर, खंजननयन, पृ - 9

स्वतन्त्रतापूर्ण भारत का चित्रण इसमें हुआ है। नागरजी इससे यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि भारतीयों की बेवकूफी से ही यहाँ अंग्रेज़ी शासन हुआ था। नवाबों की विलासिता और उच्छृंखलता अंग्रेज़ी शासन का कारण बन गया। नवाब वाजिद अली शाह के समय वे इस प्रयास में कामयाब हुए। नवाब को गद्दी से उतारकर कलकत्ता भेजा गया। इस घटना से अवध में नवाब शासन का अन्त हुआ और राज्य अंग्रेज़ी के हाथ में जा पहूँचा।

'पीढियाँ' आधुनिक भारत के राजनीति के अन्दर्गत चलनेवाले कूटनीतियाँ तथा छल-कपट को खुलकर दिखाता है। स्वतन्त्रतापूर्व भारत मे आम जनता अंग्रेज़ियों से दमित थे। जब स्वतन्त्रता मिली तब भी विशेष फर्क नहीं पडा। प्रजातन्त्र में सत्ता मोही राजनेताओं के कारण जनजीवन दुस्सह हो गया। उपन्यास का वी.पी. वर्मा आधुनिक कपट राजनीतिज्ञों का प्रतिनिधि है। उसने सत्ता-लोभ से अपने मित्र सुमन्त को धोखा देकर उसे मुख्यमंत्रि पद से नीचे उतार दिया। अपने कार्यसिद्धि केलिए वर्ग संघर्ष पैदा कराने की बहुत कोशिश भी उसने किया। जावेद और युधिष्ठिर के बीच धर्म के नाम पर दरार पैदा करने का प्रयास भी उससे हुआ। श्रीमती जगदम्बा के ज़मीन अपनाने के लिए उसने जो चाल चलाया वह भी उस जैसे कपटनेताओं के खोखलेपन को दिखाता है।

आधुनिक भारतीय राजनीति के कुछ प्रमुख घटानाएँ भी पीढियों में चित्रित है जो भारत की तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों से पाठक को परिचित कराता है। ब्लूस्टार आपरेशन, इन्दिरागाँधी की हत्या जैसी घटनाएँ हमारे राजनीतिक समस्याओं का प्रतिफलन था। २ जून १९८४ को पंजाब के सुवर्ण क्षेत्र में कलाप फूट निकाला और उसे दमित करने का प्रयास भी हुआ। ब्लूस्टार आपरेशन नाम के इस योजना की नतीजा थी प्रधानमंत्री इन्दिरागाँधी की हत्या। इस हत्या के बाद दिल्ली में एन्टी-सिख

रायट लागू किया गया। पंजाब के सिख टेररिस्ट भी आपरेशन ब्लूस्टार का नतीजा है। जनरल वैद्या की हत्या टेररिस्टों द्वारा हुई जो ओपरेशन ब्लूस्टार के समय सेनाध्यक्ष था। इन घटनाओं के चित्रण से तद्युगीन राजनैतिक गतिविधियों के कुछ चित्र खींचे गये हैं।

सांस्कृतिक मूल्य चेतना

ऐतिहासिक उपन्यासों का एक प्रमुख लक्ष्य पुरानी संस्कृति की नई पीढि के साथ परिचय कराना है। एकदा नैमिषारण्ये इस लक्ष्य की पूर्ति करता है। इस ऐतिहासिक सांस्कृतिक उपन्यास में उपन्यासकार ने राष्ट्र प्रेम तथा राष्ट्रीय एकता का मोह प्रकट किया है। नागरजी अनेकता मे एकता के दर्शन की इच्छा प्रकट करते हैं - "अनेकता निस्सन्देह माननीय है, किन्तु अनेकता में एकता के दर्शन करनेवाला ही श्रेष्ठ श्रद्धावान होता है।"[1] उपन्यास में नारद बौद्ध तथा जैन धर्म के प्रभाव से निवृति मार्गी हो जाता है। किन्तु सोमाहुति कर्मशीलता और राष्ट्रप्रेम में देश की उन्नति मानता है और देश की उन्नति में अपनी निवृत्ति समझता है। वह कहता है - "मैं भी निवृति चाहता हूँ बन्धु किन्तु केवल अपने लघु व्यक्तित्व की नहीं, मेरा विराट व्यक्तित्व भी मोक्ष कामी है, उसे कैसे छोड दूँ। ....छोडो नारद, यह निकम्मी निवृति पथ की बातें। आओ हम मिलकर गाएँ गायन्ति देवाः किल घीतकानि धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे।"[2] उपन्यासकार अपने उपन्यास के द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना को जनमानस तक पहुँचाने का प्रयास करते हैं। भार्गव के माध्यम से अपना विचार व्यक्त करते हैं - "मैं सोचता था यह कच्छ, मच्छ, वराह, वामन, नृसिहादि देवों की पूजक प्राचीन आर्य

---

1. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 427
2. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 394

जातियों को तथा यक्ष, किन्नर नाग, द्राविड, गंधर्व, कोल, भील, असुर, दैत्य, किरात आदि असंख्य जन जातियों में चली आती हूई परम्परागत वैमन्स्यता और भेदों को मिटाकर उन्हें अब एक मातृभूमि की भावना से बाँध दूँगा। हिमालय और समुद्र के बीच की यह महाभूमि अब विश्रृंखलित होकर तो रह ही नहीं पाएगी। सिंधु से लेकर कामरूप तक अमरनाथ से लेकर रामेश्वरम तक यह सब जातियाँ शताब्दियों से एक दूसरे को आगे-पीछे ढकेलती हुई अब ऐसी गंज गई हैं कि उन्हें सुव्यवस्था दिए बिना कल्याण नहीं हो सकता।"[1]

प्राचीन काल से ही भारत में भिन्न संस्कृतियों और भिन्न जाति-धर्मों के बीच संघर्ष चला आ रहा है। आर्यावर्त खण्ड-खण्ड होकर धर्म और जाति के आधार पर अलग-अलग राज्यों में विभाजित हो चुका था। वर्ण व्यवस्था भी लोगों को लडा रही थी। इसी समय सोमाहुति भार्गव ने भावात्मक सांस्कृतिक एकता का शंखनाद गुंजायित किया। नैमिषारण्य में एक धर्म सभा का आयोजन हुआ। शैव और वैष्णवों के बीच भी संघर्ष था। राजनीति भी इन दो पक्षों में जुड गयी। इस द्वन्द्व की समाप्ति के लिए देश में एक धार्मिक एवं सांस्कृतिक अनुक्रम की आवश्यकता समझकर सोमाहुति, नारद मुनि, महात्मा सौति गिरागुरु गणपति नाग जैसे विद्वानों ने नैमिष में भावात्मक एकता का संकल्प लेकर आनदोलन चलाया। सोमाहुती एकता की आवश्यकता का बल देकर बताता है - "मैं अब यह स्पष्ट देखने लगा हूँ नारद, कि सामाजिक भावक्रांति का कार्य संपन्न हुए बिना कुशल से कुशल प्रशासन भी भारत खण्ड की रक्षा नहीं कर सकेगा और तुम्हारी अतुल लक्ष्मी ही कोई काम आएगी। असंगठित, अव्यवस्थित समाज सदा दुर्बल रहता है, भले ही उसके व्यक्तियों में भीम, कर्ण और अर्जुन से महा योद्धा ही

---

1. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 398

क्यो न हो, कलिकाल मे संघ ही शक्ति है।"[1] नागरजी ने इस उपन्यास के द्वारा भारत की विविधता में एकता लाने का प्रयास किया। उन्होंने अपनी बात में इस उद्देश्य को स्पष्ट भी किया है। - "नैमिष आन्दोलन को मैंने वर्तमान भारतीय या हिन्दू संस्कृति का निर्माण करनेवाला माना है। वेद, पूनर्जन्म, कर्मकाण्ड वाद, उपासनावाद, ज्ञान मार्ग आदि का अन्तिम रूप से समन्वय नैमिषारण्ये में ही हुआ है। अवतारवाद रूपी जादू की लकड़ी घुमाकर परस्पर विरोधी संस्कृतियों को घुला-मिलाकर, अनेकता में एकता स्थापित करनेवाली संस्कृति का उदय नैमिषारण्य में हुआ, और यह काम मुख्यता एक राष्ट्रीय दृष्टि से ही किया गया था।"[2]

नागरजी विभिन्न जातियों के मूल स्रोत एक ही वंश को मानते हैं। एक स्थान पर ऐसा कहा गया है - "है सौति, संक्षेप में तुम यों समझे कि मरुत, आदित्य, मनु, भरत, काश्यप, इस्वाकु आदि अपने प्रसिद्ध वंशधरों के नाम पर एक ही वंश के लोग दूर-दूर तक फैले हैं। वस्तु जगत की दृष्टि से यह अनेक होते हुए भी एक हैं।"[3] भार्गव सोमाहुति के द्वारा उपन्यासकार भारत की भावात्मक एकता की इच्छा बार-बार व्यक्त करते हैं। राष्ट्र के भिन्न-भिन्न वर्गों, भिन्न संस्कृतियों को इकट्ठा करके लोगों की अनेकता में एकता स्थापित करना भार्गव के माद्यम से नागरजी का लक्ष्य है। भार्गव गणपति से इस संबन्ध में कहते हैं - "मेरे पुरखों ने बृहतर भारत की परिकल्पना करके ही लाख श्लोकोंवाली महाभारत संहिता रची थी। अपने कुषाण साम्राज्य के इन जीर्ण खंडहरों को तो मिटा दिया, अब अनेक राष्ट्रों में बंटे हुए इस दुर्बल भू ख्ड के एक विशाल और शक्तिशाली भारत राष्ट्र बनाने का यत्न कीजिए।"[4]

---

1. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 329
2. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 13
3. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 105
4. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 353

'एकदा नैमिषारण्ये' पूरी तरह देश में सांस्कृतिक भावात्मक एकदा स्थापित करने के उद्देश्य से लिखा गया उपन्यास है। इस उद्देश्य की पुर्ति के लिए उपन्यासकार ने कई देवी-देवताओ तथा राजाओ का उल्लेख भी किया है जिनका अस्तित्व भारतीय संस्कृति के समान मिस्र्, ईरान, ईराक, जैसे विदेशों की संस्कृति में भी पाया जाता है। पुराने समय में इन देशों की संस्कृतियों मे एकरूपता थी और उस एकरूपता को आधुनिक संसार में भी लाना प्रस्तुत उपन्यास का लय्क्षा है।

भारतीय कुछ धार्मिक रुढियों तथा आचारों का अनुसरण प्राचीनकाल से करते आ रहे हैं। ये भारतीय संस्कृति के अविभाज्य अंग हैं। भारतीय संस्कृति की इन विशेषताओं को संस्कृति के प्रेमी नागरजी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों से समेट लिया है ताकि नयी पीढि भी इनसे परिचित हो सके। भारत में विभिन्न युगों में विभिन्न कुलों, जातियों और प्रान्तों में प्रचलित रीति रिवाज रहन-सहन तथा अत्य सांस्कृतिक विशेषताओं को अभिव्यक्त कर उत्तर और दक्षिण को समन्वित करने का उनका प्रयत्न निःसन्देह सफल है।

ज्योतिष विद्या को भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान है। इस आधुनिक वैज्ञानिक युग में इसके महत्व कम होने के बदले पहले से प्रबल दीख पडता है। पाँच सौ बरस पहले तुलसीदास और सूरदास के जीवनकाल में ज्योतिष विद्या का जो स्थान जन-जीवन में था उसे प्रमाणित करने में मानस का हँस तथा खंजननयन सहायक है। मानस का हंस में तुलसी को जन्मते ही पिता ने इसलिए छोडा कि उनका जन्मनक्षत्र देखकर पिता ने उन्हें अपने लिए हानिकारक मान लिया था।[1] सूरदास के जीवनी को

---

1. नागर, मानस का हंस, पृ - 21

चित्रित करते वक्त खंजननयन में भी कई जगह ज्योतिष, भविष्य प्रवचन आदि का ज़िक हुआ है। शतरंज के मोहरे में बादशाह बेगम ने ज्योतिष विद्या में अपना जो ज्ञान था उससे यह ज्ञान लिया कि नसीरुद्दीन हैदर का पिता बनने का योग सामने आ गया है। इससे यह मालूम होता है कि भारत के हिन्दुओं के समान मुसलमान लोग भी ज्योतिष, जन्मकुण्ठली आदि पर विश्वास करते थे। 'मानस का हंस' में हूमायूँ के बारे में ऐसा कहा गया है कि वह अपने ग्रह्-नक्षत्रों के अनुसार हर दिन का कार्य करता था।[1]

दक्षिण भारत के तमिलनाडु के कुछ विशिष्ट आचारों तथा उत्सवों का विवरण सुहाग के नूपुर में मिलता है। कावेरीपट्टणम में आयोजित नृत्य समारोह का वर्णन तद्युगीन सांस्कृतिक परिवेश को व्यक्त करता है।[2] उस समय नगरवधुओं को भी समाज में स्थान दिया गया था। देवदासी प्रथा जिस प्रकार हमारी संस्कृति का भाग था वैसे ही ये नगरवधुओं को भी समाज से प्रोत्साहन मिल रहा था। इन नगरवधुओं में से श्रेष्ठ नर्तकी को चुन लेता था और राजा के द्वारा उसका सम्मान होता था। दक्षिण भारत में विवाह के अवसर पर करनेवाले प्रबन्धों का चित्र भी कन्नगी-कोवलन की शादी के सन्दर्भ में मिलता है।[3] परिवार के वंशवृक्ष में नये सदस्य का नाम जोडना,[4] नारी की दाहिनी आँख भडकने से, आनेवाली आपत्ति का भय लगना[5] जैसे कुछ विश्वासों का उल्लेखन भी उपन्यास द्वारा व्यक्त किया गया है।

करवट उपन्यास के द्वारा ग्रामीणों के बीच प्रचलित कई मनोरंजकपूर्ण विश्वासें पर प्रकाश डाला गया है। जैसे एक गाँव में मनुष्य को सिंह बनानेवाली एक

---

1. नागर, मानस का हंस, पृ - 215
2. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 21
3. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 77
4. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 150
5. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 82

जडी है और सिंह को फिर से मनुष्य बनानेवाली दूसरी एक जडी भी है।[1] विवाह की वर्ष्-गाँठ में दुबारा विवाह करने का अभिनय जैसा आचरण भी भारत में कहीं कहीं दिखाई देता है। कुंवर शिवरतन सिंह तथा उनकी पत्नी अपने विवाह के पच्चासवें बरस में इस प्रकार फिर से शादि करते हैं।[2]

'शतरंज के मोहरे' में अवध के बेगाम के महल में चलनेवाले एक धार्मिक अनुष्ठान का चित्र मिलता है। बेगाम ने हिन्दुस्तानी तरीके से इमाम मेंहदी की छठी मनाना शुरू किया और बारह इमामों के लिए हिन्दू देवदासियों की भाँति एक एक पत्नी को भी अर्पित किया।[3] मुस्लिम संस्कृति में यह नया आचरण बन गया था। धार्मिक आडंबरों का एक मनोरंजक वर्णन 'एकदा नैमिषारण्ये' में है। नैमिष आरण्य में प्रचलित कई धर्म-उपधर्म तथा प्रत्येक वर्ग का आचार-व्यवहार का रोचक विवरण दिया गया है - ''अश्मकुट्ट साधक पत्थर से अन्न या फलमूल चबाकर कच्चा अन्न खाते थे, दन्तोलूखली दाँतों से चबा चबा कर कच्चा अन्न खाते थे। होतिय अग्निहोत्र करते थे, कोतिय ज़मीन पर सोते थे और पोतिय कपड़े पहनते थे- किसी का धर्म किसी से नहीं मिलता था। ... मिस्सक वन एक बहुत बडा धार्मिक पागलखाना लगा रहा था।"[4] ऐसे संस्कृतिक संस्पर्श से नागरजी ने प्रत्येक उपन्यास के कालखण्ड की तत्कालीन जनता की सांस्कृतिक अवबोध प्रदान किया।

तुलसी और सूर जैसे सांस्कृतिक नायकों की जीवनी पर आधारित उपन्यास लिखकर नागरजीने संस्कृति के प्रति उनकी अटूट आस्था को व्यक्त किया है। इन दोनों महान कवियों ने हमारी संस्कृति के एकता स्वरूप राम और कृष्ण को नायक बनाकर

---

1. नागर, करवट, पृ - 19
2. नागर, करवट, पृ - 346
3. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 44
4. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 21

काव्य रचे। ये दोनों भारतीय संस्कृति के प्रतिरूप हैं। भक्ति के अजस्र धारा को प्रवाहित कर भारतीय जनमानस को परिष्कृत करने और स्वच्छ करने का कार्य इन महापुरुषों ने किया। इन्हें समझने और समझाने का जो काम नगर ने अपने इन उपन्यासों के द्वारा किया वह सांस्कृतिक संकट के समकालीन सन्दर्भ में विचारणीय है।

निष्कर्ष

किसी भी साहित्य का प्रासंगिक होना उसकी सफलता का लक्षण है। विषय चाहे ऐतिहासिक हो या काल्पनिक, वर्तमान युग से संबन्ध जोडना साहित्य के लिए अनिवार्य गुण है। युगीन परिस्थितियों से अलग रहकर युग सापेक्ष साहित्य का सृजन नहीं किया जा सकता। कुछ कृतियाँ इसलिए शाश्वत बन जाती हैं कि वे प्रत्येक युग में अपनी प्रासंगिकता बनायी रखती हैं. नागरजी के ऐतिहासिक उपन्यास इस कोटि के हैं। उनमें चर्चित समस्यायें सभी युग में प्रासंगिक हैं। धार्मिक संघर्ष, नारी विषयक समस्यायें, राजनैतिक समस्यायें तथा वर्ग संघर्ष जैसी समस्यायें प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक दिखाई पडती हैं। राष्ट्रीय एकता भी आजकल बहुत चर्चित विषय है। आधुनिक प्रजातंत्रीय शासन व्यवस्था में संगठन का मूल्य बढ गया है। इसी संगठन शक्ति को प्राप्त करने के लिए सूरदास, तुलसीदास जैसे महापुरुषों ने बहुत प्रयास किया है। उपन्यासकार ने इस लक्ष्य को पाठक तक पहुँचाने के लिए पौराणिक कथाओं के द्वारा प्रेरणा दी है।

नागरजी के आठों ऐतिहासिक उपन्यास भारतीय वर्तमान युगबोध को प्रतिबिंब करते हैं। कथा की पृष्ठभूमि या पात्र ऐतिहासिक होकर भी इन उपन्यासों में वर्तमान जीवन के वस्तुपक्ष को बडी कुशलता से विश्लेषित किया गया है। इन रचनाओं में विस्तार से चित्रित सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक विशेषतायें पूरी तरह प्रासंगिक हैं। ऐतिहासिक तथ्यों की रक्षा करते हुए ही आधुनिक भावबोध को भी उभारने में ऐतिहासिक उपन्यासकार नागरजी सफल हुए हैं।

अध्याय ७

नागर जी के ऐतिहासिक उपन्यासों का शिल्पगत वैशिष्ट्य

अध्याय ५

नागर जी के ऐतिहासिक उपन्यासों का शिल्पगत वैशिष्ट्य

व्यक्ति की मानसिक अनुभूतियों के साहित्य में अभिव्यक्त करने के लिए मात्र भाषा की आवश्यकता नहीं, उसे आकर्षक, व्यंजक और सजीव बनाने के लिए शैली, बिंब, प्रतीक और भाषा को अलंकृत करनेवाले कई उपकरण भी अनिवार्य हैं। इन सहायक साधनों को शिल्प-सौन्दर्य अथवा शिल्प-विधान के नाम से अभिहित किया जाता है। 'शिल्प' से रचना या क्रियाकौशल का अर्थ विदित होता है।

उपन्यास के संबन्ध में शिल्प उसका अन्तरंग है। वह वर्ण्य विषय को सही ढंग से प्रस्तुत करता है। किसी भी उपन्यास के कला-शिल्प का मूल्यांकन केवल भाषा-शैली और विषय से नहीं किया जा सकता, उसके लिए कथा-शिल्प, चरित्रशिल्प संवाद-शिल्प तथा वातावरण भी आवश्यक हैं। हिन्दी उपन्यासों में प्रेमचन्द युग से एक निश्चित शिल्प-विधान शुरू हुआ। प्रेमचन्द और उनसे प्रभावित उपन्यासकारों ने उपन्यास मे कथा का महत्व, चरित्र-चित्रण की अनिवार्यता, भाषा तथा संवाद की क्लिष्टता आदि पर बल दिया। अमृतलाल नागर ने भी इसी परम्परा को स्वीकार किया है। उन्होंने शिल्प के प्रति सजगता दिखाई है। शिल्प के अन्तर्गत आनेवाले कथा शिल्प, चरित्र

चित्रण, देशकाल, भाषा कथोपकथन तथा उद्देश्य आदि पाँच तत्वों का पालन नागर ने अच्छी तरह किया है। ये तत्व एक दूसरे से अलग नहीं, एक ही चीज़ के भिन्न-भिन्न पाँच पहलू हैं।

उपन्यासों के लिए संरचना पक्ष का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। संरचना से तात्पर्य है सभी अंगों का सही संयोजन। नागरजी के उपन्यासों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने अपनी कृतियों के संरचनात्मक पक्ष के प्रति विशेष ध्यान दिया है। इन उपन्यासों के कथावस्तु चरित्र चित्रण तथा वातावरण पर तो हम पिछले अध्यायों में विचार-विश्लेषण कर चुके हैं। इसलिए प्रस्तुत अध्याय में इनकी भाषिक शैली तथा भाषिकेतर शैली पर प्रकाश डाला जाएगा। भाषा के विचलित प्रयोग, चयन, अप्रस्तुत विधान, समानांतरण आदि के द्वारा उपन्यास का चमत्कार बढाया गया है और संवाद पक्ष भी ऐतिहासिकता के लिए उचित ही है।

भाषिक शैली

औपन्यासिक संरचना में भाषा का प्रयोग सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। साहित्य का आधार है भाषा। इसलिए साहित्य को भाषिक कला कहा जाता है। साहित्यकार के भावों तथा विचारों का संवाहन भी भाषण द्वारा होता है। कथाकृतियों में भाषा की सार्थकता तभी सिद्ध होती है जब साहित्यकार की भावना जनसामान्य की भाषा में प्रस्तुत की जाती है।

अमृतलाल नागर के उपन्यासों की भाषा उनके सांस्कृतिक प्रेम तथा मानवतावादी जीवन-दृष्टि का परिचायक है। उनके उपन्यासों की भाषा, देशकाल पात्र और वातावरण के अनुकूल होने के साथ ही सरल एवं सहज भी होती है। अधिकांश उपन्यासों की

पृष्ठभूमि लखनवी समाज होने के कारण वहाँ की स्थानीय बोली का सुन्दर अभिव्यक्ति नागरजी के उपन्यासों की प्रमुख विशेषता है। यद्यपि उनकी मातृभाषा गुजराती है, तो भी उन्होंने हिन्दी को अपनी साहित्य-भाषा स्वीकार किया है। इसका कारण उन्होंने यह बताया है कि उनके साहित्य का पालन-पोषण हिन्दी ने ही किया है।

नागरजी ने अपने उपन्यासों के लिए विविध पृष्ठभूमियों का निर्धारण किया है। उनके उपन्यासों में हास्य-व्यंग्य सामाजिकता, ऐतिहासिक तथा जीवनीपरक विशेषतायें मिलती हैं। हर एक पृष्ठभूमि के लिए भिन्न-भिन्न भाषा और शैली का प्रयोग होना ज़रूरी है। नागरजी के जीवनानुभव और समृद्ध शब्द भण्डार इस आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। उनके ऐतिहासिक उपन्यासों के विश्लेषण से उनकी अभिव्यक्ति क्षमता तथा भाषापरक जीवन्तता का परिचय पाठकों को मिलता है। आम जनता के जीवन से जुडी हुई भाषा का प्रयोग इन उपन्यासों को जनता के निकट लाने में सहायक सिद्ध हुआ है।

नागरजी के अधिकांश उपन्यासों की पृष्ठभूमि अवध देश है। अवधी भाषा के हर रंग को इन उपन्यासों में उन्होंने उतारा है। वहाँ के नवाबों की भाषा, आम जनता और व्यापारियों की भाषा, गलियों की भाषा जैसे वहाँ प्रचलित कई आंचलिक भाषाओं को उपन्यासों के विविध पात्रों के लिए प्रयुक्त किया गया है। अवधी और ठेठ अवधी का प्रयोग 'मानस का हंस' में खूब मिलता है।

इसमें सामान्य पात्र अवधी में वार्तालाप करते हैं। तुलसी के जन्म के समय पर हुई गाँववाली स्त्रियों का यह कथन इसका उदाहरण है-

"अब भाई, जलम, मरन तो कोऊ के बसकी बात है नाहीं। हुलसी बिचारी तो आपै दुखियाय रही है। कल संझा के बखत इत्ते-इत्ते तरद उठे पर फिर बन्द हुई

गए। रात से तौ बिचारी के जर भी चढी आय है। हमसे रोयके कबै कि भौजी जाने कौन बरम-राकस हमरे पेट में आयके बैठा हैं।"[1]

ठेठ अवधी का प्रयोग भी है-

और एक उदाहरण है-

"हियां तो शब शाघू महात्मा तर माल चामते हैं और भगतिनन शेरशाजेग शाघते हैं। और ये शरऊ हियां ब्रह्मचर्य फैलई है।"[2]

'करवट' तथा 'पीढियाँ' में भी लखनवी बोलचाल की भाषा का खूब प्रयोग मिलती है। 'करवट' में अवध के चौक की भाषा यों दिखाई है -

"चिढै विढै नहीं भैयाजी मुला बात ये भई कि समसेर अली कपतान ने ये अडर निकाल दिया है।"[3]

'पीढियाँ' में भी ऐसी भाषा है। दूकानदार महादेव का शब्द -

भैयाजी, यू तनिक आपन पैर-गाड़ी सरकाय के अलग खड़ी कर दिया, हमका तो छूवते डर लागत है। यू डंगरेज लोग का चीज़ बनाय हैं सकुर।"[4]

उर्दू - फारसी मिश्रित अवधी 'शतरंज' के मोहरे तथा सात घूँघटवाला मुखडा में कई जगह मिलते हैं। जैसे बशीर खां के ये शब्द - 'याद रखो दिलराम सियासत भी पेशेवर रक्कास होती है। उसके पास दिल नहीं होता और कोई हुस्न की मलिका

---

1. नागर, मानस का हंस, पृ - 34
2. नागर, मानस का हंस, पृ - 282
3. नागर, करवट, पृ - 17
4. नागर, पीढियाँ पृ - 121

ऐसी बेदिल सिसायत को अपनी चेली बनाये बगैर तख्तोताज की मलिका बन ही नहीं सकती।"[1]

'खंजननयन' में फारसी और अरबी तथा व्रजभाषा का खूब प्रयोग हुआ है। इसके एक पात्र सन्त दिलखुश शाह का कथन इन सब भाषाओं का मिश्रित रूप है-

"यही तो भेद की गाँठ है। जो उसकू खेल ले तो निहाल हो जाए। मेरे माशुक की यही तो अदा है। पर्दा उठा के एक ढलक अपना जलवाये बुस्न दिखलाया, फिर गायव। अब तुम सिर घुने, मजनू बने, वासुं मिलने की राह तलाश करो। तसब्वुफ की हकीकत ही यही है, खुदी मिटै तो खुदा मिले।"[2]

संस्कृत और बंगाली युक्त हिन्दी भी नागरजी के पात्र बोलते हैं। 'मानस का हंस' में पं. रविदत्त ऐसे मिश्रित बोली बोलता है-

"अहो, एइ शाला बोण्डो गोशाई एह बार फिर एशे देखेची।"[3]

'पीढियाँ' में बंगला भाषी अविनाश कहता है –

"अबे चाटूजी नहीं, चाट्टूज्जे। अंग्रेज़ लोग शाल होमारा उच्चारेन भ्रष्ट करके चाटोर्जी बना दिया। एई ब्रिटिश लोग को तो झांटा मार-मारके बाहेर निकाल देना होगा।"[4]

शिक्षित तथा विद्वान लोगों के लिए संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रयुक्त किया गया है। 'एकदा नैमिषारण्ये' के भार्गव सोमाहुति, शौनक मुनि आदि की भाषा दार्शनिक, गंभीर

---

1. नागर, सात घूँघटवाला मुखडा, विज्ञप्ति, पृ - 13
2. नागर, खंजननयन, पृ - 164
3. नागर, मानस का हंस, पृ - 93
4. नागर, पीढियाँ पृ - 312

एवं परिष्कृत है। ये पौराणिक पात्र वेद-पुराण, उपनिषद आदि के उद्‌भट विद्वान होने के कारण इनके मुंह से आम भाषा का निकलना अस्वभाविक लगेगा। इसलिए नागरजी ने गंभीर सुसंस्कृत भाषा इनके लिए प्रयुक्त किया है। भार्गव सोमाहुति के शब्द देखिए - "हे नृप श्रेष्ठ, आदि वेदव्यास भगवान् श्रीकृष्ण द्वैपायन रचित जयग्रन्थ पर आधारित उन्हीं के शिष्य पूज्य वैशापायन द्वारा रचित भारत संहिता में बौद्ध सम्राजट अशोक के शासनकाल में हमारे पूर्वजों ने आशाओं का समन्वय करके उसे एक लाखों श्लोकों की महाभारत संहिता बना दिया था।"[1] 'खंजन नयन' में आचार्य वल्लभ की भाषा भी इसका उदाहरण है। उनकी बोली संस्कृत से गंभीर बनी हुई हिन्दी है-

"जिस प्रकार घने वृक्षों की छाया से शुभ्र स्फटिक अपनी श्यामता का भ्रम कराता है, उसी प्रकार तुम्हारा अंतः स्फटिक भी अब तक अंधेरे में था। लो अब उसे साक्षात् देखो।"[2]

इस उपन्यास के अन्य विद्वान लोग जैसे स्वामी हरिदास, पं. ज्ञानेश्वर, विट्‌ठलनाथ आदि भी ऐसी प्रौढ भाषा बोलते हैं। संस्कृतनष्ठ दार्शनिक भाषा का उदाहरण भी है - "पृथ्वि आदि भूत चतुष्टय के अतिरिक्त हमे ज्ञान-रूप-दर्शन की भी प्रतीत होती है। चैतन्य चितस्वरूप ज्ञान दर्शन रूप है और शरीर अनित्यरूप जड है, जडता में चेतना उसी प्रकार रहती है, जैसे म्यान में तलवार।"[3]

'पीढियां' तथा 'करवट' अंग्रेजी शासन की पृष्ठभूमि में रचित होने के कारण अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी का प्रयोग उनमें बहुत मिलता है। करवट में नैन्सी, पार्किन्सन

---

1. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 171
2. नागर, खंजननयन, पृ - 197
3. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 285

जैसे अंग्रज़ों के समान अंग्रेज़ी शिक्षित भारतीय भी अंग्रेज़ी या अंग्रेज़ी मिश्रित हिन्दी बोलते है, जैसे नैन्सी की भाषा- सो यू हैव कम मै फ्रेन्ट। इस बण्डल में क्या? लाये हो बंसीढर?' बंसीधर उत्तर देता है - "दिस बुक फार यू मेमसाहब एण्ड नो दाम फार इड।"[1] अंग्रेज़ी शिक्षित एक लडके का अंग्रेज़ी बोलने का प्रयास ऐसा है - 'दे आर लूटिंग अवर खेत, सर"[2] 'पीढियाँ' में भी ऐसी मिश्रित भाषा मिलती है, जैसे बी.पी. वर्मा की भाषा - "मगर गाँड नोज़ आई नेवर फेल्ट इट बिकाज़ आई नो कि इमेशान गाढा होता है और सेन्टिमेन्ट तो इट ईज़ जस्ट ए पासिग फेज़।"[3] डॉ. जगदीश नारायण टण्डन जैसे शिक्षित लोग शुद्ध अंग्रेजी बोलते हैं - 'यू शैल शिक्कर सुन माई सन। गाँड ब्लेस यू।"[4] अंग्रेज़ी के हिन्दी उच्चारण मे जो फरक है उसे भी उपन्यास में सूचित किया गया है। अंग्रेज़ लोग धरम के लिए ढरम वंसीधर के लिए बंसीढर जैसे प्रयुक्त करते हैं।

भाषा-चतुर नागरजी ने पात्र और उनके भाव के अनुसार भाषा का प्रयोग किया है। ऐतिहासिक तथ्यों का उद्घाटन करने के लिए गंभीर भाषा का प्रयोग किया गया है तो पात्रों के कोमल भावों का प्रकाशन सरल कोमल भाषा में किया गया है। अलंकृत और काव्यात्मक भाषा नागरजी के ऐतिहासिक उपन्यासों को आकर्षणीयता प्रदान करती है तथा उनके काल्पनिक पक्ष को चमत्कार प्रदान करती है। 'मानस का हंस', 'सुहाग के नूपुर', 'एकदा नैमिषारण्ये' जैसे उपन्यासों सी कलात्मक भाषा के उदाहरण मिलते हैं।

इज्या और भार्गव के प्रेमपूर्ण क्षणों का विवरण इस प्रकार दिया गया है -

---

1. नागर, करवट, पृ - 41
2. नागर, करवट, पृ - 161
3. नागर, पीढियाँ पृ - 44
4. नागर, पीढियाँ पृ - 33

"कामना जव मन से उठती है तो खण्डों मे बँटकर रंगों की विवधता मे विभाजित होकर, परन्तु दृष्टिपथ पर आते ही सप्तरंग एक रंग बन जाते हैं, खण्डों में कामना की शक्ति एक होती है, वह अखण्ड होती है और उसका प्रभाव पूर्ण होता है"[1]

भावात्मक प्रसंगों में उनकी भाषा अत्यन्त काव्यात्मक बन गयी है। तुलसी-मोहिनी प्रसंग का चित्रण देखिए - "मोतियों टँके छूप छांही रंग के लहराते घाँघरे, चोली और ओढ़नी में हीरे, पन्नों और मानिकों से सढ़ी हुई मानवती मोहिनी के चेहरे पर यह सुनकर सुहाग चढ़ गया। दर्प-भरी मुस्कराहट रीझ भरी आँखें और मद-भरी लचकती इठलाती काया ज्यों-ज्यों तुलसी की ओर बढती चली त्यों-त्यों तुलसी का मनोवेग बढने लगा।"[2]

नागर के उपन्यासों में काव्यात्मक उक्तियाँ भी मिलती हैं। 'मानस का हंस', 'एकदा नैमिषारण्ये', 'पीड़ियाँ' आदि उपन्यासों में काव्यांश मिलते हैं। 'एकदा नैमिषारण्ये' में भार्गव सोमाहुति द्वारा एक भारतीयमंत्र तथा यूनानी सेठ कौरोष द्वारा उसका युनानी अनुवाद दिया गया हैं। जो उपन्यास की गरिमा बढाते हैं वे इस प्रकार हैं-

"यः वः मेधा असुर। परिजस वसुमनस्तमम्यम् धावोः अस्वोः। अस्थवत यत च मंनसः आयप्ता अषात् सचा। यैः रमन्तो दधीत स्वात्रै।"

इसका यूनानी अनुवाद है -

"ये वाओ मजदा अहुरा। पहरी जसाइ वाहु मनघह
मइब्यो दाबोइ अव्हाओ। अस्त्वसमचा हयात चा मनंघहो।।
आयप्ता अषात् हचा। याइश रथन्तो देइदीत् ख्वाथ्रे।"[3]

---

1. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 454
2. नागर, मानस का हंस, पृ - 142
3. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 279

आलंकारिकता और अप्रस्तुत योजना औपन्यासिक भाषा को अधिक आकर्षक बना देती है। 'सुहाग के नूपुर' में कावेरीपट्टणम का यह वर्णन इसका उदाहरण है -

"रथो के घोडों आदि के साथ राजपथ पर दूर-दूर तक दौडती दिखाई देती मशालें ऐसी लगती है मानो आकाश पर सूर्य का आना-जाना तारे भवकम्प से स्खलित हो धरती पर मुँह छिपाने चले आये हो।"[1] 'मानस का हंस', 'खंजननयन', 'सात घूंघटवाला मुखडा' आदि उपन्यासों मे भी उपमा, रूपक, अप्रस्तुत प्रयोग आदि खूब मिलते हैं। जैसे 'सात घूंघटवाला मुखडा' में प्रयुक्त ये कथन –

"शोक का मुखौटा उतर गया"[2] तथा "जुआना के गुस्से की आग पर बशीर की ठंडी हंसी का पानी पडा।"[3] आदि ऐसी आलंकारिक भाषा नागरजी के प्रायः सभी उपन्यासों में प्राप्त होती है। अलंकारयुक्त भाषा का उदाहरण है 'पीढियों' का यह भाग-

''हवागाडी की पों-पों ने तीन-चार नौकरों को दो-तीन दरवाज़ों से दरवाज़ों से यों निकाल दिया जैसे दरबा खोलने पर मुरगी के चुज़े फडफडाकर निकले।"[4] लालावल्लभदास के घर के नौकरों के सेवा भाव का यह चित्र हास्य रस जनक है। 'करवट' में भी इस प्रकार भाषा को अलंकृत करके पेश किया गया है। त्रिलोकी बाबू और पत्नी मैगी के मिलन के बारे में उपन्यासकार के शब्द ऐसे हैं - "हवेली के कुछ कमरों की सजावट करते-करते दो-तीन रोज के भीतर ही मैगी त्रिलोकी नाथ ने मन महल की सजावट भी करने लगी।"[5]

---

1. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 9
2. नागर, सात घूँघटवाला मुखडा, विज्ञप्ति, पृ - 77
3. नागर, सात घूँघटवाला मुखडा, विज्ञप्ति, पृ - 112
4. नागर, पीढियाँ पृ - 75
5. नागर, करवट, पृ - 111

मुहावरे और लोकोक्तियाँ भी नागरजी के ऐतिहासिक उपन्यासों की भाषा की विशिष्टता है।

'शतरंज के मोहरे' में 'सूप बोले तो बोले, चलनी क्या बोले जिसमें बहतर छेद', 'तवे पर रोटी सिकी सबने खायी, तवा कितना जला ये कौन देखता है' जैसे कहावतों का उपयोग किया है। 'मानस का हंस' में 'नाक रगडना', 'तितिर बितर होना', 'थाली का बैंगन', 'बालू की दीवार की तरह ढहना', 'प्रशंसा का हिमालय' जैसे कहावतें मौजूद हैं। 'पीढियों' में 'ईंट का जवाब पत्थर से देना', 'चील के गोंसले में माँस न मिला', और 'खंजन नयन' में तलवार जैसी पैनी बात, 'झूठ-मूठ सती का तेज दिखाना' आदि लोकोक्तियों से नागरजी ने भाषा को मार्मिक बना दिया है।

शब्दों का विचलित रूप और विशिष्ट चयन भी प्रस्तुत उपन्यासों को नवीन तथा आकर्षक बना देते हैं। सामान्य नियम बन्धन तथा चलन को छोडकर शब्दों को नए तरीके से प्रयोग करना विचलन है। नागर के ऐतिहासिक उपन्यासों के नाम ही विचलित प्रयोग का उदाहरण हैं। 'सुहाग के नूपुर' को ही देख लें। सुहाग कोई व्यक्ति नहीं जिसे नूपुर पहना सके। इस शीर्षक का तात्पर्य है उपन्यास की नायिका कन्नगी के सुहाग का प्रतीकवत नूपुर इसी प्रकार 'मानस का हंस' का तात्पर्य 'रामचरितमानस' के रचयिता महाज्ञानी तुलसीदास से है। 'हंस' शब्द ज्ञानी आत्मा के लिए साहित्य में प्रयुक्त होता है।

नागरजी के उपन्यासों की और एक विशेषता उनमें निहित शब्द भण्डार है। विभिन्न भाषाओं से स्वीकृत अनेक शब्दं को अपने पात्रों के लिए उन्होंने प्रयुक्त किया है। देशकाल, परिस्थिति तथा पात्रों की स्थिति आदि के अनुरूप शब्दों का विचलित रूप, संस्कृत के तत्सम (तुषार पात, पुण्यत्रेय, पषिद, कैवल्य, मोदक) और तदभव (धरम

गुन, मानुष, सरीर, यहिका, वीसराम) तथा अंग्रेज़ी शब्दों (फ्रेन्ट, रिकवर, गाँड) का भी प्रयोग इन उपन्यासों में प्राप्त हैं। कुछ हिन्दी ध्वनियों को बंगालियों के उच्चारण मे परिवर्तन आ गया है। 'स' के लिए उपन्यास के बंगालि लोग 'श' का प्रयोग करते हैं, जैसे शाला (सला) जीश (जिस), नाशिकता (नास्तिकता) आदि। लखनऊ की गलियों की भाषा में भी ऐसे कई शब्द मिलते हैं। जैसे 'करवट' में है - "नहीं नहीं, इस जलूल थै हैं, तुमने तल्लू तो थिलाया, मुनौदा तो थिलाया, हम भी थायेंगे।"[1] यहाँ 'क' के लिए 'त' (तो), ख' के लिए 'थ' (थिलाया, थायेंगे) आदि का प्रयोग मिलता है। अंग्रेज़ी लोगों द्वारा हिन्दी शहब्दों का उच्चारण ऐसे ध्वनि विचलन के साथ होता है। 'पीढियाँ' में बंसीधर का नाम अंग्रेज़ी लोग 'बसीढर' और धर्म को 'ढरम' कहते हैं। गाँव के नये शिक्षित लोगों ने अंग्रेज़ और हिन्दी को मिलाकर कुछ नये रूप ही बनाया है। जैसे 'करवट' में एक बच्चे का कथन "दे आर लूटिंग अवर खेत सर।"[2] यहाँ 'लूटिंग' शब्द लूट को अंग्रेजीकरण करके बनाया गया है। अवध की भाषा के ऐसे कई प्रयोग है जो साधारण से विचलित है। 'सातघूंघटवाला मुखडा' में खलीफा कालेखां का शब्द भी इसका उदाहरण है - "हाँ-हाँ, चौं नई, चौ नईं।"[3]

भाषा के कुछ विशिष्ट चयन भी नागरजी ने किया है। जैसे 'सच-झूठ की लुका-छिपी'[4] जैसा प्रयोग और खुर्रटे का शब्द - खर्र खोंड ओंड ओ— ओं — खुर्र[5] - आदि सन्दर्भोचित हैं।

---

1. नागर, करवट, पृ - 101
2. नागर, करवट, पृ - 161
3. नागर, सात घूँघटवाला मुखडा, विज्ञप्ति, पृ - 56
4. नागर, सात घूँघटवाला मुखडा, विज्ञप्ति, पृ - 72
5. नागर, करवट, पृ - 128

कहीं कहीं उपन्यासकार अपने कथन की पूर्ति स्वयं न करके पाठकों की कल्पना के लिए छोड देते हैं। इसके लिए बिन्दुओं (.......) का प्रयोग किया जाता है। पीढियाँ में युधिष्ठिर और साथियों के बीच के वार्तालाप में ऐसे प्रसंग हैं। जैसे "उसे पूरा कर लिजिए लेकिन पहले हमारे लिए दो बोतल....."[1] 'सात घूँघटवाला मुखडा' में मुश्तरी का कथन भी ऐसा मिलता है। वह जुआना के बारे में कहती है - "इसने अपने मालिक के सिपहसालार को अपने हुस्न का लालच......"[2]

शब्दों की आवृत्ति से भी भावों को व्यक्त किया गया है। जुआना अपने मन को कठोर बनाकर कहती है - "इसलिए जुआना के अन्दरवाली औरत अब दूसरों को अपना बनाएगी और अपनी ही बनी रहेगी, सिर्फ अपनी, सिर्फ अपनी।"[3] 'एकदा नैमिषारण्ये' में भारतचन्द्र का स्वगत चिन्तन विशेष ढंग का है -

"जूही, जूही.... यूथी! चनन मनन चनन....."[4]

इन प्रयोगों के अलावा 'सुहाग के नूपुर' में कुछ तमिल शब्दों को प्रयुक्त किया गया है यथा-कासु (पैसा) कलन्जु (सिक्के), पुएल्ला (प्रियतम), वैत्तिले (पान), तूण्डाविलक्क (लटकाए गए दीपक) आदि। अरब, युनानी जैसी भाषाओं से भी कुछ शब्द नागरजी के उपन्यास से मिलते हैं।[5]

नागरजी के इन ऐतिहासिक उपन्यासों में भाषिक शैली के ऐसे अनेक रूप मिलते हैं जिनसे उनकी भाषा कुशलता का परिचय हमें प्राप्त होता है। इस भाषाशैली में संवाद योजना भी आ जाती है जिसका भी महत्वपूर्ण स्थान है।

---

1. नागर, पीढियाँ पृ - 53
2. नागर, सात घूँघटवाला मुखडा, विज्ञप्ति, पृ - 67
3. नागर, सात घूँघटवाला मुखडा, विज्ञप्ति, पृ - 26
4. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 311
5. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 279

संवाद योजना

कथा के विकास, पात्रों के चरित्र-चित्रण, वातावरण की सृष्टि तथा उद्देश्य की पूर्ति के लिए संवाद का महत्व विशेष उल्लेखनीय है। कुशल साहित्यकार उचित संवाद पक्ष के द्वारा अपनी कृतियों को प्रभावशाली और मनोरंजक बना देते हैं। संवाद से पात्रों की मानसिक स्थितियों का विवेचन और उसका संप्रेषण साध्य होता है। नागरजी ने भी अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में संवाद योजना पर विशेष ध्यान दिया है। उनके संवाद की विशेषता उसका पात्र और परिस्थिति के अनुकूल होना है। उनके पात्रों में विद्वान हैं, आम जनता, सुशिक्षित, अशिक्षित, राजा, मुनि और पौराणिक लोग भी शामिल हैं। नागरजी के प्रत्येक पात्र का संवाद उसकी मानसिक, सामाजिक तथा धार्मिक स्थिति के अनुसार है।

पात्रों के चरित्र-चित्रण में संवाद कभी सहायक बन जाता है। मानस का हंस में तुलसी और रत्नावली का संवाद उनके मनोभाव का परिचायक है।

"मेरा द्वन्द्व आरंभ ही से काम-वासना से था। मेरी अन्तर-बाह्य चेतना अपने भीतरवाले काम हठ से अपने राम को श्रेष्ठ मानती थी। मैं ने उसे ही जीतना चाहा था पर तुमने मुझे रिझाया-भरमाया कि क्या कहूँ।"

"तुम्हारे रूप-गुण और पौरुष-पांडित्य पर मैं भी कुछ कम नहीं रीझी थी। यदि तुम आरंभ में मेरे आगे इतने दीन न बने होते तो मैं ही तुम्हारे प्रति दीन बन जाती। मेरा हठ तो तुम्हारी दीनता ने जगाया।"[1]

---

1. नागर, मानस का हंस, पृ - 214

रत्नावली और तुलसी के आपसी प्रेम तथ रत्नावली की वास्तल्यभाव को प्रकट करनेवाले एक संवाद भी है। रत्नावली पति से पूछती है -

'ऐसे घूर कर क्यों देखे रहे हो मुझे। इन पाँच दिनों में क्या कोई विशेष परिवर्तन आ गया है मुझमें?'

"हाँ तुम मुझे पहले से अधिक सुन्दर और प्रिय लग रही हो।"

"सुन्दरता मेरे रूप में है या तुम्हारे लोभ में"

"पहले तुम बताओं, चन्द्रमा और चाँदनी में कौन सुन्दर है"

"सौभाग्यवती रत्नावली इतराते हुए कहा - तुम्हीं जानो, मेरे लिए यह प्रश्न अविचारणीय है।"

"क्यों"?

"क्योंकि मेरा चन्द्रऔर चाँदनी अविभाज्य है। बिटे की ओर देखकर चाँदनी को देखती हूँ तो चन्द्र को बरबस ही देखने का लोभ होता है। इसी तरह चन्द्र को देखकर चाँदनी का।"[1]

शतरंज के मोहरे में नवाब नसीरुद्दीन की निस्सहाय स्थिति तथा निराशा दुलारी के साथ हुए वार्तालाप से प्रकट होता है।

"हम सचमुच बादशाह होना चाहते हैं।"

"जमाना हजूर के कदमों में सिर झुकाता है बादशाहत और किसे कहते हैं?"

---

1. नागर, मानस का हंस, पृ. 166

"बहलाओ मत जानेमन। हम अंग्रेजों की शतरंज के बादशाह हैं।

"हम उसकी चाल पर चलते हैं। मुझे यह खलता है, बेहत खलता है।"[1]

'एकदा नौमिषारण्ये' में नारद-भार्गव का संवाद, भार्गव-भारत का संवाद तथा अन्य कई संवादो से उन सभी पात्रों का चरित्र प्रकाशन होता है। इज्या और नारद का संवाद ऐसा है कि इज्या स्वयं अपना परिचय करती है-

"भला, भला, गऊ हो तुम भी।"

"नहीं बिंब हूँ।"

"तब फिर प्रतिबिंब कौन सोम। उन्हें यह दान किसने दिया।?"

इज्या एक बार इधर देखकर मुस्कुराते हुए बोली-

''यह चारो अर्थ मुझ पर लागु होते है महामुने-पर

मैं वस्तुतः बलि हूँ शब्द का पाँचवाँ अर्थ."[2]

कभी दार्शनिक और कभी कलात्मक संवाद पात्रों की मनस्थिति को व्यक्त करता है। 'सुहाग के नूपुर' में कोवलन-माधवी के ये संवाद उनके मानसिक व्यापारों को दिखाते हैं-

माधवी-सूर्य का तेज आत्मसात कर जैसे यह संध्या सतरंगी हो रही है वैसे ही तुम्हें पाकर मेरा आनन्द क्षितिज भी रंग-विरंग हो रहा हैं।

---

1. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ - 234
2. नागर, एकदा नैमिषारण्ये पृ - ३0

कोवलन - ''हाँ..... विष तुमने पिया था माधवी, पर मरा मेरे संस्कारों का देवता। .....यह देखो क्षितिज के उन सिन्दूरी बादलों में तुम्हारे विष की ही सांवली पट्टिया पड रही हैं।"[1]

कोवलन और माधवी के बीच हुआ और एक संवाद ऐसा है कि उससे स्वार्थ पुरुष तथा वेश्याओं के बीच रहकर भी अपना सतीत्व बनाये रखनेवाली स्त्रियों की मनस्थिति प्रकट होता है।

"मैं वेश्या नहीं हूँ - न जन्म से, न कर्म से। सात भाँवरों का खेल न खोलकर भी मैं ने तुम्हारा वरण किया है। मैं सती हूँ।" कोवलन शान्त रहा, उसी भाव से उत्तर दिया, 'हाँ, वेश्या भी सती हो सकती है, पर कहलाएगी वेश्या ही। तुम्हारे धर्मपिता पान्सा भी तुम्हारी अम्मा को अपनी पत्नी नहीं कहते।'

"उनकी बात न्यारी है, परन्तु मैं तो तुम्हारी सन्तान की माता हूँ।"[2]

'एकदा नैमिषारण्ये' में भार्गव-नारद का संवाद उनकी दार्शनिक विचारधारा की अभिव्यक्ति करता है -

"......नारद बुद्धि से खिलाना चाहती है मुझे?"

भक्त कब द्वन्द्व से रीता है सखे?"

"सच है, परन्तु एक समय वह निश्चय ही उस स्थिति को पा लेता है, जब उसमें और उसके आराध्य मे कोई अन्तर नहीं रहता।"[3]

---

1. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 139
2. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 163
3. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 392

इस उपन्यास मे लंबे संवादो के द्वारा कई विषयों पर विचार किया गया है। ब्राह्मण के बारे में भार्गव और गणपति नाग के बीच हुए संवाद इसके उदाहरण है। भार्गव गणपति नाग से जानना चाहता है कि ब्राह्मण किसे कहता है

"ब्राह्मण! मैं भी ब्राह्मण कुल में जन्मा हूँ, परन्तु सच पूछिये तो ब्राह्मण है कौन? क्या यह जीव, जो हमारी काया में रम रहा है। वह ब्राह्मण है"?

"नही, जन्म-जन्मान्तरों में यह जीव तो कीट-पतंग, सिह, श्वान, चाण्डाल, वैश्य, क्षत्रियादि अनेक कायारूपों में विचरता है, इसलिए वह ब्राह्मण नहीं हो सकता।"

'तब क्या यह देह ब्राह्मण मानी जायगी'

'नही राजन् देह तो सबकी पाँच भौतिक ही है। अतएव देह और वर्ण को भी ब्राह्मण नहीं माना जा सकता।'

'तब फिर महात्मन, क्या आप जाति को ब्राह्मण मानेंगे।

....

....

"हे विद्वद्वर! ज्ञान, कर्म और धर्म को भी मैं ब्राह्मण नहीं मानता। .....ब्राह्मण मनुष्य की वह दृष्टि है, जो काया और मानवी चेतना के विभिन्न भेदों की दीवार हटाकर विशुद्ध सत्य को देखती है।"[1]

उपन्यास के चित्रित पात्र और देश की संस्कृति, परिवेश आदि के चित्रण में भी संवाद पक्ष सहायक सिद्ध होता है। 'सुहाग के नूपुर' मे आरंभिक पृष्ठो में ही दो

---

1. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 23

नागरिकों का लंबा वार्तालाप दिया गया है। उस संवाद से कावेरीपट्टणम की सामाजिक स्थिति का चित्र पाठक को मिलता है। उनकी बातों से वहाँ प्रचलित वेश्या प्रथा तथा वहाँ आयोजित समारोहों का विवरण आदि का पता चलता है।[1] दो विदेशी व्यापारियों की आपसी बात चीत से उनके देश संबन्धी कुछ ज्ञान तथा उन देशों के साथ कावेरीपट्टणम के व्यापार संबन्ध का उद्घाटन होता है।[2]

ऐतिहासिक उपन्यासों के संवाद पक्ष की सबसे बडी सफलता इसमें है कि उससे इतिहास की प्रस्तुति कहाँ तक संभव हुई है। नागर के अन्तिम दो ऐतिहासिक उपन्यासों में यह विशेषता अधिकतर पायी जाती है। 'पीढियाँ' में कई ऐतिहासिक घटनाओं का ज़िक्र पात्रों के वार्तालाप द्वारा होता है। जैसे पहले विश्वमहायुद्ध की सूचना देनेवाले संवाद कुछ गाँववालों के मुँह से हुआ है -

"अमां भई, ये ब्रिटेन और जर्मनी यहाँ भी गर्मा रहे है।"

"उमां भई, वाह-वाह कन्धई बाबू, सूब आए। ये बताओ कि आज मैदानो जंग में किसकी तोपें ज्यादह गार्जे"?

"जलव तो जर्मनी के ही हैंगे मिर्जा साहब। कैसर विलियम के सिपहसालार हिन्डनवर्ग ने फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन को पिढ्ढी बना रखा है। अब तो रुस भी आ गया न, लडाई में।"[3]

इसी प्रकार रामजन्मभूमि का ताला खुलवाने पर हुए तनाव का जिक्र सुमन्त और पत्नी शारदा के संवाद से हुआ है।[4] बी.पी. वर्मा और जावेद के कथोपकथन से

---

1. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 10
2. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ - 84
3. नागर, पीढियाँ पृ - 247
4. नागर, पीढियाँ पृ - 29

पंजाब का आपरेशन ब्लूस्टार, इंदिरागाँधी की हत्या, इसके बाद दिल्ली के एन्टी-सिख रायट जैसी कई ऐतिहासिक घटनाओं का पता पाठक को मिलता है। अयोध्या के रामजन्मभूमि-बाबरी मस्जिद पर उपन्यासों में कई जगह पात्रों द्वारा विजार-विमर्श हुआ है। युधिष्ठिर और जावेद के बीच इस बात पर तर्क-वितर्क हुआ है-

"लेकिन तुम यह कैसे कह सकते हो कि उसी जगह वह महल था जहाँ भगवान श्रीराम ने जन्म लिया था"? जावेद ने तडपकर पूछा।

हाँ तुम्हारी इस बात से मैं सहमत हूँ। यह मन्दिर तो चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने बनवाया था और उनके पास भी कोई प्रमाण नहीं था कि यह स्थान रामजी की जन्मभूमि का ही स्थान है।

"तब फिर हिन्दू मस्जिद तोडने पर क्यों अडे है"?

"भई बन्ने, तू तो खालिस मुसलमान की तरह हुज्जत कर रहा है। यार, यह नहीं सोचता कि जो मन्दिर टूटने से पहले हज़ार-डेढ़ हज़ार बरस तक जन-भावना में जन्मस्थान का मन्दिर माना गया है उसे तोडने से लोगों को कितना जबरदस्त धक्का लगा होगा"[2]

कई उपन्यासों में पात्रों के स्वकथन तथा आत्मचिन्तन से उनके अन्तर्व्यापारों का पता चलता है। 'मानस का हंस' के तुलसीदास के स्वकथन उनके अन्तर्मन के 'राम-काम' संघर्ष को व्यक्त करते हैं -

'राम के आगे मोहिनी'? परब्रह्म मर्यादा पुरुषोत्तम के आगे वेश्या छिः छिः तुलसी, गंगा-स्नान करने के बाद कीच-कूडा भरे नाले में डुबकी लगाने की ललक

---

1. नागर, पीढियाँ पृ - 350

रखते हो? किन्तु मोहिनी.... हाय मोहिनी नहीं, नहीं. राम-राम-राम-राम.... मोह.... रा..... मोह.... राम।"[1]

'खंजननयन' में भी सूरदास के व्यक्तित्व की झलक उनके स्वकथन से मिलती है। सूर अपने मन में रहनेवाले श्याम सखा से बातें करते हैं -

श्याम सखा। ए राधे रानी, जगदजननी, केवल एक पलके लिए तू मुझे आँखों में ज्योति दे दे। एक झलक देख लूँ फिर चाहे एक जनम और मुझे अन्धा बनाए रखना। (निःश्वास) किन्तु ऐसी तपस्या कहाँ। अब तो तप का श्री गणेश हुआ है, अभी तक तो बचपना था। भैया श्याम सहित एक झलक तुम्हें देख सकूँ बस, यही एक कामना है। 'एकदा नैमिषारण्ये' तथा नागर के शेष ऐतिहासिक उपन्यासों में भी पात्रों के स्वकथन तथा चिन्तन के द्वारा उनके चरित्रचित्रण और कथाविकास संभव हुआ है।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि नागर जी के ऐतिहासिक उपन्यासों में प्रस्तुत संवाद शिल्प उपन्यासकार की मौलिकता को भी अपने में समेटता है। यह संवाद कथा को गति, पात्रों का चरित्र चित्रण तथा वातावरण की सृष्टि में भी अनिवार्य अंग है। नागरजी के संवादों की विशेषतायें उनमें निहित पात्रानुकूलता, सरसता, सरलता, तथा नाटकीयता हैं। इन विशेषताओं की प्रस्तुति के कारण ही नागरजी के ऐतिहासिक उपन्यास लोकप्रिय बन गये हैं।

उपन्यासों की भाषिक शैलियों के इन विशेष प्रयोगों से वे अधिक आकर्षक बन गये हैं और उनकी ऐतिहासिक प्रौढता भी बढ गयी है।

---

1. नागर, मानस का हंस, पृ - 139

भाषिकेतर शैली

भाषिकेतर शैली में कथायोजना, पात्र एवं चरित्र चित्रण आदि केलिए विशेष शैलियों का प्रयोग किया जा रहा है। शैली किसी भी साहित्यकार को विशिष्ट पहचान बनाये देनेवाला गुण है। हर एक रचना में स्वीकृत शैली से उस रचनाकार के साहित्यिक व्यक्तित्व का प्रकटीकरण होता है। शैली तत्व के संबन्ध में पाश्चात्य तथा भारतीय विचारकों के बीच मतभेद हैं। भारतीय मत के अनुसार प्रदेश, विषय और रचनाकार के व्यक्तित्व के आधार पर तीन प्रकार की शैलियाँ हैं। पश्चिमी विचारकों के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव से शैली का संबन्ध है। यद्यपि विद्वानों के बीच मतमतान्तर है तभी उसके महत्व को सभी स्वीकार करते हैं। शैली तत्व साहित्य में अभिव्यंजना पक्ष को साध्य बनाने के साथ ही उसे रमणीय एवं प्रभावात्मक भी बना देता है।

नागरजी के ऐतिहासिक उपन्यासों में विषय, देशकाल और इतिहास के अनुरूप भिन्न-भिन्न शैलियों को प्रयुक्त किया गया है। कभी-कभी इन शैलियों में नागरजी के स्वभाव के कुछ अंश भी दिखाई पडते हैं। उनके 'एकदा नैमिषारण्ये', 'मानस का हंस' जैसे उपन्यासों को पढने से नागरजी के उत्कृष्ट शैली पक्ष का परिचय प्राप्त होता है। उपन्यास की आकर्षणीयता बढाने के लिए उन्होंने कई शैलियों तथा पद्धतियों को अपनाया है।औपव्यासिक शिल्प के अन्तर्गत इन शैलियों और पद्धतियों को समेटकर कथा के विकास को चमत्कृत किया गया है। नागरजी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यास में जिन शैलियों का प्रयोग किया है उनमें मुख्यरूप से वर्णनात्मक शैली, नाटकीय अथवा संवादात्मक शैली, समीक्षात्मक शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली, पूर्व दीप्ति शैली संस्मरणात्मक शैली, काव्यात्मक शैली, और दृश्यात्मक शैली आती हैं।

वर्णनात्मकता - नागरजी के प्रायः सभी ऐतिहासिक उपन्यासों में इस शैली का उपयोग हुआ है। प्रेमचन्द परम्परा के उप्यासकारों के लिए प्रिय इस शैली को नागरजी ने भी अपनाया है। उन्होंने प्रसंग और आवश्यकता के अनुसार इसका प्रयोग किया है। परिवेश, पात्रों का चरित्र चित्रण, प्राकृतिक दृश्य आदि का वर्णन उन्होंने बडे आकर्षक ढंग से किया है। व्यक्ति अथवा परिवेश के वर्णन इतना जीवन्त बनाकर प्रस्तुत किया गया है कि पाठक को वे यथार्थ लगने लगते हैं। 'मानस का हंस' में तुलसी दास के बाह्य रूप का जो चित्र उपन्यासकार प्रस्तुत किया है उससे वर्णनात्मक शैली का स्वरूप सामने आ जाता है - "आजानुबाहु, चमकते सोने-सी पीत देह, लम्बी, सुतवाँ नाक, उभरी ठोढ़ी पतले ठोठ, सिर और चेहरे के बाल घुटे हुए, माथे, बाहों और छाती पर वैष्णव तिलक था। काया कृश होने पर भी व्यायाम से तनी हुई भव्य लगती थी। लगता था मानों मनुष्यों के समाज में कोई देवजाति का पुरुष आ गया है। बायें हाथ में कमण्डलु, दाहिने हाथ में लाठी, गले में जनेउ और तुलसी की मालायें पड़ी थीं। वे जवानों की तरह से तनकर चल रहे।"[1] इसी प्रकार 'खंजन नयन' में भी सूरदास का शाब्दिक चित्र प्रस्तुत किया गया है। यथा - "लंबा, दुर्बल गोरा, नाक लम्बी और सुतवां, उभरी हुई हठीली ठोडी, उन्नत कपाल, लहराती हुई घुघराली लटें, जटाओं-सी झूल रही हैं। हल्की-हल्की दाती मुछें भी हैं, कान बडे हैं।"[2] इन दो इतिहास पुरुषों के रूपवर्णन से उनके जीवन्त चित्र पाठक को मिलते हैं। 'सुहाग के नूपुर' में दक्षिण भारतीय संस्कृति का परिचय देनेवाले एक चित्रण है। कोवलन-कन्नगी के विवाह का प्रबन्ध इस प्रकार वर्णित किया गया है - 'नृत्य-समारोह के लिए हवेली के निकट अनुपम शोभायुक्त विशाल एवं नयनाभिराम पन्दल (ताड़ की पत्रियों से बनी चटाइयों का

---

1. नागर, मानस का हंस , पृ. १८
2. नागर, खंजननयन , पृ ५४

मण्डप) सज़ाया गया था। केल के थम्भों, फूलों और पत्तों की बन्दनवार, रंगीन वस्त्रों के चंदोए बडे ही आकर्षक रूप से संजोए गाए थे। सगे संबन्धियों के मान्य अतिथियों आदि के लिए उत्तम आसन बिछे हुए थे। मुख्य मण्डप स्वर्ण और रजत-दण्डों पर खडा किया गया था। यहाँ बन्दनवारों में भी रत्नों का ही उपयोग किया गया था, यहाँ तक कि बड़े-बड़े दीपाधार और तुण्डावलक्क (लटकाए जाने वाले दीपक) भी ठोस सोने के रत्नों से जड़े थे। मुख्य मण्डप में वरवधू - के लिए अत्यन्त सुशोभित स्वर्ण सिंहासन रखा गया था।"[1] 'एकदा नैमिषारण्ये' में मिक्षकवन के तपस्वियों के विविध आचारों का चित्रण भी वर्णनात्मक शैली में दिया गया हैं। 'पीढियों' में स्वतन्त्रता संग्राम से संबन्धित कई घटनाओं का वर्णनात्मक चित्रण मिलते है। जैसे स्वदेशी आन्दोलन असहयोग आन्दोलन, सैमन कमीशन आदि।

नाटकीय या स्वांदात्मक शैली - नाटकीयत उपन्यास को आकर्षणीय तथा संप्रेषणीय बनाती है। पात्रों के संवाद इस शैली का मुख्य आधार हैं। 'एकदा नैमिषारण्ये' का यह संवाद अपनी नाटकीयता से कुतूहल उत्पन्न करता है।

'कैसे आये'

'पाप करने की आज्ञा माँगने'

'साधु-साधु यह शुभ लक्षण है, किन्तु महापंडित पाप क्यों करें'?

'महापंडित भी मनुष्य ही होता है।'

"नहीं, यों कहिए कि महापंडित ही मनुष्य होता है।"[2]

---

1. नागर, सुहाग के नूपुर , पृ 77
2. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ - 410

'शतरंज के मोहरे' मे नवाब नसीरुद्दीन की बेबसी और निराशा इन शब्दों से व्यक्त होते हैं - "बादसाह समाज का आदर्श पुरुष था, ईश्वर का प्रतिनिधि था। बादशाह मनुष्य भी था। कमज़ोर कम अकल, बेपनाह था।" इस नाटकीय कथन से नवाब का मानसिक संघर्ष समान तनाव के साथ पाठक भी अनुभव करते हैं। नागरजी के सभी उपन्यासों मे ऐसी नाटकीय संवाद जोडे गये हैं।

मनोविश्लेषणात्मक शैली - पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व को व्यक्त करने के लिए उनको मनोविश्लेषणात्मक शैली के माध्यम से चित्रित करना पडता है। नागरजी ने अपनी अनुभूतियों और संवेदनाओं द्वारा पात्रों को सजीवता और तीक्ष्णता देने के लिए मनोवैज्ञानिक ढंग से उन्हें प्रस्तुत किया है। पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व का विश्लेषण भी उपन्यासों में इसी पद्धति से कई बार दिखाया गया है। 'सात घूँघटवाला मुखड़ा' के मुख्य नारी पात्र जुआना के जीवन में हुए परिवर्तन का चित्रण इस प्रकार हुआ है - 'परिस्थिति और भावनाओ के घूंघट दर घूंघट उठते उठते जुआना के सम्मुख यह सत्य अब स्पष्ट हो गया था कि मनुष्य की इच्छा केवल एक ही होती है उसे दुहरे तिहरे रूप देने की क्रिया गलत नहीं, लेकिन अनेकता की एकरूपता अनिवार्य शर्त है। प्रेम-विकास और राजनीतिक महत्वाकांक्षा दो अलग-अलग इच्छायें हैं। इन्हें एक रूप में बाँधने का प्रयत्न निष्फल होना ही चाहिए था। जुआना अब एक की होकर रहेगी। एक ही से लौ लगाएगी और वह एक अब खुदा का बेटा जीज़स क्राइस्ट ही होगा।'१ जुआना का यह आत्मविस्लेषण मानव मन का सत्य प्रकट करता है। भौतिक जगत से निराश होकर मानव ईश्वर में शरण पाता है। 'सुहाग के नूपुर' में माधवी के शब्दो से वेश्या समाज की मानसिक पीडा प्रतिफलित होती है - ''कोई कहता है, मुझे मानव मात्र से घृण है, मैं समाज का नाश करती हूँ, कोई यह नहीं देखता कि वेश्या स्वयं अपने ही से घृणा करने पर बाध्य है, क्योंकि परम्परा से घृणा के संस्कारों में पाली जाती है।

जो स्त्री किसी भी अन्य गृहिणी की तरह कामकाजी और जग संचालन का भार वहन करने योग्य थी उसे पुरुषो की विलास-वासना का साधन मात्र बनाकर समाज मे निकम्मा छोड़ दिया जाता है फिर क्यों न वह समाज से घृणा करे.....?"[1]

शतरंज के मोहरे में नवाब नसीरुद्दीन के अन्तर्द्वन्द्व और करुणाजनक मानसिकता उनके शब्दों से व्यक्त होता है - "उम्र छोटी पायी मगर तजुर्बा खूब मिला। बादशाह के घर पैदा होकर भी लावारिस रहा, एक सल्तनत के तख्तोताज का मालिक होकर भी फिरंगियों का गुलाम रहा। मेरा कोई अपना न हुआ, मैं किसी का न हो सका।"[2] इन चित्रणों के द्वारा उपन्यासकार ने समाज के सभी पहलुओं और समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

समीक्षात्मक शैली - साहित्यकार सामाजिक पहलुओं का समीक्षात्मक चित्रण अपनी रचनाओं द्वारा प्रस्तुत करता है। उपन्यासकार अपने उपन्यासों के पात्र, परिस्थिति आदि को समीक्षा परक दृष्टि से चित्रित करके उनके सूक्ष्म अंशों तक पहुँच लेते हैं। नागरजी ने भी इस दृष्टि से समाज का चिन्तन-मानव किया है। उनके 'एकदा नैमिषारण्ये' 'शतरंज के मोहरे', 'सुहाग के नूपुर' जैसे उपन्यासों में समाज के कई पक्षों पर विचार-विमर्श किया गया है। 'सुहाग के नूपुर' में माधवी का कथन उस जैसी वेश्याओं का अन्तर्विलाप है। माधवी कोवलन से कहती है - 'मन से अपना प्राणपति बना चुकने पर भी मैं अधिकार पूर्वक जीवन भर तुम्हें अपना न कह सकुंगी। मैं स्त्री नहीं वेश्या हूँ। स्त्री के नैसर्गिक रूप, गुण और मन को पाकर भी उसके अधिकारों से वंचित हूँ। मैं स्त्री नहीं वेश्या हूँ।"[3] उसके ही मुँह से पुरुष मेधा समाज के अनयाय के

---

1. नागर, ~~शतरंज के मोहरे~~ सुहाग के नूपुर, पृ. 234
2. नागर, शतरंज के मोहरे, पृ. ३१६
3. नागर, सुहाग के नूपुर, पृ. ६५

विरुद्ध प्रश्न लगाया गया है - "पुरुष जाति के स्वार्थ और दम्भ भरी मूर्खता से ही हमारे पापों का उदय होता है। उसके स्वार्थ के कारण ही उसका अर्धांग-नारी जाति पीड़ित है। एकांगी दृष्टिकोण से सोचने के कारण ही पुरुष न तो स्त्री को सती बनाकर ही सुखी रख सका और न वेश्या बनाकर ही। इसी कारण वह स्वयं ही झकोले खाता है और खाता रहेगा।"[1] 'एकदा नैमिषारण्ये' में धर्म संबन्धी कई विषयों पर समीक्षात्मक अध्ययन हुआ है।

पूर्वदीप्ति शैली - कथा विधाओं में वर्तमान घटनाओं के बीच अतीत काल के स्मरण द्वारा उस समय को प्रस्तुत करने के लिए पूर्वदीप्ति वा फ्लैश बैक शैली का प्रयोग किया जाता है। इस शैली में वर्तमान काल के प्रवाह के बीच ही अतीत की ओर मुड़ जाने पर भी कथा में कोई बाधा नहीं होती, बल्कि उसकी रंजकता बढ जाती है। नागरजी के प्रायः सभी उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग किया गया है। 'मानस का हंस' में पूर्वदीप्ति शैली ही मुख्य है। उपन्यास का आरंभ तुलसी की पत्नी रत्नावली के अन्तिम समय के चित्रण से होता है। फिर पूर्वदीप्ति के द्वारा ही तुलसी के जन्म से लेकर रत्नावली की मृत्यु तक का चित्रण हुआ है। ऐसे चित्रण से तुलसी के चरित्र के विकास के गहनता भी प्राप्त होता है - "बाबा ने अपनी आँखें मूंद ली। सहपाठी के शब्दों का लंगर बांधकर उनकी ध्यानमग्न काया स्मृति के समुद्र में गहरी पैठने लगी और अपनी अनुभवगम्य बिंब सजीवता को सागर के तल से मोतियों की तरह उबार कर लाने मे तल्लीन हो गई।''[2] 'खंजन नयन' में भी इसी प्रकार फ्लैशबैक पद्धति पर कथा कही गयी है। इसमं भी कथा का आरंभ सुर के जन्म से क्रमपूर्वक नहीं दिया गया है। उप्यासारंभ में जिस घटना को प्रस्तुत किया गया है। उस समय सूर की उम्र लगभग

---

1. नागर, सुहाग के नूपुर पृ. 267
2. नागर, मानस का हंस, पृ. 184

अट्ठारह थी। इस घटना के बाद सूर के जन्म, संगीतशिक्षा, जन्मांधता, भाईयों की ईर्ष्या आदि बातों को पूर्वदीप्ति द्वारा व्यक्त किया गया है।

इस प्रकार अपने उपन्यासों में पूर्वदीप्ति शैली के सफल प्रयोग से कथानक तथा घटनाओं को श्रृंखला बद्ध करने में नागरजी का प्रयास सराहनीय है।

संस्मरणात्मक शैली - संस्मरणात्मक शैली अतीत और वर्तमान को जोडने में एक माध्यम बन जाती है। वर्तमान सन्दर्भ में पूर्वघटित घटनाओं को भी सूचित करने केलिए यह शैली अधिक उपयोगी है। ऐतिहासिक उपन्यासों में स्मरण अधिक समीचीन है। पात्रों के अतीत स्मरण के द्वारा ऐतिहासिक घटनाओं तथा इतिहास पुरुषों का जिक्र उपन्यास में ऐतिहासिकता उत्पन्न करता

है। अमृतलाल नागर के प्रायः सभी ऐतिहासिक उपन्यासों में ऐसा शैलिपरक प्रयोग दृष्टिगत होता है। 'मानस का हंस' तथा 'पीढियाँ' ने इसी शैली को प्रमुखता दी है। 'मानस का हंस' की अधिकांश घटनायें तुलसीदास के संस्मरण से चित्रित किया गया है। कुछ घटनायें बकरीदी भैया, गंगाराम ज्योतिषी, राजा भगत आदि के द्वारा भी वर्णित हैं।

तुलसी के जन्म, पिता द्वारा परित्याग, तद्युगीन सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियाँ आदि का वर्णन बकरीदी बाबा के स्मृतिकथन से होता है। तुलसी के गुरुभाई गंगाराम ज्योतिषी की पुरानी यादों से तुलसी के शिक्षाकाल, भूत-भय से मोचन, 'रामाज्ञाप्रश्न' की रचना आदि पाठकों के लिए प्रस्तुत किया गया है। तुलसी के दोस्त राजा भगत का संस्मरण तुलसी के विवाह जीवन तक के जीवन काल का उद्घाटन करता है। स्वयं तुलसीदास जी की स्मृतियों से मोहिनी-प्रसंग पर प्रकाश पडता है।

'पीढियाँ' में शहीद जयन्त का जीवनी परक उपन्यास तैयार करने के लिए मुख्य पात्र युधिष्ठिर कई लोगो से साक्षात्कार करता है। उन लोगों के स्मरण द्वारा अतीतकाल की कई घटनाये प्रस्तुत की गयी हैं। स्वदेशी आन्दोलन, सैमन कमीशन, होमरुल लीग की स्थापना जैसी कई ऐतिहासिक घटनाये इस शैली से उपन्यास की कथा के साथ जोड दी गयी हैं।

'खंजननयन', 'करवट' आदि उपन्यासों में भी संस्मरणात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। इस सैली से नागरजी ने कथा में अतीत और वर्तमान की दूरी कम कर दी है।

काव्यात्मक शैली - काव्यात्मक भाषाशैली का प्रयोग उपन्यास के सौन्दर्य को चार चांद लगाता है। उपन्यासकार की भावना को दीप्त रूप देने के लिए प्रस्तुत शैली अनुयोज्य है। नागरजी के उपन्यासों ने भी इस शैली का खूब लाभ उठाया है। उनके 'सुहाग के नूपुर' का अधिकांश भाग काव्यात्मक शैली में है - "अस्त होते हुए सूर्य के रंगों को चुराने का साहस ये निर्बल, निकम्मे बादल भी कर लेते हैं, इन रंग-बिरंगे बादलों की सुन्दरता पर तो सब रीझते हैं, सूर्य की विवशता पर कोई आँसू नहीं बहाता।"[1] 'एकदा नैमिषारण्ये' में भी इस शैली का उदाहरण देखा जा सकता है - "सोमाहुति का आभ्यान्तर एक बार ठिठका पर बंध गया। श्रद्धा की सहज रिझवार श्रद्धेय के मन को अनोखे असह्य आनन्द से बाँध गई, बंधने की बेहोशी, फिर उलझन, फिर झटके से दो के आँखों झुकने और दो के पलटने की क्रियाएं लगभग एक साथ ही हुई। फिर भार्गव कलेजे में प्रश्न रुपी नाग पर गुलगुला फूल सा सौन्दर्य मार अतुल होकर नाचने लगा।"[2]

---

1. नागर, सुहाग के नूपुर , पृ. 14।
2. नागर, एकदा नैमिषारण्ये, पृ , 84

दृश्यात्मक शैली - 'मानस का हंस', 'खंजननयन' तथा एकदा नैमिषारण्य के कई सन्दर्भों में दृश्यात्मक वर्णन हुआ है। चित्रात्मक ढंग से दृश्य प्रस्तुत करके अपने उपन्यासों का आकर्षण उन्होंने बढा दिया है। पाठकों को भी उन दृश्यों के साथ साक्षात्कार का अनुभव होता है। 'खंजन नयन' का अन्तिम भाग इसका उदाहरण है - "आकाश पर देवगणों के रत्नजटित विमान ही विमान दिखाई दे रहे हैं, चतुर्थी का चन्द्रमा मानो उनकी आड़ से बचने के लिए ही सरोवर में उतर आया है। सरोवर के एक ओर गंधर्वगण तरह-तरह के वाद्यों के साथ भगवान का निर्मल यशोगान कर रहे हैं।"[1]

इन शैलियों के अलावा इन्टर्व्यू शैली तथा पत्र शैली को भी नागरजी ने अपने उपन्यासों में अपनाया है। इन दो शैलियों का प्रयोग उनके अन्तिम उपन्यास 'पीढियाँ' में हुआ है। और एक शैली किस्सागोई है। उन्होंने किस्से का प्रयोग कई रूपों में किया है, कहीं दृष्टान्त के रूप में, कही चारित्रिक विशेषता के रूप में। 'सुहाग के नूपुर' तथा एकदा नैमिषारण्ये में इसके उदाहरण मिलते हैं।

निष्कर्ष

नागरजी के ऐतिहासिक उपन्यासों संवाद, भाषा तथा शैलीपरक विशेषताओं पर विचार करने से यह पता चलता है कि शिल्प की दृष्टि से इन उपन्यासों का स्थान उच्चकोटि का है। भाषा तथा संवाद इतिहास को बढावा देनेवाले हैं तथा उनमें प्रयुक्त शैलियाँ भी पात्र तथा वातावरण के अनुकूल हैं। एक रचना का सौन्दर्य सदा भावपक्ष और कलापक्ष के उचित समन्वय से संपन्न है। इस दृष्टि से देखने पर नागरजी के सारे की सारे उपन्यास औपन्यासिक सौन्दर्य के सच्चे निदर्शन हैं। भाषा की दृष्टि से देखने

---

1. नागर, खंजननयन , पृ. २३०

पर प्रेमचन्द के बाद प्रेमचन्द की जैसी भाषा का प्रयोग केवल नागरजी ने किया था। शब्दों का उचित चयन कर विचलन, अप्रस्तुत विधान आदि के प्रयोग से भाषिक संरचना में जो सुकुमारता एवं आकर्षण पैदा किया गया वह नागरजी के शिल्पवैशिष्ट्य को द्योतित करता है। इसलिए हम निस्सन्देह यह कह सकते हैं कि शिल्प की दृष्टि से समकालीन उपन्यासकारों में अमृतलाल नागर के उपन्यासों का स्थान शीर्षस्थ है।

—※—

उपसंहार

इतिहास मनुष्य के अतीत से जन्म लेता है और उनकी सभ्यता को द्योतित करता है। इसलिए इतिहास सभ्य मानव की प्रमुख संपत्ति है। इतिहास का संबंध किसी व्यक्ति, समाज या देश के अतीत से संबन्धित घटनाओं से है। चाहे वह अतीत सुखद हो या दुःखद, उसका अपना महत्व होता है। मानव का सहज स्वभाव है कि वे अपने अतीत के महापुरुषों के संबन्ध में जानने के लिए उत्सुक रहते हैं। प्रत्येक देश के संबन्ध में लिखे गये इतिहास और महापुरुषों की जीवनी इसके उदाहरण हैं। लोगों की इतिहास-प्रियता, ऐतिहासिक कहानी, ऐतिहासिक उपन्यास आदि की रचना का कारण बन गयी। साहित्य के द्वारा इतिहास की प्रस्तुति से आमजनता भी इतिहास से आकृष्ट हो जाती है। ऐतिहासिक उपन्यास में इतिहास की वैज्ञानिकता और उपन्यास का सौन्दर्य मिलकर एक नयी कलासृष्टि का जन्म होता है। ऐतिहासिक उपन्यासकार इतिहास की अपेक्षा साहित्यिक आधिक होता है। वहइतिहास की शुष्कता छोडकर उसे भावात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है।

हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यासों की एक सशक्त परम्परा है। प्रारंभिक दशा में पं. किशोरीलाल गोस्वामी जी ने इसे प्रोत्साहित किया। बाद में मिश्रबन्धु, व्रजनन्दन सहाय जैसे उपन्यासकारों ने इस परम्परा को और समृद्ध किया। हिन्दी-ऐतिहासिक उपन्यासों के विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान उपन्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा

का है। उनके अलावा इस क्षेत्र के प्रमुखों में यशपाल, राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव और हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के नाम उल्लेखनीय हैं। इनके समशीर्षस्थ हैं श्री अमृतलाल नागर। उनकी बहुमुखी प्रतिभा से कविता को छोड़कर शेष प्रायः सभी साहित्यिक विधायें अनुग्रहीत हुई हैं। नागरजी ने ऐतिहासिक तथा सामाजिक उपन्यासों के सृजन से हिन्दी साहित्य भण्डार की श्रीवृद्धि की है। प्रेमचन्द परम्परा के अनुयायी नागरजी ने उनके ही समान कई सामाजिक समस्याओं जैसे नारीशोषण, धार्मिक संघर्ष, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समस्या आदि को उपन्यासों में उभारा है। ज़िन्दगी के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने के लिए नागर जी ने ऐतिहासिक परिवेशों को भी माध्यम बनाया है।

नागर जी एक सफल उपन्यासकार मात्र नहीं, अतीत को वर्तमान से और भविष्य से जोड़नेवाले इतिहासकार भी हैं। उन्होंने भारत के अतीत से कीमती मोतियों को चुन-चुनकर अपने उपन्यासों को सज्जित और सारगर्भित कर दिया। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक के भारतीय इतिहास को उन्होंने अपने उपन्यासों का विषय बनाया। भारतीय इतिहास के विभिन्न कालखंडों का सुन्दर तथा मूर्त चित्रण नागर जी की प्रतिभा का मिसाल है। हर युग को गहराई से परखकर उन्हें औपन्यासिक तत्वों के अनुकूल प्रस्तुत करने में नागरजी ने असामान्य कुशलता प्रकट की है। तद्‌युगीन परिस्थितियों के मूर्तीकरण से पाठकों को अतीत से परिचित कराना उपन्यासकार का मकसद है।
वर्तमान और अतीत का जो सुन्दर समन्वय उनके ऐतिहासिक उपन्यासों में हुआ, वह उनके उपन्यासों की खासियत भी है।

नागर जी के उपन्यासों की मुख्य खूबी यह है कि उनके उपन्यास किसी वाद, दुराग्रह एवं कुंठाओं से ग्रस्त नहीं हैं। उनका मुख्य विषय सामाजिक तथा

ऐतिहासिक यथार्थ है। स्वतंत्रतापूर्ण भारत के सामंतवाद तथा स्वातंत्र्योत्तर प्रजातंत्रीय व्यवस्था के गुण-दोषों पर विचार करके पाठकों को अवगत कराने में भी उपन्यासकार कामयाब हुए हैं।

नागर जी पुरातत्व प्रेमी और सांस्कृतिक एकता के आकांक्षी हैं। पुरातनता के प्रति मोह ने उन्हें ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना में प्रोत्साहित किया। पुराण और इतिहास से वातावरण और पात्रों को लेकर उनके द्वारा नित नवीन विषयों के प्रस्तुत किया गया है। 'एकदा नैमिषारण्ये' इस कोटि का श्रेष्ठ उपन्यास है। भारतीय संस्कृति के विशेष उल्लेख के साथ ही अन्य देशों की संस्कृतियों के साथ इसका अतिप्राचीन संबन्ध भी इसमे उद्घाटित किया गया है। महाभारत रचना, नैमिषारण्य में आयोजित धार्मिक आन्दोलन जैसी भारतीय संस्कृति से संबन्धित अविस्मरणीय घटनाओं का उल्लेख पाठकों को भारतीय संस्कृति के निकटतम परिचय देने में बिलकुल समर्थ है। संघर्षरत इस आधुनिक युग में धार्मिक तथा भावात्मक एकता को बुलन्द करनेवाले ऐसे उपन्यासों की प्रासंगिकता विचारणीय है।

मुगल शासनकाल भारत के इतिहास में नया मोड़ लाया था। यहाँ की हिन्दू संस्कृति और मुस्लीम संस्कृति के मेल से एक मिश्रित संस्कृति का जन्म हुआ। इसके साथ दोनों के बीच संघर्ष भी शुरु हुआ। शासन के समान सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में भी मुगलों ने अपना अधिकार जमाया। फलस्वरूप हिन्दू संस्कृति क्षीण होने लगी। इस दृष्टि से नागर जी के 'मानस का हंस' तथा 'खंजन नयन' उल्लेखनीय हैं। इस परिस्थिति में हिन्दुओं में भक्ति द्वारा आस्था और जिजीविषा भरने का प्रयास तुलसी और सूर जैसे इतिहास पुरुषों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से किया। हिन्दू और मुसलमानों के बीच जो संघर्ष उस समय से शुरु हुआ आज भी उसी प्रकार या उससे

ज़्यादा बुलन्द रूप में भारत में वह स्थिति कायम है। नारीशोषण भारत के संबन्ध में एक चिरन्तन समस्या है। प्रागैतिहासिक काल से इस आधुनिक युग तक नारी जाति पर हमला होता आ रहा है। यदि 'सुहाग के नूपुर' में वेश्या समस्या का यथार्थ मार्मिक चित्रण किया गया है तो 'सात घूंघटवाला मुखडा' तथा 'शतरंज के मोहरे' में ऐसी नारियों का दर्शन होता है जिनका जीवन स्वार्थी वासनायुक्त पुरुष जाति के कारण बर्बाद हुआ है।

शासकों की विलासिता और पदमोही राजनेताओं का कुटिलतंत्र सभी युगों की राजनीति का अविभाज्य अंग है। पुराने समय से राजा-नवाबों की ज़िन्दगी आडम्बर पूर्ण रही। इनके इन आडम्बरों का दुष्परिणाम आम जनता को भोगना पडता है। उनकी विलासिता के लिए लाखों रुपयों के साथ अनेक युवतियों के जीवन भी नष्ट हो चुके हैं। अवध के नवाबों की ज़िन्दगी इसका मिसाल है। उस समय संस्कृति का इतना ह्रास हो चुका था कि नवाब के उत्तराधिकारी के पद में मामूली धोबी का पुत्र भी बैठ पाता था। देशी शासकों की ऐसी दायित्व-हीनता के फलस्वरूप अंग्रेज़ों ने भारत को अपने कब्जे में कर दिया। इन परिस्थितियों का विशदवर्णन अवध की पृष्ठभूमि पर 'शतरंज के मोहरे' में किया गया है।

भारतीय इतिहास में स्वतंत्रता संग्राम का महत्वपूर्ण स्थान है। इनका अंकन भी नागर जी ने अपने उपन्यासों में किया है। उनके उपन्यास 'पीढियाँ' तथा 'करवट' में स्वतंत्रतापूर्व भारत तथा स्वातंत्र्योत्तर भारत के चित्रण के साथ पीढियों के बीच के दरार को भी दिखाया गया है। अंग्रेज़ी शासन के फलस्वरूप भारतीयों ने अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त करके अपने आत्मविश्वास को तो बढाया। पर उसने अंग्रेज़ों के अन्धानुकरण से अपनी अस्मिता एवं संस्कृति को नष्ट कर दिया। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीति की मुख्य

घटनाओं को भी पीढ़ियों में समेटने का प्रयास किया गया है। इन घटनाओं से प्रजातंत्र का कपट रूप भी दर्शाया गया है। 'करवट' में समकालीन भारतीय इतिहास का अंगन कर एक तरह से नागर जी ने उपन्यास के क्षेत्र में एक नूतन पद्धति को खोल दिया। शिल्प की दृष्टि से भी नगर जी के उपन्यास अपना अलग महत्व रखते हैं। किस्सागोई शैली में कथा तैयार करने में उनकी विशेष प्रतिभा द्रष्टव्य है। इतिहास से पात्र और वातावरण को चुनकर कल्पना के उचित समन्वय से उपन्यास को सुन्दर और प्रौढ रूप देने में नागर जी सिद्धहस्त हैं। इतिहास के अलावा पुराण से भी पात्र और घटनाओं को लेकर उन्हें ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया गया है। नागर जी की चरित्र - सृष्टि अपूर्व है। उनके पात्रों में पौराणिक पात्र हैं - जैसे नारद, भार्गव आदि, तुलसी, सूर जैसे इतिहास पुरुष हैं, अवध के नवाब हैं, गुप्त राजा हैं और आधुनिक भारत के प्रतिनिधि पात्र भी हैं। इतिहास के विभिन्न कालखंडों के विभिन्न प्रकार के पात्रों को ढूँढ निकालकर उन्हें आज की परिस्थिति में प्रासंगिक बनाया गया है। ऐतिहासिक वातावरण के निर्माण में नागर जी ने जो कुशलता प्रकट की है वह ध्यातव्य है। पन्नों के सूक्ष्म, अध्ययन से कुछ आवृत घटनाओं एवं पात्रों को प्राप्त हुआ उनका आवरण हटाकर समकालीन सन्दर्भ के अनुकूल पुनः सृष्टि करने में निश्चय ही नागरजी सफल हुए।

अमृतलाल नागर भाषा के जादूगर ही हैं। भाषा और शैली की विविधता से उनके उपन्यास के पाठक उनसे अभिभूत हो जाते हैं। यह कहने में किंचित् भी शंका नहीं होगी कि प्रेमचन्द के बाद उपन्यास जगत में सहज, सरल हिन्दी भाषा की वास्तविक शैली का प्रयोग केवल नागर जी ने किया है। या प्रेमचन्द के शेष के प्रेमचन्द की भाषा-शैली के बचे-खुचे, इक्के-दुक्के साहित्यकारों में अग्रणी हैं नागर जी। ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। पात्र और पृष्ठभूमि

के अनुरूप भाषा को भी सन्दर्भोचित होना चाहिए। पुराण पात्रों तथा राजा-नवाबों की उनकी अपनी भाषा होती है। इसलिए नागर जी ने इस पर पूरा ध्यान दिया है। शब्दों का उचित चयन, विचलित एवं आलंकारिक प्रयोगों से नागर जी की भाषा आकर्षक बनी है। स्थान, पात्र और सन्दर्भानुसार संस्कृत, व्रजभाषा और अवधि आदि भाषाओं का प्रयोग भी उनके उपन्यासों में हुआ है। मुहावरे और लोकोक्तियों के मेल से उपन्यासों की चमत्कारिता बढी है। नये-नये विषयों के लिए नई भाषाशैली का प्रयोग विशेष सराहनीय है।

नागर जी के ऐतिहासिक उपन्यास हमें इतिहास के गह्वरों में ले जाते हैं। वहाँ जाकर हम विभिन्न प्रकार की ज्ञात, अज्ञात एवं अल्पज्ञात घटनाओं तथा पात्रों से मिलते हैं। ये हमें कुछ नवीन ढंग से सोचने में मज़बूर करते हैं। प्रागैतिहासिक काल की ओर इशारा करते समय नारद और व्यास संबन्धित कल्पनाएँ हमें एकदम प्रभावित करने लायक नवीन, विश्वसनीय एवं मौलिक हैं। गरिमा मंडित भारतीय संस्कृति का कई स्थानों पर कई उपन्यासों में जो वर्णन हुआ वह हमें उत्तेजित करता है। आज संस्कृति में ह्रास हुआ है। भारतीय संस्कृति संकट काल से गुज़र रही है। इस विशेष सन्दर्भ में 'एकदा नैमिषारण्ये', 'मानस का हंस', 'खंजन नयन', जैसे उपन्यासों का महत्व बढ़ रहा है। धार्मिक संघर्ष सर्वत्र चल रहा है। यह भारतीयों की असहिष्णुता को द्योतित करता है। जिस देश का मुख्य आदर्श धार्मिक सहिष्णुता है, उस देश से यह मिट रहा है। नाना संस्कृतियों के मेल से भारतीय संस्कृति रूपायित हुई। लेकिन आज उसमें पृथकता एवं अलगाव का भाव आ गया। धर्म के विराट एवं महान लक्ष्यों को लोग भूल गये। धर्म स्वार्थ एवं राजनैतिक लाभ के लिए प्रयुक्त उपकरण होने लगा। इस अवसर पर हमारी सांस्कृतिक एकता को जागृत करने में नागर जी का प्रत्येक उपन्यास सहायक है।

राजनैतिक खोखलेपन के अनेक दृष्टान्तों के साथ अमृतसर में जो ब्लूस्टार ओपरेशन हुआ इसका उल्लेख और यहाँ तक बाबरी-मस्जिद तक की घटनाओं का जिक्र कर नागर जी हमें समकालीन भारत के संबन्ध में गहराई से सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। वे हमें सचेत करते हैं कि कई क्षेत्रों का अवमूल्य हो रहा है, आज विवेक से काम करने का अवसर है। इसलिए निस्सन्देह नागर जी को भारतीयता का एक सजग साहित्यकार कहा जा सकता है। यह उनके उपन्यासों को प्रासंगिक बना देता है।

इसप्रकार अमृतलाल नागर इतिहास और कल्पना का उचित समन्वय कर विषय एवं कला की दृष्टि से उत्तम उपन्यासों की सृष्टि कर हिन्दी के समकालीन ऐतिहासिक उपन्यास के क्षेत्र में अप्रतिम स्थान के अधिकारी बन गये।

—※—

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मूलग्रन्थ

1.	शतरंज के मोहरे	-	श्री अमृतलाल नागर भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली - १९६८
2.	सुहाग के नूपुर	-	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली - १९७६
3.	सात घूँघटवाला मुखडा	-	राजपाल एण्ड संस, नई दिल्ली - १९७५
4.	एकदा नैमिषारण्ये	-	लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद - १९७२
5.	मानस का हंस	-	राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली - १९८७
6.	खंजननयन	-	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली - १९८१
7.	करवट	-	राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली - १९८५
8.	पीढियाँ	-	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली - १९९०

आलोचनात्मक ग्रन्थ

1. अमृतलाल नागर का उपन्यास साहित्य - प्रकाश चन्द्र मिश्र, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

2. अमृतलाल नागर के उपन्यास - डॉ. हेमराज कौशिक, प्रकाशन संस्थान, दरियागंज, नई दिल्ली प्र.सं. १९८५

3. अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता - डॉ. अनीता रावत, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, १९९८

4. अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यास - डॉ. सुरेखा एम.झाडे, अमन प्रकाशन, कानपुर प्र.सं. १९९६

5. अमृतलाल नागर भारतीय उपन्यासकार - डॉ. पुष्पा बंसल, दिनमन प्रकाशन, दिल्ली प्र.स. १९८७

6. अमृतलालनागर : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिद्धांत - डॉ. सुदेश बत्रा, पंचशील प्रकाशन, १९८४

7. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलहाबाद, प्र.सं. १९७८

8. आर्य संस्कृति के आधार ग्रन्थ - बलदेव उपाध्याय, नन्द किशोर एण्ड सन्स चौक वारणासी १९६२

9. इतिहास क्या है - इ.एम. कार, अनुवाद-अशोक चक्रहार द मकमिलन कंपनी आफ इंडिया लिमिटेड, १९७६

10. इतिहास में भारतीय परंपराएँ - गुरुदत्त, भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली सं-१९६३

11. उपन्यासकार : अमृतलाल नागर - डॉ. दामोदर वसिष्ठ एवं डॉ. आशा बागड़ी, मुद्रित प्रकाशन, आदर्श नगर, हरियाणा - १९७५

12. उपन्यास : शिल्प और प्रविधियाँ - डॉ. सुरेरा सिन्हा, रामा प्रकाशन, लखनऊ प्र.सं. १९६५

13. उपन्यास : स्वरूप, संरचना तथा शिल्प - डॉ. शान्ति स्वरूप गुप्त, लोधी ग्रन्थ निकेतन, नई दिल्ली - १९८०

14. ऐतिहासिक उपन्यास - डॉ. सत्यपाल चुघ, नाशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली प्र.सं. १९७४

15. ऐतिहासिक उपन्यासकार - वृन्दावनलाल वर्मा, रामदरश मिश्र, एस चन्द एण्ड कंपनी, नई दिल्ली, १९६४

16. ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार - डॉ. गोपिनाथ तिवारी, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली - प्र.स. १९५८

17. ऐतिहासिक उपन्यासों का रचनाकौशल - डॉ. दीनानाथ सिंह, विजय प्रकाशन मन्दिर, वारणासी प्र.सं. १९९२

18. ऐतिहासिक उपन्यास : प्रकृति एवं स्वरूप - डॉ गोविन्दजी, साहित्य वाणी प्रकाशन इलहाबाद प्र.स. १९७०

20. ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य - बी.एम. चिन्तामणी, चैखंबा विद्याभवन, चौक वारणासी

21. ऐतिहासिक और हिन्दी उपन्यास - डॉ. माखनलाल शर्मा, प्रेमशील प्रकाशन, आज़ादपूर, दिल्ली - १९९१

22. क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास - शंकरसहाय सक्सेना, ग्रन्थ विकास, जयपूर - १९९९

23. खंजननयन : संवेदना और शिल्प - प्रभा शर्मा, बोहरा प्रकाशन, जयपूर - १९९१

24. गुप्त साम्राज्य का इतिहास - वासुदेव उपाध्याय, इंडियन प्रेस प्राइवट लिमिटड १९६९

25. चतुरसेन के उपन्यासों में इतिहास का चित्रण, - डॉ. विद्याभूषण भरद्वाज, प्रकाशन प्रतिष्ठान, सुभाष बाज़ार, मेरठ

26. तमिल साहित्य का इतिहास - श्रीमति टी.पी. पत्मावती एण्ड मालचन्द्र तीवारी, साहित्य संगम, इलाहाबाद, १९८७

27. तुलसीदास (एक समलोचक अध्ययन) - डॉ. माताप्रसाद गुप्त हिन्दी परिषद प्रयाग विश्वविद्यालय प्रयाग, १९५३

28. परंपरा इतिहास बोध ओर संस्कृति - श्यामाचरण दूबे, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली - १९९१

29. प्राचीन ऐतिहासिक उपन्यास : इतिहास और कला - डॉ. सुषमा त्यागी, अनुराधा प्रकाशन, १०५, फूलबाग कॉलनी, मेरठ - १९८५

30. प्राचीन भारत का राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास - रतिभानु सिंह नाहर, किताब महल, इलहाबाद - १९६१

31. प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास की शिल्पविधि - डॉ. सत्यपाल चुघ, लोकभारती प्रकाशन, इलहाबाद प्र.सं. १९६८

32. भारत का इतिहास - रोमिला थापर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - १९८७30.

33. भारत का इतिहास - क्षितीश्वर प्रसाद सिंह, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, कलकत्ता - १९६४

34. भारतवर्ष का बृहत इतिहास द्वितीय भाग - पं. भगवद्दत्त, इतिहास प्रकाशनमंडल, नई दिल्ली

35. भारत का राजनैतिक इतिहास - राजकुमार, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय -वारणासी - १९६२

36. भारतीय संस्कृति कोश - लीलाधर शर्मा पर्वतीय, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली - १९९९

37. भारतीय संस्कृति का विकास - सत्यकेतु विद्यालंकार सरस्वती सदन नई दिल्ली - १९७९

38. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास - जगन्नाथ प्रसाद मिश्र प्रतिमान प्रकाशन, इलहाबाद, १९८८

39. व्रज का सांस्कृतिक इतिहास - प्रभुदयाल मीतल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली - १९६६

40. शैली विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार २२०३, दिल्ली-६, १९७७

41. साहित्य का इतिहास दर्शन - श्री नलिनविलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, १९६०

42. साहित्यिक साक्षात्कार - डॉ. रणवीर रांग्रा, पूर्वोदय प्रकाशन - १९७८

43. सूर सागर - बालमुकुन्द चतुर्वेदी, श्री गोपाल पुस्तकालय १९७०

44. स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास में वैचारिकता - डॉ. आशा मेहता, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दरिया गंज, नई दिल्ली-२ - १९८८

45. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में पुरुष पात्र - राजकुमार टण्डन, गीताप्रकाशन, बडी चावडी हैदराबाद - १९९३

46. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में शिल्पविधि का विकास - डॉ तहसीलदार दूबे, नटराज पब्लिशिंग हाउस, हरियाना

47. हिन्दी और तेलुंगु के स्वातत्र्यपूर्व ऐतिहासिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन - डॉ. चलसानी सुबराव, प्रगति प्रकाशन, आग्रा - १९७०

48. हिन्दी उपन्यास - डॉ. सुषमा धवान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली - १९६१

49. हिन्दी उपन्यास द्वन्द्व एवं संघर्ष - डॉ. मोहनलाल रत्नाकर, प्रकाशन विभाग दिल्ली

50. हिन्दी उपन्यास : पृष्ठभूमि और परंपरा - इ. बदरीदास, ग्रन्थं कानपुर १९६६

51. हिन्दी उपन्यास : प्रेम और जीवन - डॉ. शान्ति भरद्वाज, सुशील प्रकाशन, अजमेर, १९६९

52. हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्दोत्तर काल - डॉ. रामशोभित प्रसाद सिंह, ऋषभ चरण जैन एवं सन्तति, १९८१

53. हिन्दी उपन्यास में चरित्र चित्रण का विकास - रणवीर रांग्रा, भारती साहित्य मन्दिर, दिल्ली १९६१

54. हिन्दी उपन्यासों का शिल्प विधान - डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा, अभय प्रकाशन, किदवई नगर,कानपूर - १९९९

55. हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग - डॉ. त्रिभुवन सिंह, हिन्दी प्रचारक सस्थान वारणासी - १९७३

56. हिन्दी उपन्यास सिद्धान्त और समीक्षा - डॉ. मखनलाल शर्मा, प्रभाव प्रकाशन, चावड़ी बजार, नई दिल्ली - १९७७

57. हिन्दी उपन्यास स्वातंत्र्य संघर्ष के विविध आयाम - डॉ. डी.डी तिवारी तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली १९८५

58. हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यास - डॉ. रामनारायण सिंह मधुर, गान्थम, कानपुर १९७१.

59. हिन्दी के ऐतिहासिक उपन्यासों का रचना कौशल - डॉ. दीनानाथ सिंह, विजय प्रकाशन मन्दिर, वारणासी - १९९२

60. हिन्दी साहित्यकारों से साक्षात्कार - डॉ. रणवीर रांगा, किताबघर, नई दिल्ली १९९१

61. हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों में इतिहास तत्व - डॉ. धनंजय रचना प्रकाशन इलहाबाद १९७०

पत्र-पत्रिकायें

1. अक्षरा, अक्तूबर-दिसंबर २०००
2. आजकल, आगस्त १९८५
3. आजकल, अंक १२, अप्रैल १९९१
4. आजकल, अंक ५, सितंबर १९९७
5. इन्द्रप्रस्थ भारती, अक्तूबर-दिसंबर १९९९
6. कादंबिनी, दिसंबर १९७३
7. दस्तावेज, ३० जनवरी १९९६
8. संग्रथन, जुलाई - १९९९
9. संघ्रथन मार्च २०००
10. संचेतना अंक १ मार्च १९८४
11. समीक्षा, १७ जूलाई १९८४
12. समीक्षा अंक ४, १० फरवरी १९९२
13. सरस्वती मार्च १९७१
14. सरस्वती, अक्टूबर १९७२
15. हंस, अंक ६, जनवरी १९९९

ENGLISH BOOKS

A history of south India, - K.A. Nilkantha Sastri, Oxford University Press, Elg House,

Columbia encyclopaedia (2nd edtioin) 1950

History is the story of Liberty - Benedetto Croce, London

The Cultural method of India (vol.II) - Dr. Sarvepalli Radhakrishnan, The Ramakrishna Mission Institute of culture Goal park Calcutta - 1962

[illegible]ugh the Ages - Dr. K [illegible] Desai, Prof. S.R. Nayak Allied Publshiers Private Ltd, Bombay 1965

—✵—

U78891